कबीर साहेब का बीजक

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य ।||)

बीजक

सतगुरु कबीर साहेब का

जिसे

बम्बइया टायप के मोटे मोटे अक्षरों में
अत्यंत शुद्ध छापा गया ।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग ।

१९२६

पहला एडिशन] [दाम ॥।)

Printed at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उनसे पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं। कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है, उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है, और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठबासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है, जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची में जो इस पुस्तक के पीछे है देखिये।

हमने 'मनोरमा' नामक सचित्र मासिक पत्रिका भी निकालना आरम्भ कर दिया है। साहित्य सेवा के साथ ही साथ मनोरंजक लेख कहानियाँ और ऐसे महात्माओं के कवित्त दोहे सवैये जो स्फुट हैं और पुस्तक के रूप में नहीं निकाली जा सकतीं निरंतर छपती हैं। वार्षिक मूल्य ५) और छः माही ३) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाखाना,

अप्रैल सन् १९२६ ई०   इलाहाबाद।

विषय-सूची ।

कबीर पर दो शब्द।

कबीर के जीवन चरित्र पर कबीर शब्दावली भाग एक में कुछ विचार किया गया है। अतः यहाँ हम विशेष घटनाओं का ही उल्लेख करेंगे। यह कि कबीर साहब एक बड़े संत थे ईश्वर की सत्यता को जानते थे और इन्हें सच्ची साधुगति प्राप्त थी, किसी से छिपा नहीं है। आप के विचार कैसे थे, और ये विचार क्या कर प्रगट हुए यदि हम उस समय की घटनाओं पर ग़ौर करें तो हमें स्पष्ट तथा मालूम हो जाएगा। कबीर साहेब का भाव और उनका मत, उस समय के अनुकूल था। और यह होना स्वाभाविक भी था। ये भाव उनके साखी और पदों से साफ़ झलकते हैं।

कबीर साहेब काशी के रहने वाले थे पर उन्होंने अपना सारा जीवन काशी ही में व्यतीत नहीं किया। आप स्वयं लिखते हैं

"तू बाम्हन मैं काशी का जुलहा बूझहू मोर गियाना ...."

"काशी में हम प्रगट भए हैं रामानन्द चिताए................"

"सकल जनम शिवपुरी गँवाया मरत बार मगहर उठि धाया"

कबीर साहब की मां का नाम नीमा और बाप का नाम नीरू था और ये जात के जुलाहे थे। अबोध बालक कबीर बनारस में लहरतारा के क़रीब पड़ा मिला और ये लोग उसे घर उठा लाए। इस बालक का क़िस्सा यों है। घोर वर्षा हो रही थी, लहरतारा के तालाब में जो कमल खिले थे, उनमें यह बालक आकाश से उतरकर आया। कुछ लोग कहते हैं कि कबीर एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए। वह कैसे! सो सुनिये—एक दिन स्वामी रामानंद के सन्मुख यह विधवा ब्राह्मणी अपने पिता के साथ दर्शन को गई। स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया "पुत्रवती भव"। थोड़े दिनों में ही इस विधवा ने पुत्र जना और हिन्दू मर्यादा के लाज से इस बालक को तालाब के पास डाल आई जिसे नीरू ने पीछे उठा लिया।

कबीर बाल काल से ही बड़े भगवद्भक्त थे। तिलक टीका लगाया करते और राम-नाम जपा करते थे। परम ज्ञान से आपने स्वयं समझा कि यह सब तो ढोंग है बिना पूरे गुरू के भवसागर पार उतरना कठिन है। आप रामानंद के चेले थे या कोई मुसलमान फ़क़ीर के, इसमें सन्देह है। आपने दोनों मज़हबों के सिद्धांतों को

देखा, सुना और समझा और उसी में से अपना मत अलग प्रगट किया। आप एकेश्वरवादी थे। मुसलमान पीरों से आप ने विसाल और फ़िराक़ के मज़े चखे और हिन्दू साधुओं से मूर्तिपूजा और योग का ज्ञान पाया। शेख़ तक़ी के सिद्धान्तों की बू और आप के सूफ़ी ख़्यालात, कबीर साहेब के दोहों और साखियों से स्पष्ट विदित हैं। पर आप पूरे सूफ़ी ही थे यह नहीं कहा जा सकता।

आप हिन्दी साहित्य ही के जन्मदाता नहीं हैं बल्कि नवीन ख़्यालात और नवीन मज़हब के भी। आपने हिन्दी द्वारा अपना भाव, अपना विश्वास और अपना ज्ञान हिन्दुओं को, साधारण बोल-चाल की हिन्दी, और सरल कविता के रूप में, मनोमोहक बनाकर जताया। फिर क्या था। आपके सैकड़ों, हज़ारों नहीं लाखों शिष्य हो गए। निम्न वाक्य से आप का मुसलमान जोलहा होना सच जान पड़ता है।

" छाड़े लोक अमृत की काया जग में जोलहा कहाया "

" कहैं कबीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो "

" जाति जुलाहा क्या करै हिरदे बसे गोपाल।

कबिर, रमैया कण्ठ मिलु चुके सरब जजाल॥...."

आप के मुख्य शिष्य धनी धर्म दास जी * कहते हैं, आप रामानन्द के शिष्य थे—

काशी में प्रगटे दास कहाए नीरू के गृह आए।

रामानन्द के शिष्य भए भवसागर पंथ चलाए॥

आप अशिक्षित थे पर निरे गँवार न थे, और सतसंग ही द्वारा ज्ञान प्राप्त किया। मुसलमानों के आप बड़े ख़लीफ़ा थे पर हिन्दू धर्म के कुरीतियों के भी कट्टर विरोधी थे। और ये सब स्वभाव सिद्ध करते हैं कि आपने अपने वर्तमान समय के स्वामी रामानन्द जी से ही उनको ग्रहण किया था। मुसलमानों के विरुद्ध आप कहते हैं—

सुनत कराय तुरुक जो होना, औरत को का कहिए।

अरध शरीर नारि बखानैं, ताते हिन्दू रहिए॥ बीजक

किते मनावें पाँव परि, किते मनावें रोइ।

हिन्दू पूजैं देवता, तुरुक न काहुक होइ॥ बीजक

कबीर साहेब एक दिन मणिकर्णिका घाट की सीढ़ियों पर सो रहे थे। स्वामी रामानन्द वहाँ शेष रात्रि स्नान करने जाते थे और अचानक इनका पैर कबीर पर

* इनकी शब्दावली ॥-) में बिलवेडियर प्रेस, प्रयाग से मँगाइए।

पड़ा। आप ने "राम राम" कह दिया। इस मन्त्र का शायद कबीर पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

कबीर मुल्लों की बाँग सख़्त नापसन्द करते थे और केवल स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास कंठी पहनना इत्यादि को सिद्धि का मार्ग नहीं मानते थे। उदाहरण लीजिए—

"काँकर पाथर जोड़ कर मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ मुल्ला बाँग दे क्या बहरा भया खुदाय॥"
'कण्ठी पहने हर मिले तो कबिरा बाँधे, कुन्दा,......"

कबीर पंथी बतलाते हैं कि लोई नामक स्त्री उनके साथ जन्म भर रही। विवाह इससे नहीं हुआ था, राम जाने कमाल और कमाली उनके पुत्र थे या अन्य किसी के पुत्रों को पाला था। जो कुछ हो पर कबीर ने पर-स्त्री-गमन को बुरा कहा है। और इसमें शक नहीं लोई कबीर की परम भक्त थी।।

नारि नसावे तीन गुन, जो नर पासे होए।
भक्त मुक्त निज ध्यान में, पैठि सकैं नहिं कोए॥
नारी की झाँई परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, जो नित नारी के संग॥

आप ख़ुद कहते हैं

नारी तो हम भी करी, जाना नाहिं विचार।
जब जाना तब परिहरी, नारी बड़ी विकार॥

लोई से इनके विवाह की कथा इस प्रकार है—

भ्रमण करते करते कबीर गंगा तट पर पहुँचे और एक युवती ने आप की आओ-भगत की। वह कबीर साहब की सज्जनता और आत्म त्याग पर मोहित हो गई और अंत में कबीर साहेब ने इससे शादी कर ली। हम जानते हैं कमाल कमाली इन्हीं के पुत्र थे। आपके अनेक उदाहरण शीलता* के मिलते हैं। लोई की मुहब्बत साहूकार से थी और रूपये की ज़रूरत पड़ने पर इसी से रुपया लाती भी थी। एक दिन पानी बरसता था और लोई साहूकार से रात में मिलने का वादा कर आई थी। कबीर ने स्वयं अपने कन्धे पर बैठा कर उसे वहाँ पहुँचाया। क्योंकि ये बात के बड़े पक्के थे। लोई को देखते ही साहूकार का इश्क सच्चे इश्क में परिवर्तित हो गया और वह कबीर का परम भक्त हो गया।

---

* देखिए जीवन चरित्र कबीर साहेब भाग १ मूल्य ॥।) पता—बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

हिन्दू धर्मावलम्बियों तथा मुसलमानों से इनका घोर विरोध था। कारण कि यह दोनों के दोष निकाल कर धर देते थे। दोनों भक्ति मार्ग से कोसों दूर होते जा रहे थे और अपने दोषों को सुझाने पर झल्ला जाते। कबीर साहेब को अपने धर्म-प्रचार में घोर बाधाएं पड़ी। हिन्दू-मुसलिम एकता स्थापित करना आपका सिद्धांत था। सिकंदर ने इन्हें पहले गंगा में ढकेलवा दिया और फिर अग्नि ज्वाला में, मगर तपस्या बल से ये जीवित निकल आए। मस्त हाथी के सामने पड़ने पर भी आप बच गए। गरज़ यह कि आप सच्चे मार्ग से अलग नहीं हुए और अपने विचारों को छिपने नहीं दिया चाहे इधर की दुनिया उधर भले ही हो जाए। अपने आख़िर दिनों में आप मगहर चले गये थे और १२० वर्ष की उम्र में संवत १५७५ में वहीं गुप्त हो गए। इन की शव फूल हो गई और हिन्दू मुसलमान आपस में आज तक झगड़ते ही रह गए।

हिन्दू कहत हैं राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोउ लड़े मरत हैं, दुबिधा में लिपटाना॥

बेलवेडियर हाउस,
एप्रिल १६२६

भक्तशिरोमणि।

सत्यनाम

सतगुरु कबीर साहेब
का बीजक

शब्द

प्रथमै समरथ आपु रह, दूजा रहा न कोय।
दूजा केहि बिधि ऊपजा, पूछत हैं गुरु सोय ॥१॥
तब सतगुरु मुख बोलिया, सुकिरित सुनो सुजान।
आदि अन्तकी पारचै तोसों कहौं बखान ॥२॥
प्रथम सुरति समरथ कियो, घट में सहज उचार।
ताते जामन दीनिया, सात करी बिस्तार ॥३॥
दूजे घट इच्छा भई, चित मन सा को कीन्ह।
सात रूप निरमाइया, अविगत काहु न चीन्ह ॥४॥
तब समरथके श्रवणते, मूल सुरति भयो सार।
शब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुसार ॥५॥
पाँचो पाचो खंड धरि, एक एकमा कीन्ह।
दुइ इच्छा तहँ गुप्त हैं, सो सुकिरित चित चीन्ह॥६॥
योग मया एकु कारनो, ऊधो अक्षर कीन्ह।
था अविगत समरथ करी, ताहि गुप्त करि दीन्ह॥७॥
स्वासा सोहं ऊपजे, कीन्ह अमी बंधान।
आठ अंस निरमाइया, चीन्हौ संत सुजान ॥८॥
तेज अंड आचिन्तका, दीन्हों सकल पसार।
अंड सिखा पर बैठिके, अधर दीप निरधार ॥९॥
ते अचिन्त के प्रेम ते, उपजे अक्षर सार।
चारि अंस निरमाइया, चारि बेद बिस्तार ॥१०॥

तब अक्षर का दीनिया, नींद मोह अलसान ।
वे समरथ अविगत करी, मर्म कोइ नहिं जान ॥११॥
जब अक्षर के नींद गै, दबी सुरति निरबान ।
स्याम बरन यक अंड है, सो जल में उतरान ॥१२॥
अक्षर घट में ऊपजै, ब्याकुल संसय सूल ।
किन अंडा निरमाइया, कहा अंडका मूल ॥१३॥
तेही अंड के मुक्ख पर, लगी शब्द की छाप ।
अक्षर दृष्टि से फूटिया, दस द्वारे कढ़ि बाप ॥१४॥
तेहिते ज्योति निरंजनी, प्रगटे रूप निधान ।
काल अपरबल बीरमा, तीन लोक परधान ॥१५॥
ताते तीनों देव भे, ब्रह्मा बिष्नु महेस ।
चारि खानि तिन सिरजिया, माया के उपदेस ॥१६॥
चारि बेद खट सास्त्रऊ, औ दस अष्ट पुरान ।
आशा है जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान ॥१७॥
लख चौरासी धारमा, तहाँ जीव दिये बास ।
चौदह यम रखवारिया, चारि बेद बिस्वास ॥१८॥
आप आप सुख सब रमै, एक अंड के माहिं ।
उत्पति परलय दुःखसुख, फिर आवहिं फिरजाहिं ॥१९॥
तेहि पाछे हम आइया, सत्त सब्द के हेत ।
आदि अन्त की उतपती, तो तुमसो कहि देत ॥२०॥
सात सुरत सब मूल है, परलय इनहीं माहिं ।
इनहीं मासे ऊपजै, इनहीं माहिं समाहिं ॥२१॥
सोई ख्याल समरत्थ उर, रहे सो अछ पछताइ ।
सोई संधि लै आइया, सोवत जगहि जगाइ ॥२२॥
सात सुरति के बाहरे, सोरह संखि के पार ।
तहँ समरथ का बैठका, हंसन करे अधार ॥२३॥

घर घर हम सब सों कही, सब्द न सुनै हमार ।
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार ॥२४॥
मंगल उतपति आदिका, सुनियो सन्त सुजान ।
कह कबीर गुरु जागरत, समरथ का फरमान ॥२५॥

॥ अथ रमैनी प्रारम्भ ॥

रमैनी १

अन्तर ज्योति सब्द एक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ।
ते तिरिये भग लिंग अनंता, तेऊ न जाने आदि न अंता ॥
बाखरि एक बिधातैं कीन्हा, चौदह ठहर पाटि सो लीन्हा ।
हरि हर ब्रह्मा महँतो नाऊँ, तिन्ह पुनि तीन बसावल गाऊँ॥
तिन्ह पुनि रचल खंड ब्रह्मंडा, छौ दर्शन छानव पाखंडा ।
पेटे काहु न बेद पढ़ाया, सुनत कराए तुर्क न आया ॥
नारी मोचित गर्भ प्रसूती, स्वांग धरै बहुतै करतूती ।
तहिया हम तुम एकै लोहू, एकै प्राण बियापै मोहू ॥
एकै जनी जना संसारा, कैान ज्ञान ते भयो निनारा ।
भो बालक भगद्वारे आया, भग भोग के पुरुष कहाया ॥
अविगति की गति काहु न जानी, एक जीभ कत कहैां बखानी।
जो मुख होय जीभ दस लाखा, तो को आय महंतो भाखा॥

साखी

कहहिं कबीर पुकारि के, ई लेऊ व्यवहार ।
रामनाम जाने बिना, (भव) बूड़ि मुवा संसार ॥

रमैनी २

जीव रूप एक अंतर बासा, अन्तर ज्योति कीन्ह परकास
इच्छा रूप नारि अवतरई, तासु नाम गायत्री धरई ॥
तेहि नारी के पुत्र तिन भयऊ, ब्रह्मा बिसनु महेस्वर नांऊ।

फिर ब्रह्मा पूछल महतारी, को तोर पुरुष केकरि तुम नारी।
तुम हम हमतुम और न कोई, तुमहीं पुरुष हमहिं तब जोई ॥

साखी

बाप पूत की एकै नारी, एकै माय बिआय।
ऐसा पूत सपूत न देखा, जो बापै चीन्है धाय ॥

रमैनी ३

प्रथम आरंभ कौन को भयऊ, दूसर प्रगट कीन्ह सो ठयऊ।
प्रगटे ब्रह्मा बिस्नु सिव सक्ती, प्रथमै भक्ति कीन्ह जिव उक्ती ॥
प्रगटि पवन पानी औ छाया, बहु बिस्तारिक प्रगटी माया।
प्रगटे अंड पिंड ब्रह्मंडा, पृथवी प्रगट कीन्ह नवखंडा ॥
प्रगटे सिध साधक सन्यासी, ये सब लाग रहे अविनासी ॥
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी, तेऊ खोजि परे सब हारी ॥

साखी

जीव सीव सब परगटे, वै ठाकुर सब दास।
कबीर और जानै नहीं, (एक) राम नाम की आस ॥

रमैनी ४

पिरथम चरणगुरु कीन्ह बिचारा, करता गावे सिरजन हारा।
करम करि के जग बौराया, सक्ति भक्ति ले बाँधिनि माया।
अदभुत रूप जाति कीबानी, उपजी प्रीति रमैनी ठानी।
गुनि अनगुनी अर्थ नहिं आया, बहुतक जने चीन्हि नहिं पाया।
जो चीन्हें ताको निर्मल अंगा, अनचीन्हें नर भयो पतंगा।

साखी

चीन्ह चीन्ह का गावहु बौरे, बानी परी न चीन्हि।
आदि अंत उतपति प्रलय, सो आपुहि कहि दीन्हि ॥

रमैनी ५

कहँ लों कहों युगन की बाता, भूले ब्रह्म न चीन्हे बाटा।

हरि हर ब्रह्मा के मन भाई, बिबि अक्षर लै युक्ति बनाई ॥
बिबिअक्षरकाकीन्हबँधाना, अनहद सब्द ज्योति परमाना ।
अक्षर पढ़ि गुनि राह चलाई, सनक सनन्दन के मनभाई ॥
बेद किताब कीन्ह बिस्तारा, फैल गैलमन अगम अपारा ।
चहुँ युग भक्तन बाँधल बाटा, समुझि न परी मोटरी फाटी ॥
भौ भै पृथिवी दहु दिस धावे, अस्थिर होय न औषध पावे ।
होयभिस्त जो चित न डुलावे, खसमछोड़ि दोजख को धावे ॥
पूरब दिसा हंस गति होई, है समीप सँधि बूझै कोई ।
भक्तौ भक्तिन कीन्ह सिंगारा, बूड़ि गए सबही मँझधारा ॥

साखी

बिन गुरु ज्ञाने दुन्दभो, खसम कहाँ मिल जात ।
युग युग कहवैया कहै, काहु न मानी बात ॥

रमैनी ६

बरनहु कौन रूप औ रेखा, दूसर कौन आहि जो देखा ।
ओअंकार आदि नहिं वेदा, ताकर कहहुँ कवन कुल भेदा ।
नहिं तारागन नहिं रविचंदा, नहिं कुछ होत पिता के बँदा ॥
नहिं जलनहिंथलनहिंथिरपवना, कोधरेनामहुकुमकोबरना।
नहिं कछु होत दिवसअरुराती, ताकरकहहुँकवनकुल जाती॥

साखी

सून्य सहज मन सुमिरते । प्रगट भई एक ज्योति ।
ताही पुरुष की मैं बलिहारी । निरालंब जो होत ॥

रमैनी ७

जहिया होत पवन नहिं पानी, तहिया सृष्टि कौन उतपानी ।
तहिया होत कली नहिं फूला, तहिया होत गर्भ नहिंमूला ॥
तहिया होत न विद्या वेदा, तहिया होत सब्द नहिं खेदा।
तहिया होत पिंड नहिं बासू, नाधर धरनिनगगनअकासू॥
तहिया होत न गुरू न चेला, गम्य अगम्य न पंथ दुहेला ।

साखी

अविगति की गति क्या कहीं, जाके गाँव न ठाँव ।
गुन विहीना पेखना । क्या कहि लीजै नाँव ॥

रमैनी ८

तत्वमसी इनके उपदेसा, ई उपनिषद कहैं संदेसा ॥
ये निस्चय इनको बड़ भारी । वाही को बरने अधिकारी ॥
परम तत्त्व का निज परवाना । सनकादिक नारद सुखमाना ।
याज्ञवलक औ जनक सँबादा । दत्तात्रेय वहै रस स्वादा ॥
वहै वसिष्ठ राम मिल गाई । वहै कृष्न ऊधव समुझाई ॥
वही बात जो जनक दृढ़ाई । देह धरे विदेह कहाई ॥

साखी

कुल मर्य्यादा खोय के । जियत मुवा नहिं होय ।
देखत जो नहिं देखिया । अदृष्ट कहावे सोय ॥

रमैनी ९

बाँधे अस्ठ कस्ट नौ सूता, यम बाँधे अंजनि के पूता ।
यम के बाहन बाँधे जनो, बाँधे सृष्टि कहाँ लौ गनी ॥
बाँधे देव तैंतीस करोरी, सुमिरत बंद लोह गै तोरी ।
राजा सुमिरै तुरिया चढ़ी, पंथी सुमिरै मान लै बढ़ी ॥
अर्थ विहीना सुमिरै नारी, परजा सुमिरै पुहुमी झारी ।

साखी

बंदि मनावे सो फल पावे, बंदि दिया सो देव ।
कहे कबीर सो ऊबरे, जो निसि दिन नामहिं लेव ॥

रमैनी १०

लाही लै पिपरारी बही । करगी आवत काहु न कही ॥
आई करगी भो अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता ॥
बूता पहिर यम कीन्ह समाना । तीन लोक में कीन्ह पयाना ॥
बाँधे ब्रह्मा बिस्नु महेसू । सुरनरमुनि औ बाँधि गनेसू ॥

बाँधे पवन पाव नभ नीरू। चाँद सूर्य बाँधे दोउ बीरू॥
साँच मंत्र बाँधे सब झारी। अमृत वस्तु न जानै नारी॥

साखी

अमृत वस्तु जानै नहीं। मगन भये सब लोय॥
कहहिं कबीर कामों नहीं। जीवहि मरन न होय॥

रमैनी ११

आँधरी गुष्टि सृष्टि भै बौरी, तीन लोक में लागि ठगौरी।
ब्रम्हहिं ठग्यो,नाग संहारी, देवन सहित ठग्यो त्रिपुरारी॥
राज ठगौरी बिष्नुहि परो, चौदह भुवन केर चौधरी॥
आदि अंत जेहि काहु न जानी, ताको डर तुम काहे मानी॥
वै उतंग तुम जाति पतंगा,यम घर किएउ जीव के संगा॥
नीमकीट जस नीम पियारा, विसको अम्रत कहत गँवारा॥
विस के संग कवन गुन होई, किंचित लाभ मूल गो खोई॥
विस अमृत गो एकहि सानी,जिन जाना तिन विसकै मानी।
कहाँ भये नर सुध बे सूधा,बिन परिचय जग बूड़न बूधा।
मतिके हीन कौन गुण कहई, लालच लागे आसा रहई॥

साखी

मुवा अहे मरि जाहुगे, मुये कि बाजी ढोल।
स्वप्न सनेही जग भया, सहिदानी रहिगा बोल॥

रमैनी १२

माटी के कोट पखान के ताला, सोई बन सोइ रखनेवाला॥
सो बन देखत जीव डराना, ब्राह्मन वैष्नव एकहि जाना।
ज्यों किसान कीसानी करई, उपजे खेत बीज नहिं परई॥
छाड़ि देव नर झेलिक झेला, बूड़े दोऊ गुरू औ चेला।
तीसर बूड़े पारथ भाई, जिन बन दीन्हों दहा लगाई॥
भूकि भूकि कूकुर मरि गयऊ, काज न एक स्यार से भयऊ।

साखी

मूस बिलारो एक सँग, कहु कैसे रहि जाय।

अचरज यक देखौ हो संतो, हस्ती सिंहहि खाय ॥

रमैनी १३

नहिं प्रतीत जो यह संसारा, द्रब्य के चोट कठिन के मारा।
सो तौ सेषै जाय लुकाई, काहू के प्रतीत नहिं आई ॥
चले लोग सब मूल गँवाई, यमकी बाढ़ि काटि नहिं जाई।
आजु काज पर काल अकाजा, चले लादिदिग अंतर राजा॥
सहज बिचारत मूल गँवाई, लाभ ते हानि होए रे भाई।
ओछी मती चन्द्र गो अथई, त्रिकुटी संगम स्वामी बसई॥
तबही विसन कहा समुझाई, मैथुन अस्ट तुम जीतहु जाई।
तब सनकादिक तत्वविचारो, ज्यों धन पावहि रंक अपारा॥
भो मर्याद बहुत सुख लागा, एहि लेखे सब संसय भागा।
देखत उत्पति लागु न बारा, एक मरै एक करै बिचारा ॥
मुए गए की काहु न कही, झूठी आस लागि जग रही।

साखी

जरत जरत तें बाचहू, काहे न करहु गोहार ।
बिष विषया कै खायहू, रात दिवस मिलझार ॥

रमैनी १४

बड़ सो पापी आहि गुमानी, पाखँडरूप छलेउ नर जानी॥
बावन रूप छलेउ बलि राजा, ब्राह्मनकीन्ह कौन को काजा।
ब्राह्मन ही सब कीन्हा चोरी, ब्राह्मन ही को लागल खोरी।।
ब्राह्मन कीन्हों वेद पुराना, कैसेहु के मोहि मानुष जाना॥
एक से ब्रह्मैपंथ चलाया, एक से हंस गोपालहि गाया॥
एक से शंभू पंथ चलाया, एक से भूत प्रेत मन लाया।
एक से पूजा जैन बिचारा, एकसे निहुरि निमाज गुजारा॥
कोई काहूका हटा न माना, झूठा खसम कबीर न जाना।
तनमन भजि रहु मोरे भक्ता, सत्य कबीर सत्य है बक्ता॥

आपुहि देव आपुही पाती, आपुहि कुल आपुहि हैजाती ।
सर्व भूत संसार निवासी, आपुहिखसम आपुसुखरासी॥
कहते मोहि भए युग चारी, काके आगे कहौं पुकारी ।

साखी

साँचहि कोई न मानई, झूठहि के संग जाए ।
झूठहि झूठा मिलि रहा, अहमक खेहा खाए ॥

रमैनी १५

उनही बदरिया परि गै साँझा, अगुवा भूला बन खँड माँझा ।
पिय अंते धन अंते रहई, चौपरि कामरि माथे गहई ॥

साखी

फुलवा भार न लै सकै, कहै सखिन सो रोए ।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होए ॥

रमैनी १६

चलतचलतअति चरणपिराना, हारिपरेतहँ अतिखिसियाना।
गण गँधर्व मुनि अंत न पाया, हरि अलोप जग धंधे लाया ॥
गहनी बंधन बाँध न सूझा, थाकि परे तहाँ कछू न बूझा ।
भूलि परे जिए अधिक डेराई, रजनी अंध कूप हो आई ॥
माया मोह वहाँ भर पूरी, दादुर दामिन पवनहु पूरी ।
बरसै तपै अखंडित धारा, रैन भयावनि कछु न अधारा ॥

साखी

सबै लोग जहँड़ाइया, अंधा सबै भुलान ।
कहा कोइ नहिं मानहीं, एकै माहिं समान ॥

रमैनी १७

जसजिव आप मिलै अस कोई, बहुत धर्म सुख हृदया होई ।
जासो बात राम की कही, प्रीत न काहू से निर्बेही ॥
एकै भाव सकल जग देखी, बाहर परे सो होय बिबेकी ।

बिषय मोह के फंद छोड़ाई, जहाँ जाय तहँ काटु कसाई ॥
अहै कसाई छूरी हाथा, कैसेहु आवे काटौ माथा ।
मानुस बड़े बड़े हो आए, एकै पंडित सबै पढ़ाये ॥
पढ़ना पढ़ौ धरौ जनि गोई, नहिं तो निश्चय जाहु बिगोई ।

साखी

सुमिरन करहू रामका, छाड़हु दुख की आस ।
तर ऊपर धरि चापि हैं, जस कोल्हू कोट पचास ॥

रमैनी १८

अदभुद पंथ बरनि नहिं जाई, भूले राम भूलि दुनियाई ।
जो चेतहु तो चेतरे भाई, नहि तो जीवहि जम लेजाई ॥
सब्द न मान कथै बिज्ञाना , ताते यम दीन्हो है थाना ।
संसय सावज बसै सरीरा, तिन्ह खायो अनबेधा हीरा।

साखी

संसय सावज सरिर में, संगहि खेल जुआरि ।
ऐसा घायल बापुरा, जीवन मारै झारि ॥

रमैनी १९

अनहद अनुभव को करि आसा, देखहु यह विपरीत तमासा।
इहै तमासा देखहु भाई, जहवाँ सून्य तहाँ चलि जाई।
सून्यहि बासा सून्यहि गयऊ, हाथा छोड़ि बेहाथा भयऊ।
संसय सावज सब संसारा, काल अहेरी साँझ सकारा।

साखी

सुमिरन करहु राम का, काल गहे है केस ।
ना जाने कब मारि हैं, क्या घर क्या परदेस ॥

रमैनी २०

अब कहु रामनाम अविनासी, हरि छोड़ि जियरा कतहुँ न जासी
जहाँ जाहु तहँ होहु पतंगा, अब जनि जरहु समुझि बिष संगा
राम नाम लौ लायसु लीन्हा, भृङ्गी काट समुझि मन दीन्हा।

भौ अस गरुवा दुखकी भारी, करु जिव जतन सुदेखु बिचारी॥
मनकी बात है लहरि बिकारा, तव नहिं सूझै वार न पारा।

साखी

इच्छा के भव सागरे, बोहित राम अधार।
कहैं कबीर हरिसरण गहु, गौ बछ खुर बिस्तार॥

रमैनी २१

बहुत दुःख दुखही की खानी, तब बचिहौ जब रामहिँ जानी।
रामहिँ जानि युक्ति से चलहीं, युक्तिहि ते फंदा नहिं परहीं॥
युक्तिहि युक्ति चला संसारा, निश्चय कहा न मानु हमारा।
कनक कामिनी घोर पटोरा, संपति बहुत रहहि दिन थोरा॥
थोरी संपति गौ बौराई, धर्मराय की खबरि न पाई।
देखि त्रास मुख गौ कुम्हिलाई, अमृत धोखे गौ बिष खाई॥

साखी

मैं सिरजों मैं मारता, मैं जारौं मैं खाउँ।
जल अरु थल में मैं रमा, मोर निरंजन नाउँ॥

रमैनी २२

अलख निरंजन लखै न कोई, जेहि बंधे बंधा सब लोई।
जेहि झूठे सब बाँधु अयाना, झूठी बात साँच कै माना॥
धंधा बँधा कीन्ह व्योहारा, कर्म विवर्जित बसै नियारा।
षट आश्रम षट दरसन कीन्हा, षट रस बस्तु खोट सब चीन्हा॥
चार वृक्ष छव साख बखानी, विद्या अगनित गनै न जानी।
औरौ आगम करै बिचारा, ते नहिं सूझै वार न पारा॥
जप तीरथ ब्रत कीजे पूजा, दान पुन्य कीजे बहु दूजा।

साखी

मन्दिर तो है नेह का, मति कोइ पैठै धाय।
जो कोइ पैठे धायके, बिन सिर सेती जाय॥

रमैनी २३

अल्प दुःख सुख आदिउ अन्ता, मन भुलान मैगर मैं मन्ता॥
सुख बिसराय मुक्ति कहँ पावै, परिहरि साँच झूठ निज धावै।
अनल ज्योति डाहे एक संगा, नैन नेह जस जरै पतंगा॥
करहु बिचार जो सब दुख जाई, परिहरि झूँठा केरि सगाई।
लालच लागी जन्म सिराई, जरामरन नियराइल आई॥

साखी

भर्म का बाँधा ई जगत्, येहि बिधि आवै जाय।
मानुष जीवन पायके, नर काहे जहँड़ाय॥

रमैनी २४

चन्द्र चकोर अस बात जनाई, मानुष बुद्धि दीन्ह पलटाई।
चारि अवस्था सपनेहु कहई, झूठे फूरो जानत रहई॥
मिथ्या बात न जाने कोई, यहि बिधि सबही गैल बिगोई।
आगे दै दै सबन गँवाया, मानुष बुधि सपनेहु नहिं आया॥
चौंतिस अक्षर से निकलै जोई, पाप पुन्य जानेगा सोई॥

साखी

सोइ कहते सोइ होहुगे, निकरि न बाहर आव।
होइ जुग ठाढ़े कहत हौं, ते धोखे न जन्म गँवाव।

रमैनी २५

चौंतिस अक्षर का यही बिसेखा, सहस्रों नाम याहि में देखा॥
भूलि भटकि नर फिर घट आया, हो अजान फिर सबहि गँवाया।
खोजहिं ब्रह्मा विस्नु सिव सक्ती, अमित लोक खोजहिं बहु भक्ती
खोजहिँ गन गँधर्ब मुनि देवा, अनँत लोक खोजहि बहुभेवा॥

साखी

जती सती सब खोजहीं, मनहि न मानैं हारि।
बड़ बड़ जीव न बाचहीं, कहहिं कबीर पुकारि॥

रमैनी २६

आपुहि कर्ता भये कुलाला, बहु विधि बासन गढ़े कुम्हारा।
बिधि ने सबै कीन्ह एक ठाऊँ, बहुत यतन कै बनयो नाऊँ ।
जठर अग्नि में दीन्ह प्रजाली, तामें आपु भये प्रतिपाली ।
बहुत यतन कै बाहर आया, तब सिव सक्ती नाम धराया ।
घर का सुत जो होय अयाना, ताके संग न जाहु सयाना ।
साँची बात कहौं मैं अपनी, भयो दिवाना और कि सपनी।
गुप्त प्रगट है एकै दूधा, काको कहिये ब्राह्मण शूद्रा ।
झूठ गर्भ भूलो मति कोई, हिन्दू तुर्क झूठ कुल दोई ।

साखी

जिन यह चित्र बनाइया, साँचा सूतर धार ।
कहहिं कबीर ते जन भले, जो चित्रहिं लेहिं निहार ॥

रमैनी २७

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मंडा, सप्त दीप पुहमी नौ खंडा ।
सत्य सत्य कहि विष्णु दृढ़ाई, तीन लोक में राखिनि जाई ।
लिंग रूप तब शंकर कीन्हा, धरती कीलि रसातल दीन्हा ।
तब अष्टंगी रचो कुमारी, तीनि लोक मोहा सब झारी ।
दुतिया नाम पार्वती भयऊ, तप करते शंकर को दयऊ ।
एकै पुरुष एकै है नारी, ताते रची खानि भौ चारी ।
सर्बन बर्बन देव औ दासा, रज सत तम गुण धरति अकासा।

साखी

एक अंड ओंकार ते, सभ जग भया पसार ।
कहहिं कबीर सब नारि रामकी, अबिचल पुरुष भतार ॥

रमैनी २८

अस जोलहा को मर्म न जाना, जिन्ह जग आनि पसारिन ताना।
धर्ती अकास दुइ गाड़ खोदाया, चांद सूर्य दुइ नरी बनाया ।

सहस्र तारले पूरन पूरी, अजहूँ बिनै कठिन है दूरी ॥
कहहिं कबीर कर्म ते जोरी, सूत कुसूत बिनै भल कोरी ।

रमैनी २९

बज्रहु ते तृन छिन में होई, तृण ते बज्र करै पुनि सोई ॥
निझरू नीरुजानि परिहरिया, कर्म केबांधल लालच करिया ।
कर्म धर्म मति बुधि परिहरिया, झूठा नाम साँच लै धरिया ॥
रजगति त्रिबिधकीन्ह परकासा, कर्मधर्म बुधि केर बिनासा।
रबि के उदय तारा भए छीना, चर बीचर दोनों मैं लीना ॥
बिष के खाये बिष नहिं जावै, गारुड़ सो जो मरत जियावै।

साखी

अलख जे लागी पलक में, पलकहिं में डसि जाय ।
बिषधर मन्त्र न मानहीं, तो गारुड़ काह कराय ॥

रमैनी ३०

औ भूले षट दरसन भाई, पाषँड भेष रहा लपटाई ।
जीव सीव, का आहि न सौना , चारिउ बेद चतुर गुन मौना।
जैन धर्म का मर्म न जाना, पाती तोरि देव घर आना।
दवना मरुवा चंपा फूला, मानहु जीवकोटि समतूला ॥
औ पृथवी के रोम उचारे, देखत जन्म आपनो हारे ।
मनमथ बिंदु करै असरारा, कल्पै बिंदु खस नहिं द्वारा ॥
ताकर हाल होय अदकूचा, छौ दरसन में जैन बिगूचा॥

साखी

ज्ञान अमर पद बाहिरे, नियरे ते है दूरि ।
जो जानै तेहि निकट है, (नातो) रह्योसकलघटपूरि ॥

रमैनी ३१

स्मृति आहि गुननके चीन्हा, पाप पुन्य कोमारग कीन्हा।
स्मृति बेद पढ़े असरारा, पाषँड रूप करै हंकारा ॥

पढ़े बेद अरु करै बड़ाई, संसय गाँठि अजहुँ नहिँ जाई।
पढ़िकै सास्त्र जीव बध करई, मूड़ काटि अगमन कै धरई ॥

साखी

कहहिं कबीर ई पाषंड, बहुतक जीव सताए।
अनुभव भाव न दरसई, जियत न आपु लखाए ॥

रमैनी ३२

अंध सो दर्पन बेद पुराना, दर्वी कहा महारस जाना।
जस खर चंदन लादेउ भारा, परिमल बास न जान गवाँरा ॥
कहहिं कबीर खोजै असमाना, सो न मिला जो जाय अभिमाना ॥

रमैनी ३३

बेदकी पुत्री स्मृति भाई, सो जेंवरि कर लेतहि आई।
आपुहि बरी आपु गर बंधा, झूठा मोह काल को फंदा ॥
बँधवत बँधन छोरि नहिं जाई, विषयस्वरूप भूलिदुनि आई ॥
हमरे दिखत सकल जग लूटा, दास कबीर राम कहि छूटा।

साखी

रामहि राम पुकारते, जिभ्या परि गव रोस।
सूधा जल पीवे नहीं, खोदि पिअनकी हैास ॥

रमैनी ३४

पढ़ि पढ़ि पंडित करु चतुराई, जिन मुक्ती मोहि कहु समुझाई।
कहँ बसे पुरुष कौनसो गाऊँ, सो पंडित समुझावहु नाऊँ ॥
चारि बेद ब्रह्मै निज ठाना, मुक्तिका मर्म उनहु नहिं जाना ॥
दान पुन्य उन बहुत बखाना, अपने मरन कि खबरि न जाना।
एक नाम है अगम गँभीरा, तहवाँ अस्थिर दास कबीरा ॥

साखी

चिउँटी जहाँ न चढ़ सकै, राई ना ठहराय।
आवागमन कि गम नहीं, तहँ सकलौ जग जाय ॥

रमैनी ३५

पंडित भूले पढ़ि गुन बेदा, आपु अपनपौ जानु न भेदा।
संध्या सुमिरन औ षट कर्मा, ई बहु रूप करै अस धर्मा॥
गायत्री युग चारि पढ़ाई, पूछहु जाय मुक्ति किन पाई।
और के छुये लेत हौ छींचा, तुमसे कहहु कौन है नींचा॥
ईगुन गर्व करो अधिकाई, अतिकै गर्व न होय भलाई॥
जासु नाम है गर्व प्रहारी, सो कस गर्वहि सकैसहारी।

साखी

कुल मर्यादा खोय के, खोजिन पद निरबान।
अंकुर बीज नसाय के, (नर) भये विदेही थान॥

रमैनी ३६

ज्ञानी चतुर बिचक्षन लोई, एक सयान सयान न होई॥
दुसर सयानको मर्म न जाना, उत्पति परलय रैन बिहाना।
बानिजएकसबनमिलि ठाना, नेम धर्म संयम भगवाना।
हरिअस ठाकुर तजियन जाई, बालन भिस्त गाँव दुलहाई॥

साखी

ते नर मरिके कहँ गये, जिन दीन्हो गुर चोंटि।
रामनाम निजजानि के, छाड़हु बस्तू खोटि॥

रमैनी ३७

एक सयान सयान न होई, दुसर सयान न जाने कोई॥
तिसर सयान सयानहि खाई, चौथ सयान तहाँ लै जाई।
पचयँ सयान न जाने कोई, छठये में सब गये बिगोई॥
सतयँ सयान जो जानहु भाई, लोक बेद में देय देखाई।

साखी

बिजक बतावे वित्तको, जो वित गुप्ता होय।
'वैसे' शब्द बतावे जीवको, बूझै विरला कोय॥

रमैनी ३८

यहि बिधिकहौ कहानहिं माना, मारग माहिं पसारिन ताना।

राति दिवस मिलि जोरिन तागा, ओटत कातत भर्म न भागा।
भर्महि सब जग रहा समाई, भर्म छोड़ कतहूँ नहिं जाई॥
परै न पूरि दिनहु दिन छीना, जहाँ जाय तहँ अंग विहीना।
जो मत आदि अंत चलि आई, सो मति सबहिन प्रकट सुनाई॥

साखी

यह संदेस फुर मानिके, लीन्हेउ सीस चढ़ाय।
संतो है संतोष सुख, रहहु सो हृदय जुड़ाय॥

रमैनी ३९

जिन्ह कलमाँ कलि माहिं पढ़ाया, कुदरत खोजि तिनहु नहिं पाया
करमत कर्म करैं करतूती, बेद किताब भया अस रीती॥
करमत सो जग भो औतरिया, करमत सो निजाम को धरिया।
करमत सुन्नति और जनेऊ, हिंदू तुर्क न जाने भेऊ॥

साखी

पानी पवन संजोयके, रचिया यह उत्पात।
सून्यहि सुरति समाय के, कासो कहिये जात॥

रमैनी ४०

आदम आदि सुद्धि नहिं पाई, मामा हउवा कहाँते आई।
तब नहिं होते तुरुक न हिंदू, मायके रुधिर पिता के बिन्दू॥
तब नहिं होते गाय कसाई, तब बिसमिल्ला किन फरमाई।
तब नहिं होते कुल औ जाती, दोजख भिस्त कौन उत्पाती॥
मन मसले का खबरि न जानी, मति भुलान दुइ दीन बखानी।

साखी

संयोगे का गुण रवे, बिन जोगे गुण जाय।
जिभ्या स्वाद के कारणे, कीन्हे बहुत उपाय॥

रमैनी ४१

अंबुक रासि समुद्र कि खाई, रबि ससि कोटि तैंतिसो भाई।

भंवर जाल में आसन माड़ा, चाहत सुखदुखसंग न छाड़ा॥
दुखको मर्म न काहू पाया, बहुत भाँति कै जग भरमाया।
आपुहि बाउर आपु सयाना, हृदय बसत रामनहिं जाना।

साखी

तेही हरि तेहि ठाकुरा, तेही हरि के दास।
ना यम भया न यामिनी, भामिनि चली निरास॥

रमैनी ४२

जब हम रहल रहल नहिं कोई, हमरे माहि रहल सब कोई।
कहहू राम कैान तोरि सेवा, सो समुझाय कहहु मोहि देवा॥
फुरफुर कहैां मारु सब कोई, झूठहि झूठा संगति होई।
आँधर कहे सभै हम दिखा, तहँ दिठियार बैठ मुख पेखा॥
यहि बिधि कहैां मानुजो कोई, जस मुख तस जो हृदया होई।
कहहिं कबीर हंस मुसकाई, हमरे कहल दुष्ट बहु भाई॥

रमैनी ४३

जिन्ह जिव कीन्ह आपु बिस्वासा, नर्क गये तेहि नर्कहि वासा।
आवत जात न लागै वारा, काल अहेरी साँझ सकारा॥
चैादह विद्या पढ़ि समुझावै, अपने मरन की खबर न पावै।
जाने जिव को परा अंदेसा, झूठहि आय कहाँ संदेसा॥
संगति छाड़ि करै असरारा, उबहे मोट नर्क के भारा॥

साखी

गुरुद्रोही औ मन मुखी, नारी पुरुष विचार।
तेनर चौरासी भ्रमै, जव लो ससि दिनकार॥

रमैनी ४४

कबहुं न भयउ संग औ साथा, ऐसहि जन्म गंवायउ हाथा।
बहुरि न पैहो ऐसो थाना, साधु संग तुम नहिं पहिचाना
अब तोर होय नर्क में बासा, निसि दिन बसेउ लबारके पासा।

साखी

जात सवन कहँ देखिया, कहहिं कबीर पुकार ।
चेतवा होय तो चेतले, दिवस परतु है धार ॥

रमैनी ४५

हरणाकुस रावण गौ कंसा, कृष्ण गये सुर नर मुनि वंसा ।
ब्रह्मा रायने मर्म न जाना, बड़ सब गये जे रहल सयाना ॥
समुझिपरी नहिं राम कहानी, निर्बक दूध कि सर्बक पानी ।
रहिगो पंथ थकित भौ पवना, दसौ दिसा उजार भौ गवना ॥
मीन जाल भौ ई संसारा, लोह कि नाव पषाण को भारा ।
खेवे सबै मर्म हम जाना, बूड़े सबै कहैं उतराना ॥

साखी

मछरी मुख जस केचुआ, मुसवन मुंह गिरदान ।
सर्पन मुख गहेजुआ, जात सभन की जान ॥

रमैनी ४६

बिनसे नाग गरुड़ गलिजाई, बिनसै कपटी औ सत भाई ।
बिनसे पाप पुण्य जिन कीन्हा, बिनसे गुण निर्गुण जिन चीन्हा
बिनसै अग्नि पवन औ पानी, बिनसै सृष्टि कहां लो गानी ॥
बिष्णु लोक बिनसै छिन माहीं, हौं देखा परलय की छाहीं ॥

साखी

मच्छरूप माया भई, यमरा खेल अहेर ।
हरि हर ब्रह्म न ऊबरे, सुर-नर मुनि केहि केर ॥

रमैनी ४७

जरासंध सिसुपाल संहारा, सहस्रआर्जुन छल सो मारा ।
बड़ छल रावण सो गौ बीती, लंका रहि सोना कै भीती ॥
दुर्योधन अभिमानहि गयऊ, पंडो केर मर्म नहिं पयऊ ।
माया डिंभ गये सब राजा, उत्तम मध्यम बाजन बाजा ॥

चर्कवती सब धरणि समाना, एकौ जीव प्रतीत न आना।
कहलै कहीं अचेतहि गयऊ, चेत अचेत झगर एक भयऊ ॥

साखी

ई माया जग मोहनी, मोहिस सब जग झार।
हरिश्चन्द्र सत कारने, घर घर गये बिकाय ॥

रमैनी ४८

मानिकपूर कबीर बसेरी, मुद्दति सुनहु सेख तकि केरी।
ऊजी सुनी जमनपुर थाना, झूठी सुनी पीरन को नामा ॥
इकइस पीर लिखे तेहि ठामा, खतमा पढ़ै पैगंमर नामा।
सुनत बोल मोहिं रहा न जाई, देखि मुकर्बा रहा भु-लाई ॥
हबीब और नबी के कामा, जहं लग अमलसो सबै हरामा।

साखी

सेख अकरदी सेखसकरदी, मानहु बचन हमार।
आदि अंत औ युगहि युग, देखहु दृष्टि पसार ॥

रमैनी ४९

दरकी बात कहो दुरवेसा, बादसाह है कौने भेसा।
कहां कूच कहं करहि मुकामा, मैं तोहि पूछों मूसलमाना ॥
लाल जर्द का नाना बाना, कौनसुरतको करहु सलामा।
काजीकाज करहु तुम कैसा, घर घर जबह करावहु भैंसा ॥
बकरी मुरगीकिन्ह फुरमाया, किसके कहे तुम छुरी चलाया।
दर्द न जानहु पीर कहावहु, बैता पढ़ि पढ़ि जग भर मावहु ॥
कहहि कबीरयकसयर कहावे, आपु सरीखे जग कबुलावे।

साखी

दिनको रोजा रहत है, रात हनत है गाय।
येहि खून वह बंदगी, क्योंकर खुसी खोदाय ॥

रमैनी ५०

कहते मोहिभइल युग चारी, समुझत नहीं मोर सुतनारी ।
वंस आगि लागवंसाहजरिया, भर्म भूलि नर धंधे परिया ॥
हस्तिन के फंदे हस्ती रहई, मृगके फंदे मिरगा रहई ।
लोहे लोह काटु यस आना, त्रियके तत्त्वत्रिया पहिचाना ॥

साखी

नारि रचंते पुरुष हैं, पुरुष रचंते नारि ।
पुरुषहि पुरुषा जो रचे, सो विरले संसार ॥

रमैनी ५१

जाकर नाम अकहुवा रे भाई, ताकर काह रमैनी गाई
कहत तातपर्य एक ऐसा, जसपंथी बोहित चढ़ि बैसा ।
है कछु रहनि गहनिकी बाता, बैठा रहै चला पुनि जाता
रहै वदन नहि स्वांग सुभाऊ, मन स्थिर नहिं बोलै काऊ ।

साखी

तन राता मन जात है, मनराता तन जाय ।
तन मन एकै होए रहै, तब हंस कबीर कहाय ॥

रमैनी ५२

जेहिकारणसिवअजहुँ बियोगी, अंग बिभूत लाय भै योगी
सेष सहसमुख पार न पावै, सो अब खसमसहित समुझावै
ऐसी विधि जो मोकँह ध्यावै, छठये मास दर्सन सो पावै
कौनेहु भाँति दिखाई देहों, गुप्तहिं रहो सुभाव सब लेहों

साखी

कहहिं कबीर पुकारि कै, सबका उहै विचार ।
कहा हमार मानै नहीं, किमि छूटै भ्रमजार ॥

रमैनी ५३

महादेव मुनि अंत न पाया, उमा सहित उन जन्म गवाँया
उनहूं ते सिध साधक होई, मन निरचय कहु कैसे कोई

जब लग तन में आहै सोई, तब लग चेत न देखै कोई।
तब चेतिहौ जब तजिहौ प्राना, भया अन्त तब मन पछिताना॥
इतना सुनति निकट चलि आई, मन के बिकार न छूटै भाई।

साखी

तीनलोक मुवा बउ आयके, छूटी न काहु कि आस।
एक अँधरे जग खाइया, सब का भया निपात॥

रमैनी ५४

मरिगे ब्रह्मा कासी के बासी, सोव सहित मुए अबिनासी।
मथुरा मरिगे कृष्ण गुवारा, मरि मरि गए दसौ अवतारा॥
मरि मरि गए भक्ति जिन ठानी, सगुन माहि निगुंन जिन्ह आनी॥

साखी

नाथ मुछंदर बांचे नही, गोरख दत्ता ब्यास।
कहहिं कबीर पुकार के, सब परे कालके फांस॥

रमैनी ५५

गए राम औ गए लछमना, संग न गै सीता अस घना।
जात कौरवै लागु न बारा, गए भोज जिन्ह साजल धारा॥
गए पंडव कुन्ती अस रानी, गए सहदेव जिन मति बुधि ठानी।
सर्ब सोन के लङ्क उठाई, चलत बार कछु संग न लाई॥
कुरिया जासु अंतरिछ छाई, सो हरिचंद्र देखि नहिं जाई।
मूरख मानुष बहुत सजोई, अपने मरे और लग रोई॥
ई न जान अपनो मरिजैबे, टका दस बिढै और लेखैबे।

साखी

अपनी अपनी करि गए, लागि न काहु के साथ॥
अपनी करि गये रावणा, अपनी दसरथ नाथ॥

रमैनी ५६

दिन दिन जरे जरनि के पाऊ, गड़े जाए न उमगै काऊ।
कंधा देइ मसखरी करई, कहुधौ कवनि भांति निस्तरई॥

अकरम करै कर्म को धावै, पढ़िगुनि वेद जगत समुझावै।
छंछे परे अकारथ जाई, कहहिं कबीर चित चेतहु भाई॥

रमैनी ५७

कृतिया सूत्र लोक इक अहई, लाख पचास कि आइस कहई।
विद्या बेद पढ़े पुनि सोई, बचन कहत परतक्षै होई॥
पैठि बात विद्या के पेटा, बाहु के भर्म भया संकेता॥

साखी

खग खोजन के तुम परे, पाछे अगम अपार।
बिन परिचय कस जानिहो, झूठा है हंकार॥

शब्द ५८

तै सुतमानु हमारी सेवा, तो कहँ राजदेउँ हो देवा।
अगम दुगम गढ़ देउँ छोड़ाई, औरो बात सुनहु कछु आई॥
उतपति परलय देउँ दिखाई, करहु राजसुख बिलसहु जाई॥
एको बार न होय है बांको, बहुरि जन्म ना होय हैं ताको।
जाय पाप सुख होवे घाना, निस्चय बचन कबीर के माना॥

साखी

साधु संत तेई जना, जिन मानल बचन हमार।
आदिअंत उत्पतिप्रलय, देखहु दृष्टि पसार॥

रमैनी ५९

चढ़त चढ़ावत भँड़हर फोरी, मन नहिं जानै केकरिचेरी।
चोर एक मूसै संसारा, बिरला जन कोइ जानन हारा॥
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी, एकै राम सकल रखवारी।

साखी

पाहन होके सब गए, बिनु भितियन को चित्त।
जासो कियौ मिताइया, सो धन भया न हित्त॥

रमैनी ६०

छाड़हु पति छाड़हु लबराई, मन अभिमान टूटि तब जाई।

जिन लै चोरी भिक्षा खाई, सो बिरवा पलुहावन जाई ।
पुनि संपति औ पतिको धावे, सो बिरवा संसार लै आवे ।

साखी

झूठ झूठके छाड़हू, मिथ्या यह संसार ।
तेहि कारण मैं कहत हैां, जाते होय उबार ॥

रमैनी ६१

धर्म कथा जो कहते रहई, लबरी नित उठि प्रातहि कहई ।
लबरि बिहाने लबरी सांझ, एकलबरी बसै हृदया मांझ ॥
रामहु केर मर्म नहिं जाना, लै मति ठानिन वेद पुराना ।
बेदहु केर कहल नहिं करई, जरते रहै सुस्त नहिं परई ॥

साखी

गुनातीत के गावते, आपुहि गए गँवाय ।
माटी तन माटी मिल्यो, पवनहिं पवन समाय ॥

रमैनी ६२

जो तोहि कर्ता बर्ण बिचारा, जन्मत तीन दंड अनुसारा ।
जन्मत सूद्र मुए पुनि सूद्रा, कृतिम जनेउ घालि जगदुन्द्रा ॥
जो तूं ब्राह्मण ब्राह्मणी के जाया, और राह दै काहे न आया ।
जो तूँ तुर्क तुरक्किनी के जाया, पेटे काहे न सुनति कराया ॥
कारी पीरी दूहहू गाई, ताकर दूध देव बिलगाई ।
छाँड़हु कपट नर अधिक सयानी, कहहिं कबीर भजु सारंगपानी

रमैनी ६३

नाना रूप वर्न एक कीन्हा, चारिवर्न वै काहु न चीन्हा ।
नष्ट गए कर्त्ता नहिं चीन्हा, नष्ट गये औरहि मन दीन्हा ॥
नष्ट गए जिन वेद बखाना, वेद पढ़ै पर भेद न जाना ।
बिमलख करै नयन नहिं सूझा, भा अज्ञान कछू नहि बूझा ॥

साखी

नाना नाच नचाय के, नाचे नट के भेष ।
घट घट अविनासी बसै, सुनहु तको तुम सेष ॥

रमैनी ६४

काया कञ्चन यतन कराया, बहुत भाँति के मन पलटाया ।
जो सौ बार कहौं समुझाई, तइयो धरै छोड़ि नहिं जाई ।
जनके कहे जोजन रहिजाई, नवों निद्धि सिद्धु तिन पाई ।
सदा धर्म तेहि हृदया बसई, राम कसौटी कसतहि रहई ।
जोरि कसावे अंते जाई, सो बाउर आपुहि बौराई ॥

साखी

पड़िगै फाँसो काल की, करहु आपनो सोच ।
संत निकटही संत जो, मिल रहै पोचे पोच ॥

रमैनी ६५

आपन गुन को अवगुन कहहू, इहै अभाग जो तुम न बिचरहू ।
तू जियरा बहुते दुख पाया, जल बिन मीन कौन सुख पाया ॥
चात्रिक जल हल आसे पासा, स्वांग धरै भवसागर आसो ।
चात्रिक जल हल भरेजौ पासा, मेघ न बरसै चलै उदासा ॥
राम नाम ईहै निज सारा, औरो झूठ सकल संसारा ।
हरि उतंग तुम जाति पतंगा, यम घर कियो जीव के संगा ॥
किंचित है सपने निधि पाई, हिय न अमाय कहँ धरो छिपाई ।
हिय न समाय छोरि नहिं पारा, झूठा लोभ किनहु न बिचारा ॥
स्मृति कीन्ह आपु नहिं माना, तरिवर छर छागर होय जाना ।
जिव दुरमति डोले संसारा, तेहि नहिं सूझै वार न पारा ॥

साखी

अंध भया सब डोलई, कोई न करै विचार ।
कहा हमार माने नहीं, किमि छूटै भ्रमजार ॥

रमैनी ६६

सोई हित बंधू मोहिं भावै, जात कुमारग मारग लावै ।
सो सयान मारग रहिजाई, करै खोज कबहूं न भुलाई ॥

सो झूठा जो सुत कहँ तजई, गुरु की दया रामते भजई।
किंचित है एक तेज भुलाना, धन सुत देखि भया अभिमाना॥

साखी

दिया नखत तन कीन्ह पयाना, मंदिर भया उजार।
मरिगा सो तो मरि गया, बाँचे बाचन हार॥

रमैनी ६७

देह हलाये भक्ति न होई, स्वांग धरे नर बहु बिधि सोई।
धींगी धींगा भलो न माना, जो काहू मोहि हृदय न जाना॥
मुख किछु और हृदय किछु आना, स्वप्नेहु काहू मोहि न जाना।
ते दुख पावै इह संसारा, जो चेतहु तो होय उबारा॥
जो गुरु की चित निंदा करई, सूकर स्वान जन्म ते धरई॥

साखी

लख चौरासी जीव जंतु में, भटकि भटकि दुखपाव।
कहे कबीर जो रामहि जाने, सो मोहि नीके भाव॥

रमैनी ६८

तेहि वियोगते भये अनाथा, परि निकुञ्ज बन पावै न पंथा।
बेदो नकल कहे जो जानै, जो समुझै सो भलो न मानै॥
नटवर विद्या खेल जो जानै, तेहि गुन के ठाकुर भलमानै।
उहै जो खेलै सब घट माहीं, दूसर के कछु लेखा नाहीं॥
भलो पोच जो अवसर आवै, कैसहु कै जन पूरा पावै॥

साखी

जाकर सर लागै हिये, सो जानेगा पीर।
लागै तो भागे नहीं, सुख के सिंधु कबीर॥

रमैनी ६९

ऐसा योग न देखा भाई, भूला फिरै लिये गफिलाई।
महादेव को पंथ चलावै, ऐसो बड़ो महंत कहावै॥
हाट बजारै लावै तारी, कच्चा सिद्धहि माया प्यारी।
कब दत्ते मावासो तोरी, कब सुकदेव तोपची जोरी॥

नारद कब बंदूक चलाया, ब्यासदेव कब बंब बजाया।
करहिं लराई मतिके मंदा, ये अतीत की तरकस बंदा॥
भये विरक्त लोभ मन ठाना, सोना पहिर लजावै बाना।
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा, गांव पाय जस चले करोरा॥

साखी

तियसुंदरी न सोहई, सनकादिक के साथ।
कबहुंक दाग लगावई, कारी हाँडी हाथ॥

रमैनी ७०

बोलना सो बोलिय रे भाई, बोलतही सब तत्व नसाई।
बोलत बोलत बाढु बिकारा, सो बोलिये जो परै बिचारा॥
मिलहिं संत बचन दुइ कहिए, मिलहिं असंत मैान होय रहिए।
पंडित सो बोलिय हितकारी, मूरख सों रहिये झखमारी॥
कहहिं कबीर अर्धघट डोलै, पूरा होय विचार ले बोलै॥

रमैनी ७१

सोग बंधावा जिन सम माना, ताको बात इंद्र नहिं जाना।
जटा तोरि पहिरावे सेली, योग मुक्ति की गर्भ दुहेली॥
आसन उड़ाये कौन बड़ाई, जैसे काग चील्ह मड़राई।
जैसी भीत तैसी हैं नारी, राज पाट सब गनैं उजारी॥
जैसे नर्क तस चंदन जाना, जस बाउर तस रहै सयाना।
तपसी लोग गनै एकसारा, खांड छाड़ि मुख फांकैछारा॥

साखी

यही विचार विचार ते, गये बुद्धिबल चेत।
दुइमिलि एकै होय रहा, काहि लगाओ हेत॥

रमैनी ७२

नारि एक संसारहि आई, वाके माय न बापै जाई।
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा, तामे भ्रमि रहा संसारा॥
दिना सात लै उनकी सही, बुद अदबुद अचरज एक कही।
वाहि कि बंदन कर सबकोई, बुद अदबुद अचरज बड़होई॥

साखी

मूस विलाई एक संग, कहु कैसे रहिजाय।
अचरज एक देखो हो संतो, हस्ती सिंहहि खाय ॥

रमैनी ७३

चली जात देखी एक नारी, तर गागरि ऊपर पनिहारी।
चली जात वह बाटहि बाटा, सोवनहार के ऊपर खाटा ॥
जाड़न मरै सपेदी सौरी, खसम न चीन्ह धरनि भै औरी।
सांझ सकारे दिया लै बारै, खसमहि छाड़ि संबरै लगवारै॥
वाही के रस निसिदिनराची, पियासेबातकहै नहिंसांची।
सोवत छाड़िचलीपियअपना, ईदुखअवधकहौं केहिसना ॥

साखी

अपनीजांघउघारिके, अपनी कही न जाय।
किंचित जानै आपना, की मेरा जन गाय ॥

रमैनी ७४

तहिया गुप्त स्थूल न काया, ताके सोग न ताके माया।
कमलपत्र तरंग एक माहीं, संगहि रहै लिप्त पै नाहीं ॥
आसा ओस अंडमा रहई, अग्नित अंड न कोई कहई।
निराधार आधार ले जानी, राम नाम ले उचरीबानी ॥
धर्म कहै सब पानी अहई, जाती के मन बानी रहई।
ढोर पतंग सरै घरियारा, तेहि पानीसबकरैअचारा ॥
फंद छोरि जो बाहर होई, बहुरि पंथ नहिं जोहै सोई ॥

साखी

भर्मक बाधलई जगत, कोइ न करै विचार।
हरि की भक्ति जाने बिना, भव बूड़ि मुवा संसार ॥

रमैनी ७५

तेहि साहबके लागहु साथा, दुइ दुखमेटिकेहोहुसनाथा।
दसरथ कुल अवतरि नहिं आये, नहीं यसोदा गोदखिलाये ॥
पृथ्वीरवन धवन नहिं करिया, पैठिपताल नहीबलिछलिया।

नहिंबलिराजसोमाडल रारी, नहिंहिरनाकुसबधलपछारी
ब्राहरूप धरनी नहिं धरिया, क्षत्रीमारि निक्षत्रनकरिया
नहिंगोबर्धनकरगहिधरिया, नहींग्वालसंगबनबनफिरिया
गंडक सालिग्रामन कूला, मच्छ कच्छ होय नहिं जलडोला
द्वारावती सरीर न छाँड़ा, लै जगन्नाथ पिंड नहिं गाड़ा

साखी

कहहिं कबीर पुकारि के, बे पंथै मत भूल ।
जेहि राखेउ अनुमानकरि, सो थूल नहीं अस्थूल ॥

रमैनी ७६

माया मोह सकल संसारा, यहै विचार न काहु बिचारा
माया मोह कठिन है फन्दा, करे बिबेक सोई जन बंदा
राम नाम लै बेरा धारा । सो तो लै संसारहि पारा

साखी

राम नाम अतिदुर्लभा, औरे ते नहिं काम ।
आदि अंत औ युगहि युग, रामहिं ते संग्राम ॥

रमैनी ७७

एकै काल सकल संसारा, एक नाम है जगतपियारा
तियापुरुषकछुकथो न जाई, सर्वरूप जग रहा समाई ।
रूप निरूप जाय नहिं बोली, हलका गरुवा जाय न तौली
भूख न तृषा धूप नहिं छाँहीं, दुःख सुख रहित रहै तेहिमाहीं।

साखी

अपरमपार रूप बहुरंगी, रूप निरूपनताहि ।
बहुत ध्यान कै खोजिया, नहिं तेहिसंख्या आहि ॥

रमैनी ७८

मानुष जन्म चुकेहु अपराधी, यहि तनकेरे बहुत हैंसाझी
तात जननि कहैं पुत्र हमारा, स्वारथ जानिकीन्ह प्रतिपारा ।
कामिनि कहैं मोर पिय आहीं, बाघिन रूप गरासनचाहीं
पुत्र कलत्र रहैं लौ लाई, यमकी नाय रहै मुख बाई ।

काग गिद्ध दोउ मरन बिचारैं, सूकर स्वान दोउ पंथ निहारैं।
अग्नि कहै मैं ई तन जारों, पानि कहै मैं जरत उबारों॥
धरती कहै मोहिं मिलि जाई, पवन कहै संग लेउं उड़ाई।
तेहि घर को घर कहै गंवारा, सो बैरी है गले तुम्हारा॥
सो तन तुम आपन करि जानी, विषय स्वरूप भूले अज्ञानी।

साखी

इतने तनके साझिया, जन्मों भरि दुख पाय।
चेतत नहीं मुग्ध नर बौरे, मोर मोर गोहराय॥

रमैनी ७६

बढ़वत बढ़ी घटावत छोटी, परषत खरा परषावत खोटी।
केतिक कहौं कहां लै कही, औरो कहौं परे जो सही॥
कहे बिना मोहि रहा न जाई, बिरहिन लै लै कूकुर खाई।

साखी

खाते खाते युग गया, बहुरि न चेतो आय।
कहहिं कबीर पुकारिके, जीव अचेतहिं जाय॥

रमैनी ८०

बहुतक साहस कर जिय अपना, तेहि साहेब से भेंट न सपना।
खरा खोट जिन नहिं परखाया, चाहत लाभ तिन मूल गंवाया॥
समुझ न परी पातरी मोटी, ओछी गांठि सभै भै खोटी।
कहैं कबीर केहि देहो खोरी, जब चलिहो झिन आसा तोरी॥

रमैनी ८१

देव चरित्र सनुहु हो भाई, सो ब्रह्मा जो धिऐ नसाई।
दूजे कहौ मंदोदरि तारा, जेहि घर जेठ सदा लगवारा॥
सुरपति जाय अहिल्यहि छरी, सुर गुरु घरनि चंद्रमा हरी।
कहैं कबीर हरिके गुन गाया, कुंतिहि करन कुंवारिहि जाया॥

रमैनी ८२

सुख के वृक्ष एक जगत उपाया, समुझि न परल विषय कछु माया।
छौ क्षत्रि पत्री युग चारी, फल दुइ पाप पुन्य अधिकारी॥

स्वाद अनंत कछु बरनिन जाई, करि चरित्र तेहि मांहि समाई ।
नटवर साज साजिए साजी, जो खेलै सो देखै बाजी ॥
मोह बापुरा युक्त न देखा, सिवसक्ती बिरंचि नहिं पेखा ।

साखी

परदे परदे चलिगई, समुझ परी नहिं बानि ।
जो जानै सो बांचिहैं, होत सकल की हानि ॥

रमैनी ८३

क्षत्री करे क्षत्रिया धर्मा, वाके बढ़े सवाई कर्मा ।
जिन्ह अवधू गुरुज्ञान लखाया, ताकर मन ताही लै धाया ॥
क्षत्री सो जो कुटुंबहि जूझै, पांचौ मेटि एक कै बूझै ।
जीवहिं मारि जीव प्रतिपाले, देखत जन्म आपनो घाले ॥
हाले करै निसानै घाऊ, जूझि परै तहँ मनमतराऊ ।

साखी

मनमथ मरै न जीवही, जीवहिं मरन न होय ।
सून्य सनेही राम बिनु, चले अपनपौ खोय ॥

रमैनी ८४

तूं जिय आपन दुखहि सँभारा, जेहि दुख ब्यापि रहल संसारा ॥
माया मोह बँधा सब लोई, अल्प लाभ मूल गौ खोई ॥
मोर तोर में सबै बिगूता, जननी उदर गर्भ मा सूता ।
बहुत खेल खेलहिं बहु रूपा, जन भंवरा अस गये बहूता ॥
उपजि बिनसि फिर योनी आवै, सुख को लेस न सपनेहु पावै ॥
दुख संताप कष्ट बहु पावै, सो न मिला जो जरत बुझावै ॥
मोर तोर में जरै जग सारा, धृग स्वारथ झूठा हंकारा ।
झूठी आस रहा जग लागी, इनते भागि बहुरि पुनि आगी ॥
जेहि हित कै राखेउ सब लोई, सो सयान बाँचा नहिं कोई ।

साखी

आपु आप चेतै नहीं, कहाे तो रुसवा होय ।
कहैं कबीर जो आपु न जागै, अस्ति निरस्ति न होय ॥

॥ अथ शब्द प्रारंभः ॥

शब्द १

संतो भक्ति सतोगुर आनी ।

नारी एक पुरुष दुइ जाये, बूझो पंडित ज्ञानी ।
पाहन फोरि गंग एक निकरी, चहुँ दिसि पानी पानी ॥
तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहर समानी ।
उड़ि माखी तरवर को लागी, बोलै एकै बानी ॥
वहि माखी को माखा नाहीँ, गर्भ रहा बिन पानी ।
नारी सकल पूरुष वे खायो, ताते रहेउँ अकेला ॥
कहैं कबीर जो अबकी बूझै, सोई गुरु हम चेला ।

शब्द २

संतो जागत नींद न कीजै ।

काल न खाय कल्प नहिं व्यापै, देह जरा नहिं छीजै ॥
उलटी गंग समुद्रहि सोखै, ससि औ सूरहि ग्रासै ।
नव ग्रह मारि रोगिया बैठे, जल मां बिम्ब प्रकासै ॥
बिनु चरनन को दुहुँ दिसि धावै, बिनु लोचन जग सूझै ।
संसव उलटि सिंह को ग्रासै, ई अचरज को बूझै ॥
औंधे घड़ा नहीं जल बूड़े, सीधे सो जल भरिया ।
जेहि कारन नर भिन्न भिन्न करे, गुरु प्रसाद ते तरिया ॥
बैठि गुफा में सब जग देखा, बाहर कछू न सूझै ।
उलटा बान पारधी लागे, सूरा होय सो बूझै ॥
गायन कहे कबहूँ नहिं गावै, अनबोला नित गावै ।
नटवर बाजा पेखनि पेखै, अनहद हेत बढ़ावै ॥
कथनी बंदनी निज कै जो हैं, ई सब अकथ कहानी ।
धरती उलटि अकासहि बेधे, ई पुरुष की बानी ॥

बिना पियाला अमृत अँचवै, नदी नीर भरि राखे।
कहै कबिर सो युग युग जीवै, जो राम सुधारस चाखे॥

शब्द ३

संतो घर में झगरा भारी।
राति दिवस मिलि उठि उठि लागैं, पांच ढोटा एक नारी॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पाँचो अधिक सवादी।
कोउ काहु को हटा न माने, आपुहि आप मुरादी॥
दुर्मति केर दोहागिन मेटो, ढोटेहि चाप चपेरे।
कहैं कबीर सोई जन मेरा, जो घर की रारि निवेरे॥

शब्द ४

संतो देखत जग बौराना।
सांच कहों तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना॥
नेमी देखा धर्मी देखा, प्रात करै असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना॥
बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़ै किताब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना॥
आसन मारि डिंभ धर बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्भ भुलाना॥
टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना॥
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना।
आपस में दोऊ लरि मूये, मर्म न काहू जाना॥
घर घर मंतर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु के सहित सिख्य सब बूड़ें, अन्तकाल पछिताना॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, ई सब गर्भ भुलाना।
केतिक कहों कहा नहिं माने, सहजै सहज समाना॥

शब्द ५

संतो अचरज एक भौ भारी, कहौं तो को पतियाई ॥
एकै पुरुख एक है नारी, ताकर करहु बिचारा।
एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा ॥
एकै नारी जाल पसारा, जग में भया अंदेसा।
खोजत काहू अंत न पाया, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ॥
नागफांस लिये घट भीतर, मूसिन सब जग झारी।
ज्ञान खडग बिनु सब जग जूझै, पकरि न काहू पाई ॥
आपै मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई।
कहैं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुर लीन्ह जगाई ॥

शब्द ६

संतो अचरज एक भौ भारी, पुत्र धरल महतारी ॥
पिता के संगहि भई बावरी, कन्या रहलि कुंवारी।
खस्महि छौँड़ि ससुर संग गौनी, सो किन लेहु बिचारी ॥
भाई के संग सासुर गौनी, सासुहि सावत दीन्हा।
ननद भौज परपंच रच्यो है, मोर नाम कहि लीन्हा ॥
समधी के संग नाहीं आई, सहज भई घरबारी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, पुरुष जन्म भौ नारी ॥

शब्द ७

संतो कहौं तो को पतियाई, झूठ कहत सांच बनिआई ॥
लौके रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं सांई।
चिमिक चिमिक चिमिकै दृग दुहु दिस, अर्ब रहा छिरिआई ॥
आपै गुरू कृपा कछु कीन्हा, निर्गुन अलख लखाई।
सहज समाधी उनमुनि जागै, सहज मिले रघुराई ॥
जहँ जहँ देखो तहँ तहँ सोई, मन मानिक बेध्यो हीरा।
परम तत्व गुरु ही से पावै, कहै उपदेस कबीरा ॥

शब्द ८

संतो आवै जाय सो माया ।
है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहूं गया न आया ॥
का मकसूद मच्छ कच्छ होना, संखा सुर न संहारा ।
है दयाल द्रोह नहिं वाके, कहहु कौन को मारा ॥
वे कर्ता न बराह कहाये, धरनि धरै नहिं भारा ।
ई सब काम साहेब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ॥
खंभ फोरि जो बाहर होई, तेहि पतिजे सब कोई ।
हिरनाकुस नख उदर बिदारे, सो कर्ता नहिं होई ॥
बावन रूप न बलि को जाचै, जो जाचै सो माया ।
बिना बिबेक सकल जग भरमै, माया जग भर्माया ॥
परसुराम क्षत्री नहिं मारयो, ई छल माया कीन्हा ।
सतगुर भक्ति भेद नहिं जाने, जीवहि मिथ्या दीन्हा ॥
सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पखान नहिं बन्धा ।
वै रघुनाथ एक कै सुमिरै, जो सुमिरै सो अन्धा ॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आये, कर्तै कंस न मारा ।
हैं मेहरबान सबन को साहेब, ना जीता ना हारा ॥
वै कर्ता नहिं बौद्ध कहावै, नहीं असुर संहारा ।
ज्ञान हीन कर्ता कै भर्मै, माया जग भर्माया ॥
वे कर्ता नहिं भये कलंकी, नहिं कालिंगहि मारा ।
ई छल बल सब माया कीन्हा, यतिन सतिन सब टारा ॥
दस अवतार ईस्वरी माया, कर्ता कै जिन पूजा ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, उपजै खपै सो दूजा ॥

शब्द ६

संतो बोले ते जग मारै ।
अन बोलते कैसे बनिहै, सब्दहि कोइ न बिचारै ॥

पहिले जन्म पुत्र को भयऊ, बाप जन्मिया पाछे।
बाप पूत के एकै नारी, ई अचरज को काछे॥
ढुंढ़ा राजा टीका बैठे, बिखहर करे खवासी।
स्वान बापुरा धरनि ढाकनों, बिल्ली घर में दासी॥
कार दुकार कार कटि आगे, बैल करै पटवारी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भैंसे न्याव निबारी॥

शब्द १०

संतो राह दुनो हम दीठा।
हिन्दू तुर्क हटा नहिं मानै, स्वाद सबन को मीठा॥
हिन्दू ब्रत एकादसि साधै, दूध सिंघारा सेती।
अन्न को त्यागै मन नहिं हटके, पारन करै सगोती॥
तुरुक रोज़ा निमाज़ गुज़ारै, बिस्मिल बांग पुकारै।
इनहको भिस्त कहां ते होवे, जो साँझै मुर्गी मारै॥
हिन्दु की दया मेहर तुर्कन की, दूनो घट से त्यागी।
ये हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनो घर लागी॥
हिन्दु तुर्क की एक राह है, सतगुरु सोइ लखाई।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, राम न कहूँ खोदाई॥

शब्द ११

संतो पांड़े निपुन कसाई।
बकरा मारि भैंसा पर धावे, दिल में दर्द न आई॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, बिधि से देवि पुजाई।
आतम मारि पलक में बिनसे, रुधिर कि नदी बहाई॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा मांहिं अधिकाई।
इनहते दीक्षा सब कोइ मांगै, हँसि आवै मोहिं भाई॥
पाप कटन को कथा सुनावैं, कर्म करावै नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर देखा, यम लाये हैं खींचा॥

गाय बधे तेहि तुरका कहिये, इन्हते वै क्या छोटे।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, कलि में ब्राह्मन खोटे॥

शब्द १२

संतो मते मातु जन रंगी।
पियत पियाला प्रेम सुधारस, मतवाले सतसंगी॥
अर्ध ऊर्ध ले भट्ठी रोपिनि, लेत कसारस गारी।
मूंदे मदन काटि कर्म कस्मल, संतत चुवत अगारी॥
गोरखदत्त बसिस्ट व्यास कबि, नारद सुक मुनि जोरी।
बैठे सभा संभु सनकादिक, तहँ फिर अधर कटोरी॥
अंबरीख औ याज्ञ जनक जड़, सेख सहस्त्र मुख फाना।
कहलों गनों अनंत कोटि लों, अमहल महल दिवाना॥
ध्रुव प्रह्लाद बिभीखन माते, माती सेवरी नारी।
निर्गुन ब्रह्म मते बिन्दाबन, अजहूँ लागु खुमारी॥
सुर नर मुनि तिय पीर औलिया, जिनरे पिया तिन्ह जाना।
कहहिं कबिर गूँगे की शक्कर, क्यों कर कहै बखाना॥

शब्द १३

राम तेरी माया दुंद मचावै।
गति मति वाकी समुझ परी नहिं, सुरनर मुनिहि नचावै॥
क्या सेमर तेरि साखा बढ़ाये, फूल अनूपम बानी।
केतिक चातृक लागि रहे हैं, देखत रुवा उड़ानी॥
काह खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई न पावै।
ग्रीसम ऋतु जब आनि तुलानी, छाया काम न आवै॥
अपना चतुर और को सिखवै, कनक कामिनी स्यानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, राम चरन रितु मानी॥

शब्द १४

रामुरा संसय गांठि न छूटै, ताते पकरि पकरि जम लूटै॥
होय कुलीन मिस्कीन कहावे, तूँ योगी सन्यासी।

ज्ञानी गुनी सूर कवि दाता, ये मति किनहु न नासी ॥
स्मृति वेद पुरान पढ़ै सब, अनुभव भावना दरसै ।
लोह हिरन्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परसै ॥
जियत न तरेउ मुये का तरिहो, जियतहि नाहिं तरै ।
गहि परतीत कीन्ह जिन्ह जासों, सोई तहां अमरै ॥
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना, सोई समुझ सयाना ।
कहैं कबीर तासो क्या कहिये, जो देखत दृष्टि भुलाना॥

शब्द १५

रामुरा चली बिना बन माँ हो, घरछोड़ेजात जुलाहो ॥
गज नौ गज दस गज उनइसकी, पुरिया एक तनाई ।
सात सूत नौ गाढ़ बहत्तर, पाट लागु अधिकाई ॥
तापट तूलन गज न अमाई, पैसन सेर अढ़ाई ।
ता में घटै बाढ़ै रतियो नाहिं, कर कच करै घरहाई ॥
नित उठि बाढ़ि खसम सो बरबस, ता पर लागु तिहाई ।
भींगी पुरिया काम न आवे, जोलहा चला रिसाई ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जिन यह सृष्टि बनाई ।
छाँड़ पसार राम भजु बौरे, भवसागर कठिनाई ॥

शब्द १६

रामुरा झिन झिन जंतर बाजे, कर चरन बिहूना नाचे ॥
कर बिनु बाजै सुनै स्रवन बिनु, स्रवने स्रोता सोई ।
पाटन सुजस सभा बिनु अवसर, बूझहु मुनि जन लोई ॥
इन्द्री बिनु भोग स्वाद जिभ्या बिनु, अक्षय पिंड बिहूना ।
जागत चोर मंदिर तहँ मूसै, खसम अक्षत घर सूना ॥
बीज बिनु अंकुर पेड़ बिनु तरवर, बिनु फूले फल फरिया ।
बाँझ के कोख पुत्र अवतरिया, बिनु पग तरवर चढ़िया ॥
मसि बिनु द्वाइत कलम बिनु कागद, बिनु अक्षर सुधि होई ।

सुधिबिनु सहज ज्ञान बिनुज्ञाता, कहैं कबीर जन सोई ॥

शब्द १७

रामहिं गावै औरहि समुझावै, हरि जाने बिनु बिकल फिरै ॥
जेहि मुख वेद गायत्री उचरै, ताके बचन संसार तरै ।
जाके पांव जगत उठि लागे, सो ब्राह्मन जिव बद्ध करै ॥
अपने ऊंच नीच घर भोजन, घीन कर्म करि उदर भरै ।
ग्रहन अमावस ढुकि ढुकि माँगै, कर दीपक लिये कूप परै ॥
एकादसी बरत नहिं जानै, भूत प्रेत हठि हृदय धरै ।
तजि कपूर गाँठी बिख बांधै, ज्ञान गवाय के मुग्ध फिरै ॥
छीजै साह चोर प्रतिपालै, संत जनाकी कूटि करै ।
कहैं कबीर जिभ्या के लंपट, यहि बिधि प्रानी नरक परै ॥

शब्द १८

राम गुन न्यारो न्यारो न्यारो ।
अबुझा लोग कहाँलों बूझै, बूझन हार बिचारो ॥
केतेहि रामचंद्र तपसी से, जिन्ह यह जग बिटमाया ।
केतेहि कान्ह भये मुरलीधर, तिन्ह भी अंत न पाया ॥
मच्छ कच्छ औ ब्राह स्वरुपी, बावन नाम धराया ।
केतेहि बौद्ध भये निकलंकी, तिन्ह भी अन्त न पाया ॥
केतेहि सिध साधक संन्यासी, जिन्ह बनवास बसाया ।
केतेहि मुनिजन गोरख कहिये, तिन्ह भी अंत न पाया ॥
जाकी गति ब्रम्है नहिं जानी, सिव सनकादिक हारे ।
ताके गुन नर कैसेक पैहो, कहैं कबीर पुकारे ॥

शब्द १९

ये तत राम जपो जो प्रानी, तुम बूझहु अकथ कहानी ॥
जाके भाव होत हरि ऊपर, जागत रैन बिहानी ।
डाइनि डारे सोनहा डोरै, सिंह रहत बन घेरे ॥
पाच कुटुंब मिलि जूझन लागे, बाजन बाजु घनेरे ।

रोहू मृगा संसय बन हाँकै, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरे सकल बन डाहै, मच्छ अहेरा खेलै ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै ॥
जो यह पद को गाय बिचारै, आपु तरे औ तारै ।

शब्द २०

कोई राम रसिक रस पियहुगे, पियहुगे युग जियहुगे ॥
फल अंकित बीज नहीं बोकला, सुख पंछी रस खायो ।
चुवै न बूंद अंग नहिं भीजे, दास भंवरसंग लायो ॥
निगम रिसाल चारि फल लागे, तामे तीन समाई ।
एक दूरि चाहै सब कोई, जतन जतन कहु पाई ॥
गए बसंत ग्रीसम ऋतु आई, बहुरि न तरवर आवै ।
कहैं कबीर स्वामी सुखसागर, राम मगन होय पावै ॥

शब्द २१

राम न रमसि कौन डंहलागा, मरिजैबे का करबे अभागा ॥
कोइ तीरथ कोइ मुंडित केसा, पाखंड मंत्र भर्म उपदेसा ।
विद्या वेद पढ़ि करै हंकारा, अंतकाल मुख फाँके छारा ॥
दुखित सुखित हो कुटुंब जेमावै, मरनबार यकसर दुख पावै ।
कहैं कबीर येकलि है खोटी, जो रहै करवा सो निकरै टोटी ॥

शब्द २२

अवधू छाड़हु मन विस्तारा ।
सो पद गहो जाहिते सदगति, पारब्रह्म से न्यारा ॥
नहीं महादेव नहीं मुहम्मद, हरि हज़रत तब नाहीं ।
आदम ब्रह्मा कछु नहिं होते, नहीं धूप नहिं छाँहीं ॥
असी सहस्र पैगम्बर नाहीं, सहस्र अठासी मूनी ।
चन्द्र सूर्य तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी ॥
वेद किताब स्मृत नहिं संजम, जीव नहीं परछाईं ।

बंग निमाज़ कलिमा नहिं होते, रामहु नाहिं खोदाई ॥
आदि अंत मन मध्य न होते, आतस पवन न पानी ।
लख चौरासी जीव जंतु नहिं, साखी सब्द न बानी ॥
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, आगे करहु विचारा ।
पूरन ब्रह्म कहाँते प्रगटे, किरतम किन्ह उपचारा ॥

शब्द २३

अवधू कुदरत की गति न्यारी ।
रंक निमाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी ॥
याते लौंग हरफ ना लागै, चंदन फूल न फूला ।
मच्छ सिकारी रमै जंगल में, सिंह समुद्रहि झूला ॥
रेंड़ रूख भये मलयागिर, चहुंदिस फूटी बासा ।
तीन लोग ब्रह्मांड खंड में, अंधरा देखै तमासा ॥
पंगा मेरु सुमेरु उलंघै, त्रिभुवन मुक्ता डोलै ।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रगासै, अनहद बानी बोलै ॥
अकासै बांधि पतालहि पठवै, सेख स्वर्ग पर राजै ।
कहैं कबीर राम है राजा, जो कछु करै सो छाजै ॥

शब्द २४

अवधू सो योगी गुरु मेरा, जो यह पद का करै निबेरा ॥
तरवर एक मूल बिनु ठाढ़ा, बिनु फूले फल लागा ।
साखा पत्र कछू नहिं वाके, अस्ट गँगन मुख जागा ॥
पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिभ्या गुन गावै ।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु होय लखावै ॥
पंछी खोज मीनको मारग, कहहिं कबिर दोउ भारी ।
अपरमपार पार पुरुखोतम, मूरत को बलिहारी ॥

शब्द २५

अवधू ओ तत रावल राता, नाचै बाजन बाजु बराता ॥
मौर के माथे दुलहा दीन्हा, अकथा जोरि कहाता ।

मंड़येके चारन समधी दीन्हा, पुत्र विवाहल माता ॥
दुलहिन लीपि चौक बैठारे, निरभय पद परभाता।
भाँ तै उलटि बराते खायो, भली बनी कुसलाता ॥
पानीग्रहन भयो भव मंडन, सुखमुनि सुरति समानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, बूझो पंडित ज्ञानी ॥

शब्द २६

कोई बिरले दोस्त हमारे, बहुत भाइ क्या कहिये।
गाठन भजन सँवारन आपै, राम रखे त्यौं रहिये ॥
आसन पवन योग श्रुति स्मृति, ज्योतिस पढ़ि बैलाना।
छौ दरसन पाखंड छानवे, एकल काहु न जाना ॥
आलम दुनी सकल फिर आये, एकल उहै न आना।
तजि करिगह सब जगत उचाये, मन मो मनन समाना ॥
कहैं कबीर योगि औ जंगम, फीकी उनकी आसा।
रामहि नाम रटै ज्यों चातृक, निश्चय भक्ति निवासा ॥

शब्द २७

भाई रे अदभुत रूप अनूप कथो है, कहौं तो को पतियाई।
जहँ जहँ देखो तहँ तहँ सोई, सब घट रहा समाई ॥
लखबिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींद बिना सुख सोवे।
जसबिनुज्योतिरूपबिनुआसिक, रतन बिहूना रीवै ॥
भ्रम बिनुगंजनमनिबिनु निरखै, रूप बिना बहु रूपा।
स्थितिबिनुसुरतिरहसबिनुआनंद, ऐसो चरित अनूपा ॥
कहैं कबीर जगतहरि मानिक, देखहु चित अनुमानी।
परिहरिलाभै लोभ कुटुंब तजि, भजहु न सारंग पानी ॥

शब्द २८

भाईरेगइया एक बिरंचिदियो है, भार अभर भो भाई।
नौ नारी को पानि पियतु है, तृखा न तेउ बुझाई ॥
कोठे बहत्तर औ लै। लावै, बज्र केंवार लगाई।

खूंटा गाड़ि डोरि दृढ़ बांधे, तइयो तोर पराई ॥
चार वृक्ष छव साखा वाके, पत्र अठारह भाई ।
एतिक लै गम कीहिस गइया, गइया अति हरहाई ॥
ई सातो औरो हैं साता, नौ औ चौदह भाई ।
एतिक गइया खाय बढ़ायो, गइया तहुँ न अघाई ॥
पुर तामें रहती है गइया, स्वेत सींग हैं भाई ।
अवरन बरन कछू नहिं वाके, खाद्य अखाद्यै खाई ॥
ब्रह्मा विस्नु खोजि लै आये, सिव सनकादिक भाई ।
सिद्ध अनंत वहि खोज परे हैं, गइया किनहु न पाई ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै ।
जो यह पद को गाय बिचारै, आगे होय निरबाहै ॥

शब्द २६

भाई रे नयन रसिक जो जागे ।
पारब्रह्म अबिगत अबिनासी, कैसेहु के मन लागै ॥
अमलो लोग खुमारी तृस्ना, कहुँ सँतोख न पावे ।
काम क्रोध दूनो मतवारे, माया भरि भरि प्यावे ॥
ब्रह्म कलार चढ़ाइन भट्ठी, लै इन्द्री रस चाखै ।
संगहि पोच ह्वै ज्ञान पुकारै, चतुरा होय सो नाखै ॥
संकठ सोच पोच यह कलिमा, बहुतक ब्याधि सरीरा ।
जहँवाँ धीर गंभीर अति निस्चल, तहँ उठि मिलहु कबीरा ॥

शब्द ३०

भाई रे दो जगदीस कहाँ से आये, कहु कवने बौराया ।
अल्ला राम करीमा केसव, हरि हजरत नाम धराया ॥
गहना एक कनक ते गहना, यामें भाव न दूजा ।
कहन सुनन को दुइ करि थापे, एक निमाज एक पूजा ॥
वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ।

को हिन्दू को तुर्क कहावैं, एक जिमी पर रहिये ॥
बेद किताब पढ़ै वे कुतुबा, वै मोलाना वै पाँड़े ।
बेगर बेगर नाम धराये, एक माटी के भाँड़े ॥
कहैं कबीर ये दूनो भूले, रामहि किनहु न पाया ।
वै खसी वैं गाय कटावै, बादहि जन्म गंवाया ॥

शब्द ३१

हंसा संसय छूरी कुहिया, गइया पिये बछरुवै दुहिया ॥
घर घर साउज खेलै अहेरा, पारथ ओटा लेई ।
पानी माँहि तलफि गई भुंभुरी, धूरि हिलोरा देई ॥
धरती बरसे बादर भीजै, भीट भये पैराऊँ ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बिंदा पाँऊँ ॥
जौलों कर डोलै पग चालै, तौलौं आस न कीजै ।
कहैं कबीर जेहि चलत न दीसै, तासु बचन क्या लीजै ॥

शब्द ३२

हंसा हो चित चेतु सबेरा, इन्ह परपंच करल बहुतेरा ॥
पाखंड रूप रचोइन तिरगुन, तेहि पाखंड भूलल संसारा ।
घर के खसम बधिक वै राजा, परजा क्या धौ करै बिचारा ॥
भक्ति न जाने भक्त कहावैं, तजि अमृत बिख कैलिन सारा।
आगे बड़े ऐसही बूड़े, तिनहु न मानल कहा हमारा॥
कहा हमार गांठि दृढ़ बाँधो, निसिबासर रहियो हुसियारा।
ये कलि गुरू बड़े परपंची, डारि ठगोरी सब जग मारा ॥
बेद किताब दुइ फंद पसारा, तेहि फंदे परु आप बिचारा ।
कहैं कबीर ते हंसन बिसरै, जेहिमा मिले छुड़ावनहारा ॥

शब्द ३३

(हंसा प्यारे) सरवर तजि कहँ जाय ।
जेहि सरवर बीच मोतिया चुगते, बहु बिधि केलि कराय ॥
सूखे ताल पुरइन जल छाड़े, कमल गये कुम्हिलाय ।

कहैं कबीरजो अबकी बिछुरे, बहुरि मिलो कब आय ॥

शब्द ३४

हरिजन हंस दसा लिय डोलैं, निर्मल नाम चुनि चुनि बोलैं ॥
मुक्ताहल लिये चोंच लोभावैं, मौन रहै कि हरि जस गावै ।
मान सरोवर तट के बासी, राम चरन चित अंत उदासी ॥
कागकुबुद्धि निकट नहिं आवै, प्रतिदिन हंसा दर्सन पावै ।
नीर छीर का करै निबेरा, कहैं कबीर सोई जन मेरा ॥

शब्द ३५

हरिमोरपीवमैं रामकी बहुरिया, राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया ।
हरिमोर रहटामैं रतनपिउरिया, हरिकोनामलैकततीबहुरिया ॥
मास तागा बरख दिन कुकुरी, लोग कहैं भल कातल बपुरी ।
कहैं कबीर सूत भल काता, चरखा नहोय मुक्तिकरदाता ॥

शब्द ३६

हरि ठग जगत ठगौरी लाई, हरिकेवियोगकस जियहु रेभाई ॥
कोकाकोपुरुषकवनकाकोनारी, अकथकथायमदृष्टिपसारी ।
कोकाकोपुत्रकवनकाको बापा, कोरे मरैको सहै संतापा ॥
ठगि ठगिमूल सबन को लीन्हा, रामठगौरीकाहुन चीन्हा ।
कहैं कबीर ठग सो मन माना, गइठगौरीजबठगपहिचाना ॥

शब्द ३७

हरि ठगठगत सकलजग डोलै, गवनकरतमोसेमुखहुनबोलै ॥
बालापन के मीत हमारे, हमकहँ तजि कहँ चलेहु सकारे ।
तुमहिं पुरुष मैं नारि तुम्हारी, तुम्हरिचालपाहनहूँतेभारी ॥
माटी की देहपवन कासरीरा, हरि ठगठग सो डरे कबीरा ॥

शब्द ३८

हरि बिनु भरम बिगुर बिनु गन्दा ।
जहँ जहँ गयेउ अपन पौ खोयेउ, तेहिफंदे बहु फंदा ॥
योगी कहै योग है नीका, दुतिया और न भाई ।

घुंडित मुंडित मौनजटा धारो, तिनिहुँ कहाँ सिधिपाई॥
ज्ञानी गुनी सूर कबि दाता, ई जो कहैं बड़ हमहीं।
जहाँ से उपजे तहाँ समाने, छूटि गयल सब तबहीं॥
बाँये दहिने तेजु बिकारा, निजुकै हरिपद गहिया।
कहैं कबीर गूंगे गुर खइया, पूछे से क्या कहिया॥

शब्द ३९

ऐसो हरिसो जगत लड़तु है, पांडुर कतहूं गरुड़ धरतु है॥
मूस बिलाई कैसन हेतू, जंबुक करै केहरि सो खेतू।
अचरज यक देखो संसारा, सोनहा खेत कुंजर असवारा॥
कहैं कबीर सुनो संतो भाई, इहै संधि काहु बिरलै पाई।

शब्द ४०

पंडित बाद बदै सो झूठा।
रामके कहे जगत गति पावै, खांड़ कहे मुख मीठा॥
पावक कहे पांव जो डाहै, जल कहे तृखा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भाजे, तो दुनिया तरजाई॥
नरके संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहिं जानै।
जो कबहीं उड़िजाय जंगल को, तौ हरि सुरति न आनै॥
बिनु देखे बिनु दरस परस बिनु, नाम लिये का होई।
धनके कहे धनिक जो होवै, निर्मल रहै न कोई॥
सांची प्रीति बिखय माया सो, हरि भक्तन को हांसी।
कहैं कबीर एक राम भजे बिनु, बांधे जमपुर जासी॥

शब्द ४१

पंडित देखहु मनमें जानी।
कहु धौं छूति कहाँ से उपजी, तबहिं छूति तुम मानी॥
नादे बिंदु रुधिर के संगे, घरही में घट सपनै।
अस्ट कमल होय पुहुमी आया, छूति कहाँ से उपजै॥
लख चौरासी बहुत बासना, सो सब सरि भै माटी।

एकहि पाट सकल बैठाये, छूति लेत धौ काटी ॥
छूतिहि जेवन छूतहि अचवन, छूतिहि जग उपजाया ।
कहैं कबीर ते छूति विविर्जित, जाके संग न माया ॥

शब्द ४२

पंडित सोधि कहो समुझाई, जाते आवागमन नसाई ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष कहु, कवन दिसा बसे भाई ।
उतर कि दक्षिन पूर्व कीपच्छिम, स्वर्ग पताल कि माहीं ॥
बिना गोपाल ठौरनहिं कतहूँ, नरक जात धौ काहीं ।
अनजाने को स्वर्ग नरक है, हरि जाने को नाहीं ॥
जेहि डरको सब लोग डरत हैं, सो डर हमरे नाहीं ।
पाप पुन्य की संका नाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जहाँ का पद हैतहाँ तमाहीं ।

शब्द ४३

पंडित मिथ्या करहु बिचारा, नावहांसृस्टिनसिरजनहारा ॥
थूल अस्थूल पवन नहिं पावक, रवि ससि धरनि न नीरा ।
ज्योति स्वरूपी काल न जहँवाँ, बचन न आहि सरीरा ॥
धर्म कर्म कछु नाहीं उहँवा, ना वहां मन्त्र न पूजा ।
संयम सहित भावनहिं जहँवाँ, सोधौ एक कि दूजा ॥
गोरख राम एकौ नहिं उहँवां, न वहाँ बेद बिचारा ।
हरि हर ब्रह्मा नहिं सिव सक्ती, तीर्थउ नाहिं अचारा ॥
माय बाप गुरु जहँवां नाहीं, सो दूजा कि अकेला ।
कहैं कबीर जो अबकी बूझै, सोई गुरु हम चेला ॥

शब्द ४४

बूझहु पंडित करहु बिचारा, पुरुष अहै की नारी ॥
ब्राह्मन के घर ब्रह्मानी होती, योगी के घर चेली ।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुर्किनी, कलिमें रहत अकेली ॥
बर नहिं बरि ब्याह नहिं करई, पुत्र जनावन हारी ।

कारे मूड़ को एकहु न छांड़ी, अजहूँ आदि कुमारी ॥
मैके रहै न जाइ सासुरे, सांई संग न सोवै ।
कहैं कबीर वे जुग जुग जीवै, जाति पांति कुल खोवै ॥

शब्द ४५

कौन मुवा कहु पंडित जना, सो समुझाय कहहु मोहि सना ॥
मूये ब्रह्मा विस्नु महेसू, पार्वती सुत मुये गनेसू ।
मूये चंद्र मुये रवि केता, मूये मनुमत जिन बांधल सेता ॥
मुये कृस्न मूये कर्तारा, एक न मुवा जो सिरजन हारा ।
कहैं कबीर मुवा नहिं सोई, जाको आवागमन न होई ॥

शब्द ४६

पंडित एक अचरज बड़ होई ।
एक मरि मुये अन्न नहिं खाई, एक मरि सीझै रसोई ॥
करि अस्नान देवन की पूजा, नवगुन कांध जनेऊ ।
हँड़िया हाड़ हाड़ थारी मुख, अबखट कर्म बनेऊ ॥
धर्म करै तह जीव बधत है, अकरम करे मोरे भाई ।
जो तोहराको ब्राह्मन कहिये, तो काको कहिये कसाई ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भर्म भूलि दुनियाई ।
अपरमपार पार पुरुखोतम, या गति बिरलै पाई ॥

शब्द ४७

पांड़े बूझि पियहु तुम पानी ।
जेहि मटिया के घर मैं बैठे, तामैं सृस्टि समानी ॥
छप्पन कोटि जदौ जहँ भोजै, मुनि-जन सहस अठासी ।
पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भो माटी ॥
मच्छ कच्छ घरियार वियाने, रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पसु मानुख सब सरिया ॥
हाड़ झरी झरि गूद गलीगल, दूध कहाँ ते आया ।
सो ले पांड़े जेवन बैठे, मटियहि छूति लगाया ॥

बेद किताब छाड़ देव पाँड़े, ई सब मन के भर्मा ।
कहैं कबीर सुनो हो पांड़ें, ई सब तुम्हरे कर्मा ॥

शब्द ४८

पंडित देखहु हृदय बिचारी, को पुरुखा को नारी ॥
सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा ।
वाको नाम काह कहि लीजै, वाके बरन न रूपा ॥
तैं मैं क्या करसि नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा ।
राम खुदाय सक्ति सिव एकै, कहु धौ काहि निबेरा ॥
बेद पुरान किताब कुराना, नाना भाँति बखाना ।
हिंदू तुरुक जैनी औ योगी, ये कल काहु न जाना ॥
छौ दरसन में जो परवाना, तासु नाम मन माना ।
कहैं कबीर हमहीं पै बौरे, ये सब खलक सयाना ॥

शब्द ४९

बूझ बूझ पंडित पद निर्बान, साँझ परे कहँवा बसे भान ॥
ऊँच नीच पर्बत ढेला न ईंट, बिनु गायन तहँवा उठे गीत।
ओसन प्यास मंदिर नहिं जहँवां, सहस्रो धेनु दुहावे तहवाँ ॥
नित्त अमावस नित संक्रांत, नित नित नवग्रह बैठे पाँत ।
मैं तोहि पूछौं पंडित जना, हृदया ग्रहन लागु केहि खना ॥
कहैं कबीर इतनो नहिं जान, कौन सब्द गुरु लागा कान ।

शब्द ५०

बूझ बूझ पंडित बिरवा न होय, आधा बसे पुरुख आधा बसे जोय ॥
बिरवा एक सकल संसारा, स्वर्ग सीस जर गई पताला ।
बारह पखुरी चौबिस पाता, घन बरोह लागे चहुँ पासा ॥
फूलै न फलै वाकी है बानी, रैन दिवस बिकार चुवै पानी ।
कहैं कबीर कछु अछलो न तहिया, हरि बिरवा प्रतिपालीन जहिया ॥

शब्द ५१

बूझबूझ पंडित मन चितलाय, कबहुँ भरल है कबहुँ सुखाय॥
खन ऊबै खन डूबै खन औगाह, रतन न मिलै पावै नहिं थाह।
नदिया नहीं समद बहै नीर, मच्छ न मरै केवट रहै तीर॥
पोहकर नहि बाँधलतहां घाट, पुरइन नहीं कमल महँ बाट।
कहैं कबीर यह मन का धोख, बैठा रहै चलन चहै चोख॥

शब्द ५२

बूझ लीजै ब्रह्म ज्ञानी।

घोरि घोरि बरखा बरसावै, परिया बूँद न पानी॥
चिंउटी के पग हस्ती बाँधे, छेरी बीगर खावै।
उदधि मांह ते निकरी छांछरी, चौड़े ग्राह करावै॥
मेंढुक सर्प रहत एक संगे, बिलइया स्वान बियाई।
नित उठि सिंह सियार सो डरपे, अद्भुत कथो न जाई॥
कौने संसय मृगा बन घेरे, पारध बाना मेले।
उदधि-भूप तें तरवर डाहै, मच्छ अहेरा खेले॥
कहैं कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को यह ज्ञानहि बूझै।
बिन पंखे उड़ि जाइ अकासे, जीवहि मरन न सूझै॥

शब्द ५३

वह बिरवा चीन्हे जो कोई, जरा मरन रहित तन होई॥
बिरवा एक सकल संसारा, पेड़ एक फूटल तिनि डारा।
मध्यकी डार चार फल लागा, शाखा पत्रगिनै को वाका॥
बेलि एकत्रिभुवन लपटानी, बाँधे ते छूटहि नहिं ज्ञानी।
कहैं कबीर हम जातपुकारा, पंडित होयसो लेइ बिचारा॥

शब्द ५४

साँई के संग सासुर आई।

संग न सूती स्वाद न मानी, गयो जोबन सपने की नाईं॥

जना चारि मिलि लगन सुधाये, जना पाँच मिलि माँड़ा छाये।
सखी सहेली मंगल गावैं, दुख सुख माथे हलदि चढ़ावैं॥
नाना रूप परी मन भाँवरि, गाँठि जोरि भाई पति आई।
अर्घा दे ले चली सुआसनि, चौके राँड़ भई संग साई॥
भयो बिवाह चली बिनु दुलहा, बाट जात समधी मुसुकाई।
कहैं कबीर हम गौने जैबे, तरब कंत लै तूर बजैबे॥

शब्द ५५

नर को ढाढ़स देखहु आई, कछु अकथ कथा है भाई॥
सिंह सार्दुल एक हर जोतिन, सीकस बोइन धाना।
बनको भलुइया चाखुर फेरैं, छागर भये किसाना॥
छेरी बाघहि ब्याह होत है, मंगल गावै गाई।
बनके रोझ धरि दाइज दीन्हो, गो लोकन्दे जाई॥
कागा कापड़ धोवन लागे, बकुला कीपहि दाँता।
माखी मूड़ मुड़ावन लागी, हमहूं जाब बराता॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै।
सोई पंडित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै॥

शब्द ५६

नर को नहिं परतीत हमारी।
झूठा बनिज कियो झूठे सो, पूंजी सबन मिलि हारी॥
खट दरसन मिलि पंथ चलायो, तिर देवा अधिकारी।
राजा देस बड़ो परपंची, रइयत रहत उजारी॥
इतते उत उतते इत रहहीं, जम की सांट सवारी।
ज्यों कपि डोर बांध बाजीगर, अपनी खुसी परारी॥
इहै पेड़ उत्पत्ति परलय का, बिखया सबै बिकारी।
जैसे स्वान अपावन राजी, त्यों लागी संसारी॥

कहै कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को मानै बात हमारी।
अजहूँ लेउँ छुड़ाय कालसों, जो करै सुरति सँभारी॥

शब्द ५७

नाहरि भजसि न आदति छूटी।
सब्दहि समुझि सुधारत नाहीं, आँधर भये हियेहु की फूटी॥
पानी महँ पखान को रेखा, ठोंकत उठै भभूका।
सहस्त्र घड़ा नित उठि जलढारै, फिर सूखे का सूखा॥
सेतहि सेत सेत अंग भो, सेन बढ़ी अधिकाई।
जो सनिपात रोगिया मारै, सो साधन सिध पाई॥
अनहद कहत कहत जग बिनसे, अनहद सृस्टि समानी।
निकट पयाना जमपुर धावै, बोलै एकै बानी॥
सतगुरु मिलै बहुत सुख लहिये, सतगुरु सब्द सुधारै।
कहैं कबीर ते सदा सुखी हैं, जो यह पदहि बिचारै॥

शब्द ५८

नरहरि लागी दव बिनु इँधन, मिलै न बुझावन हारा।
मैं जानो तोही से ब्यापै, जरत सकल संसारा॥
पानी माहि अग्नि को अंकुर, जरत बुझावै पानी।
एक न जरै जरै नव नारी, जुक्ति न काहू जानी॥
सहर जरै पहरू सुख सोवै, कहे कुसल घर मेरा।
पुरिया जरे वस्तु निज उबरै, बिकल राम रंग तेरा॥
कुबजा पुरुख गले एक लागा, पूजि न मन के सरधा।
करत बिचार जन्म गो खीसै, ई तन रहत असाधा॥
जानि बूझि जो कपट करतहै, तेहि अस मंद न कोई।
कहैं कबीर तेहि मूढ़ को, भला कवन बिधि होई॥

शब्द ५९

माया महाठगिनि हम जानी।
तिर्गुन फाँस लिये कर डोले, बोलै मधुरी बानी॥

केसव के कमला हो बैठी, सिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरति हो बैठी, तीरथहू में पानी॥
योगी के योगिन हो बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा हो बैठी, काहु के कौड़ी कानी॥
भक्तों के भक्तिनि हो बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, ई सब अकथ कहानी॥

शब्द ६०

माया मोहहि मोहित कीन्हा, ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा॥
जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना।
सब्द गुरू उपदेस दियो ते, छाँड़ेउ परम निधाना॥
ज्योतिहि देख पतंग हूल से, पसू न पेखै आगी।
काल फांस नर मुग्ध न चेतहु, कनक कामिनी लागी॥
सैयद सेख किताब नीरखै, पंडित सास्त्र बिचारै।
सतगुरु के उपदेस बिना ते, जानि के जीवहि मारै॥
कहहु बिचार बिकार परि हरहु, तरन तारने सोई।
कहैं कबीर भगवंत भजो नर, दुतिया और न कोई॥

शब्द ६१

मरिहो रे तन क्या ले करिहो, प्राण छुटे बाहर ले धरिहो॥
कायाबिगुरचनअनबनि बाटी, कोइ जारै कोइ गाड़ैमाटी।
हिन्दु ले जारै तुर्क ले गाड़े, यहिबिधिअंतदुनोघरछाँड़े॥
कर्म फांस जम जाल पसारा, जस धीमरमछरी गहि मारा।
राम बिना नर होइ हो कैसा, बाट माँझ गोबरौरा जैसा॥
कहैं कबीर पाछे पछतैहो, या घरसे जब वा घर जैहो।

शब्द ६२

माई मैं दोनों कुल उजियारी।
बारह खसम नैहरै खायों, सोरह खायो ससुरारी॥

सासु ननद पटिया मिलि बँधलौं, ससुरहि परलौं गारी ।
जारो माँग मैं तासु नारि की, सरिवर रचल हमारी ॥
जना पांच कोखिया मिलि रखलों, और दुई औ चारी ।
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी ॥
सहजहि अपुरो सेज बिछावल, सुतलौं पाँव पसारी ।
आवों न जावों मरों नहिं जीवों, साहेब मेटल गारी ॥
एक नाम मैं निजकै गहिलों, तो छूटल संसारी ।
एक नाम बंदेका लेखों, कहैं कबीर पुकारी ॥

शब्द ६३

मैं कासे कहौं को सुनै पति आय, फुलवा के छुवत भँवर मरि जाय ॥
गगन मंदिल बिच फूल एक फूला, तर भौ डार उपर भो मूला ।
जोतिये न बोइये सिंचिये न सोई, डार पात बिनु फूल एक होई ॥
फुल भल फुलल मलिनि भल गांथल, फुलवा बिनसि गौ भँवर निरासल।
कहैं कबीर सुनो संतो भाई, पंडित जन फुल रहल लोभाई ॥

शब्द ६४

जोलहा बीनहु हो हरिनामा, जाके सुर नर मुनि धरैं ध्याना॥
ताना तनै को अहुठा लीन्हा, चरखी चारो बेदा ।
सर खूंटी एक राम नरायन, पूरन प्रगटे कामा ॥
भवसागर यक कठवत कीन्हा, तामें मांड़ी साना ।
माड़ी का तन माड़ि रहा है, माड़ी बिरले जाना ॥
चांद सूर्य दुइ गोड़ा कीन्हा, मांझ दीप कियो माँझा ।
त्रिभुवन नाथ जो माँजन लागे, स्याम मरोरिया दीन्हा ॥
पाई के जब भरना लीन्हा, वै बांधन को रामा ।
वा भरि तिहु लोकहि बांधे, कोइ न रहत उबाना ॥
तीनि लोक एक करि गह कीन्हा, दिगमग कीन्हो ताना ।
आदि पुरुख बैठावन बैठे, कबिरा ज्योति समाना ॥

शब्द ६५

जोगिया फिर गयो नगर मझारी, जाय समान पाँच जहँ नारी।
गयउ देसंतर कोइ न बतावै, जोगिया बहुरि गुफा नहिं आवै॥
जरि गयो कंथ ध्वजा गै टूटी, भजिगौ डंड खपर गै फूटी।
कहैं कबीर ई कलि है खोटी, जो करवा सो निकरै टोंटी॥

शब्द ६६

जोगिया के नगर बसो मत कोई, जो रे बसै सो जोगिया होई॥
ये जोगिया के उलटा ज्ञाना, कारा चोला नाहीं म्याना।
प्रगट सो कंथा गुप्ता धारी, तामें मूल सजीवन भारी॥
वो जोगिया की जुक्ति जो बूझै, राम रमै तेहि त्रिभुवन सूझै।
अमृत बेली छिन छिन पीवै, कहें कबीर जुग जुग जीवै॥

शब्द ६७

जो पै बीजरूप भगवाना, तो पंडित का पूछो आना।
कहँ मन कहाँ बुद्धि हंकारा, सतरज तमगुन तीन प्रकारा॥
बिख अमृत फल फलै अनेका, बहुधा बेद कहै तरबेका।
कहैं कबीर तैं मैं क्या जानो, को धौ छूटलको अरुझानो॥

शब्द ६८

जो चरखा जरि जाय, बढ़ैया ना मरै।
मै कातों सूत हजार, चरखुला जिन जरै॥
बाबा ब्याह कराय दे, अच्छा बरहि ताकहु।
जौ लों अच्छा बर न मिलै, तौ लों तूं ही ब्याहु॥
प्रथमै नगर पहुंचते, परि गौ सोक संताप।
एक अचम्भो हमने देखा, जो बिटिया ब्याहल बाप॥
समधी के घर लमधी आये, आये बहु के भाय।
गोड़े चूल्हा देहिदे, चरखा दियो दृढ़ाय॥
देवलोक मरि जायँगे, एक न मरै बढ़ाय।
यह मन रंजन कारने, चरखा दियो दृढ़ाय॥

कहैं कबीर सुनो हो संतो, चरखा लखै न कोय।
जो यह चरखो लखि परे, तो आवागमन न होय॥

शब्द ६९

जंत्री जंत्र अनूपम बाजै, वाके अस्टगगन मुख गाजै॥
तूही बाजै तूही गाजै, तुही लिये कर डोलै।
एक सब्द में राग छतीसौ, अनहद बानी बोलै॥
मुखके नाल स्रवन के तुंबा, सतगुरु साज बनाया।
जिभ्या तार नासिका चरई, माया मोम लगाया॥
गगनमँदिलमेंभयोउजियारा, उलटा फेर लगाया।
कहैं कबिर जनभये बिबेकी, जिन्ह जंत्री मन लाया॥

शब्द ७०

जसमासुपसुकीतसमासुनरकी, रुधिर रुधिर यक सारा जी।
पसुकी मास भच्छे सब कोई, नरहि न भच्छे सियारा जी॥
ब्रह्म कुलाल मेदिनी भइया, उपजि बिनसि कितगइयाजी।
मासु मछरिया तैं पै खइया, जो खेतन में बोइया जी॥
माटी के करि देवी देवा, काटि काटि जिव देइया जी।
जो तोहरी है सांचा देवी, खेत चरत क्यों न लेइया जी॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, राम नाम नित लेइयाजी।
जो कछु कियेउ जिभ्या के स्वारथ, बदल पराया देइयाजी॥

शब्द ७१

चातृक कहाँ पुकारै दूरी, सो जल जगत रहा भरपूरी।
जेहि जलनाद बिंदु को भेदा, खट कर्म सहित उपानेउ बेदा॥
जेहि जल जीव सीवकोबासा, सोजलधरनि अमरपरगासा।
जेहिजलउपजल सकलसरीरा, सो जलभेद न जानु कबीरा॥

शब्द ७२

चलहु क्या टेढो टेढो टेढो।
दसहूँ द्वार नरक भरि बूड़े, तू गंधो को बेड़ो॥

फूटे नैन हृदय नहिं सूझै, मति एकै नहिं जानी।
काम क्रोध तृस्ना के माते, बूड़ि मुये बिनु पानी॥
जो जारे तनहोय भस्म धुरि, गाड़े कीटहि खाई।
सूकर स्वान काग का भोजन, तनका इहै बड़ाई॥
चेति न देख मुग्ध नर बौरे, तोहते काल न दूरी।
कोटिक जतन करो यह तनकी, अंत अवस्था धूरी॥
बालू के घरवा मैं बैठे, चेतत नाहिं अयाना।
कहैं कबिर एक रामभजे बिनु, बूड़े बहुत सयाना॥

शब्द ७३

फिरहु क्या फूले फूले फूले।
जब दस मास ऊर्ध मुख होते, सो दिन काहे को भूले॥
जो मांखी सहते नहिं बीहुर, सोचि सोचि धन कीन्हा।
मूये पीछे लेहु लेहु करि, भूत रहन नहिं दीन्हा॥
देहरि ले बर नारि संग है, आगे संग सुहेला।
मृतक थान ले संग खटोला, फिर पुनि हंस अकेला॥
जारे देह भस्म हो जाई, गाड़े माटी खाई।
कांचे कुंभ उदक जो भरिया, तन की इहै बड़ाई॥
राम न रमसि मोह के माते, परेहु काल बस कूंवा।
कहैं कबिर नर आपु बंधायो, ज्यों ललनी भ्रम सूवा॥

शब्द ७४

ऐसो जोगिया है बदकर्मी, जाकेगगनअकासनधरनी॥
हाथ न वाके पाँव न वाके, रूप न वाके रेखा।
बिना हाट हटवाई लावै, करै बयाई लेखा॥
कर्म न वाके धर्म न वाके, जोग न वाके जुक्ती।
सींगी पात्र कछू नहिं वाके, काहे को मांगे भुक्ती॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना, मैं तोहि माहि समाना।

उत्पति परलय एकहु न होते, तब कहु कौन को ध्याना ॥
जोगियाने एक ठाढ़ किया है, राम रहा भर पूरी।
औषध मूल कछू नहिं वाके, राम सजीवन मूरी ॥
नटवट बाजी पेखनी पेखै, बाजीगर की बाजी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भई सो राज बिराजी ॥

शब्द ७५

ऐसो भर्म बिगुर्चन भारी।
बेद बिताब दीन औ दोजख, को पुरुखा को नारी ॥
माटी का घट साज बनाया, नादे बिंदु समाना।
घट बिनसे क्या नाम धरोगे, अहमक खोज भुलाना ॥
एके त्वचा हाड़ मल मूत्रा, एक रुधिर एक गूदा।
एक बूंद से सृष्टि रचो है, को ब्राह्मन को सूदा ॥
रजोगुन ब्रह्मा तमोगुन संकर, सतोगुनी हरि होई।
कहैं कबीर राम रमि रहिये, हिन्दू तुर्क न कोई ॥

शब्द ७६

अपुनपौ आपही बिसरो।
जैसे स्वान कांच मंदिर में, भर्मित भूंकि मरो।
ज्यों केहरिबपु निरखि कूपजल, प्रतिमा देखि परो।
वैसहि मदगजफटिकसिलापर, दसनन आनि अरो।
मर्कट मूठो स्वाद न बिहुरे, घर घर रटत फिरो
कहैं कबीर ललनी के सुवना, तोहि कवने पकरो।

शब्द ७७

आपन आस किये बहुतेरा, काहु न मर्म पावलहरिकेरा
इंद्री कहां करे बिस्राम, सो कहँ गयेजे कहते राम।
सो कहँ गये जो होत सयाना, होयमृतक वह पदहि समाना
रमानँद रामरस माते, कहैं कबिर हम कहिकहिथाके।

शब्द ७८

अब हम जानिया हो हरिबाजी का खेल ।
डंक बजाय देखाय तमासा, बहुरिके लेत सकेला ॥
हरिबाजी सुर नरमुनि जहंड़े, माया चाटक लाया ।
घर में डारि सकल भर्माया, हृदया ज्ञान न आया ॥
बाजी झूठ बाजीगर साँचा, साधुन की मति ऐसी ।
कहैं कबीर जिन जैसी समुझो, ताको मति भई तैसी ॥

शब्द ७९

कहहु हो अम्मर कासो लागा, चेतनहार सो चेतु सुभागा ।
अम्मर मध्ये दीसै तारा, एक चेतन एक चितावन हारा ॥
जो खोजो सो उहवां नाहीं, सो तो आहि अमरपद मांहीं ।
कहैं कबीर पद बूझै सोई, मुख हृदया जाके एक होई ॥

शब्द ८०

बंदे करले आपु निबेरा ।
आपु जियत लखु आपु ठौर करु, मुये कहां घर तेरा ॥
यह औसर नहिं चेतिहौ प्रानी, अंत कोई नहिं तेरा ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, कठिन काल का घेरा ॥

शब्द ८१

रहहु ररा ममाकी भांति हो, सब संत उधारन चूनरी ॥
बालमीक बन बोइया, चुनि लीन्हा सुकदेव ।
कर्म बिनौरा होय रहा, सुत काते जयदेव ॥
तीनलोक ताना तनो, ब्रह्मा बिस्नु महेस ।
नाम लेत मुनि हारिया, सुरपति सकल नरेस ॥
बिस्नु जिभ्या गुन गाइया, बिनु बस्ती का देस ।
सूने घर का पाहुना, तासो लाइनि हेत ॥
चार बेद कैंड़ा कियो, निराकार कियो रास ।
बिनै कबीरा चूनरी, मै नहिं बांधल बारि ॥

शब्द ८२

तुम एहि बिधि समुझो लोई, गोरी मुख मंदिर बाजै ॥
एक सगुन खट चक्रहि बेधै, बिन बृख कोल्हू माचै।
ब्रह्महि पकरि अग्नि मा होमै, मच्छ गगन चढ़ि गाजा ॥
नित्त अमावस नित्त ग्रहन है, राहु ग्रास नित दीजै।
सुर भी भच्छन करत बेद मुख, घन बर्सै तन छीजै ॥
त्रिकुटि कुंडल मधे मंदिर बाजै, औ घट अंमर छीजै।
पुहुमी का पनिया अंमर भरिया, ई अचरज को बूझै ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, योगिन सिद्धि पियारी।
सदा रहै सुख संजम अपनी, बसुधा आदि कुमारी ॥

शब्द ८३

भूला वे अहमक नादाना, जिन्ह हरदम रामहिं ना जाना॥
बरबस आनि के गाय पछारिन, गला काटि जिव आप लिआ।
जिअत जीव मुर्दा करि डारा, तिसको कहत हलाल हुआ॥
जाहि मासु को पाक कहत हो, ताकी उत्पति सुन भाई।
रज बीज से माँस उपाने, माँस न पाक जो तुम खाई॥
अपना दोस कहत नहिं अहमक, कहत हमारे बड़न किया।
उसकी खून तुम्हारी गर्दन, जिन्ह तुमको उपदेस दिया ॥
स्याही गई सपेदी आई, दिल सपेद अजहूँ न हुआ।
रोजा बाँग निमाज क्या कीजे, हुजरे भीतर पैठि मुआ ॥
पंडित बेद पुरान पढ़ै सब, मुल्ला पढ़ै कुराना।
कहैं कबीर दोउ गए नरक में, जिन्ह हरदम रामहिं ना जाना॥

शब्द ८४

काजी तुम कौन किताब बखानी।

झंखत बकत रहो निसिबासर, मति एको नहिं जानी ॥
सक्ति अनुमाने सुनत करत हो, मैं न बदोंगा भाई।
जो खोदाय तेरा सुनति करत है, आपहि काटि न आई ॥

सुनति कराय तुर्क जो होना, औरत को क्या कहिये ।
अर्ध सरीरी नारि बखानी, ताते हिंदुइनि रहिये ॥
पहिर जनेउ जोब्राह्मन होना, मेहरि क्या पहिराया ।
वो जन्म की सुद्रिन परसै, तुम पांड़े क्यों खाया ॥
हिंदू तुर्क कहांते आया, किन्ह यह राह चलाई ।
दिलमें खोज देख खुजादे, भिस्त कहां से आई ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जोर करतु है भाई ।
कबिरन ओट राम की पकरी, अंत चले पछहारी ॥

शब्द ८५

भूला लोग कहे घर मेरा ।
जो घरवा में भूला डोलै, सो घर नाहिं तुम्हारा ॥
हाथी घोड़ा बैल बहानू, संग्रह कियो घनेरा ।
बस्ती में से दिया खदेरा, जंगल कियो बसेरा ॥
गांठि बांधि खर्च नहिं पठवो, बहुरि न कियो फेरा ।
बीबी बाहर हरम महल में, बीच मियां का डेरा ॥
नौमन सूत अरुझै नहिं सरुझै, जन्म जन्म अरुझेरा ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, यह पद करहु निबेरा ॥

शब्द ८६

कबीरा तेरो घर कंदला में, यह जग रहत भुलाना ।
गुरुकी कही करत नहिं कोई, अमहल महल दिवाना ॥
सकल ब्रह्म में हंस कबीरा, कागा चोंच पसारा ।
मनमथ कर्म धरै सब देही, नादबिंदु बिस्तारा ॥
सकल कबीरा बोलै बीरा, पानी में घर छाया ।
अनंत लूट होत घट भीतर, घट का मर्म न पाया ॥
कामिनी रूपी सकल कबीरा, मृगा चरिंदा होई ।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके, पकड़ि सके नहिं कोई ॥

ब्रह्मा बरुन कुबेर पुरन्दर, पापा औ प्रहलादा ।
हिरनाकुस नखउदर बिदारा, तिनहुं को काल न राखा ॥
गोरख ऐसे दत्त दिगम्बर, नामदेव जयदेव दासा ।
तिनकी खबर कहत नहिं कोई, कहाँ किये। है बासा ॥
चौपर खेल होत घट भीतर, जन्म का पासा डारा ।
दम दम की कोइ खबर न जानै, करि न सकै निरुआरा ॥
चारि दिग महिमंडल रचो है, रूम सूम बिच डिल्ली ।
तेहि ऊपर कछु अजब तमासा, मारो है जम किल्ली ॥
सकलअवतार जासु महिमंडल, अनंत खड़ो करजोरे ।
अदभुत अगम औगाह रचो है, ई सम सोभा तेरे ॥
सकल कबीर बोलै बीरा, अजहूं हो हुसियारा ।
कहैं कबीर गुरु सिकली दर्पन, हरदम करहु पुकारा ॥

शब्द ८७

कबीरा तेरो बन कंदला में, मानु अहेरा खेलै ।
बफुआरी आनंद मीरगा, रुचि रुचि सर मेलै ॥
चेतत राबल पावन खेड़ा, सहजै मूलहि बांधै ।
ध्यान धनुख धरि ज्ञानवान बन, जोग सार सर साधै ॥
खटचक्र बेधि कमल बेधो, जबजाय उजियारी कीन्हा ।
काम क्रोध मद लोभ मोह को, हांकि के सावज दीन्हा ॥
गगन मध्य रोकिन सो द्वारा, जहाँ दिवस नहिं राती ।
दास कबीरा जाय पहूंचे, बिछुरे संग के साथी ॥

शब्द ८८

सावजन होई भाईसावजनहोई, वाकीमासु भखै सब कोई ॥
सावज एक सकल संसारा, अविगत वाकी बाता ।
पेट फारि जो देखिए रे भाई, आहि करेज न आता ॥
ऐसी वाकी मासु रे भाई, पल पल मासु बिकाई ॥

हाड़ गोड़ लै घूर पँवारिन, आगि धुंवा नहिं खाई ॥
सिर औ सींग कछू नहिं वाके, पूंछ कहां वह पावे।
सब पंडित मिलि धंधे परिया, कबिरा बनौरा गावै॥

शब्द ८९

सुभागे केहि कारन लोभ लागे, रतन जन्म खोयो।
पूरब जन्म भूम्य के कारन, बीज काहे को बोयो॥
बुन्द से जिन्ह पिंड सजायो, अग्निहि कुंड रहायो।
जब दसमास मता के गर्भे, बहुरि के लागल माया॥
बारहु ते पुनि बृद्ध हुवा जब, होनिहार सो होया।
जब जम ऐहैं बांधि चलै हैं, नैन भरी भरि रोया॥
जीवन की जलि आस राखहू, काल धरे हैं स्वासा।
बाजी है संसार कबीरा, चित्त चेति डारो फांसा॥

शब्द ९०

संत महंतो सुमिरो सोई, जो काल फांस ते बांचा होई॥
दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना, मिथ्या स्वाद भुलाना।
सलिलको मथिकै घृतको काढ़िनि, ताहि समाधि समाना॥
गोरख पवन राखि नहिं जाना, जोग जुक्ति अनुमाना।
ऋद्धि सिद्धि संजम बहुतेरा, पार ब्रह्म नहिं जाना॥
बसिस्ट स्रेस्ठ विद्या सम्पूरन, राम ऐसे सिख साखा।
जाहि राम को कर्त्ता कहिये, तिनहु को काल न राखा॥
हिंदू कहे हमहिं लै जारों, तुर्क कहे मोर पीर।
दोउ आय दीनन में झगरैं, देखहिं हंस कबीर॥

शब्द ९१

तन धरि सुखिया काहु न देखा, जो देखा सो दुखिया।
उदय अस्त की बात कहत हैं, सब का किया बिबेका॥
बाटे बाटे सब कोइ दुखिया, क्या गिरही बैरागी।
सुकाचार्य दुखही के कारन, गर्भहि माया त्यागी॥

जोगी जंगम ते अति दुखिया, तापस के दुख दूना ।
आसा तृस्ना सब घट व्यापै, कोई महल नहिं सूना ॥
सांच कहों तो सब जग खीजै, झूठ कहा नहिं जाई ।
कहै कबीर तेई भये दुखिया, जिन यह राह चलाई ॥

शब्द ६२

तामन को चीन्हो मोरे भाई, तन छूटे मन कहां समाई ॥
सनक सनंदन जयदेव नामा, भक्ति हेतु मन उनहुं न जाना ।
अम्बरीख प्रहलाद सुदामा, भक्ति सहित मन उनहुं न जाना ॥
भरथरि गोरख गोपीचंदा, तामन मिलि मिलि कियो अनंदा ।
जा मनको कोइ जानु न भेवा, ता मन मगन भये सुकदेवा ॥
सिव सनकादिक नारद सेखा, तनके भीतर मन उनहुं न पेखा ।
एकल निरंजन सकल सरीरा, तामें भ्रमि भ्रमि रहल कबीरा ॥

शब्द ६३

बाबू ऐसा है संसार तिहारो, ई है कलि ब्योहारो ।
को अब अनख सहत प्रति दिनको, नाहिन रहनि हमारो ॥
स्मृति स्वभाव सबै कोइ जानै, हृदया तत्त्व न बूझै ।
निरजिव आगे सरजिव थापै, लोचन कछू न सूझै ॥
तजि अमृत बिख काहेको अचवै, गांठी बांधिन खोटा ।
चोरन दीन्हा पाट सिंहासन, साहुन से भयो ओटा ॥
कहैं कबीर झूठे मिलि झूठा, ठगही ठग व्योहारा ।
तीन लोक भरपूर रहो है, नाहिन है पतियारा ॥

शब्द ६४

कहो निरंजन कौनी बानी ।
हाथ पांव मुख स्रवन जीभ बिनु, काकहि जपहु हो प्रानी ॥
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये, ज्योति कवन सहिदानी ॥
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै, तब कहाँ ज्योति समानी ॥

चार बेद अलै जो कहिया, उनहुँ न या गति जानी ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, बूझो पंडित ज्ञानी ।

शब्द ६५

को अब करै नगर कोटवरिया, मांस फैलाय गीध रखवरिया ।
मूस भौ नाव मंजार कँडिहरिया, सोवै दादुर सर्प पहरुवा ॥
बैल बियाय गाइ भइ बांझो, बछरा दुहिया तीनि तीनि सांझी ।
नित उठि सिंह सियार सो जूझै, कबिर के पद बिरला बूझै ॥

शब्द ६६

काको रोओगे बहुतेरा, बहुतक मुअल फिरल नहिं फेरा ॥
हम रोया तब तुम न संभारा, गर्भबास की बात बिचारा ।
अब तै रोया क्या तैं पाया, केहि कारन अब मोहि रोवाया ॥
कहैं कबीर सुनो भाई सन्तो, काल के बसहि परो मत कोई ।

शब्द ६७

अल्ला राम जीव तेरी नाई, जापर मेहर होहु तुम साईं ॥
क्या मूड़ी भूमी सिर नाये, क्या जल देह नहाये ।
खून करै मसकीन कहावै, औगुन रहत छिपाये ॥
क्या उजुब जप मंजन कीये, क्या मसजिद सिर नाये ।
हृदया कपट निमाज गुजारे, क्या हज मक्के जाये ॥
हिंदू ब्रत एकादसि चौबिस, तीस रोजा मुसलमाना ।
ग्यारह मास कहो किन टारे, एक महीना आना ॥
जो खुदाय मसजीद बसतु हैं, और मुलुक केहि केरा ।
तीरथ मूरत राम निवासी, दुइ में किनहु न हेरा ॥
पूरब दिसा में हरि का बासा, पच्छिम अलह मुकामा ॥
दिल में खोजि दिलहि मा खोजो, इहै करीमा रामा ॥
बेद किताब कहो किन झूठा, झूठा जोन बिचारे ।
सब घट एक एक के लखै, भै दूजा करि मारे ॥
जेते औरत मर्द उपानी, सो सब रूप तुम्हारा ।

कबीर पेगंबरा अलह राम का, सो गुरु पीर हमारा ॥

शब्द ९८

आव बे आव मुझे हरि नामा, और सकल तजु कौने कामा॥
कहाँ तब आदम कहां तब हव्वा, कहां तब पीर पैगम्बर हूवा।
कहाँ तब जिमी कहां असमान, कहाँ तब बेद किताब कुरान॥
जिन दुनिया में रची मसजीद, झूठा रोजा झूठी ईद।
सच्चा एक अल्लह को नाम, जाको नै नै करहु सलाम॥
कहु धौ भिस्त कहाँ से आई, किसके कहे तुम छुरी चलाई।
करता किरतम बाजी लाई, हिंदू तुर्क की राह चलाई॥
कहाँ तब दिवस कहाँ तब राती, कहाँ तब किरतम कीउतपाती।
नहिं वाके जात नहीं वाके पाँती, कहे कबीर वाके दिवस न राती॥

शब्द ९९

अब कहाँ चलेहु अकेले मीता, उठहु न करहु घरहु का चिंता॥
खीर खाँड़ घृत पिंड संवारा, सो तन लै बाहर कर डारा।
जो सिर रचि रचि बाँध्यो पागा, सो सिर रतन बिडारत कागा॥
हाड़ जरै जस जंगल की लकड़ी, केस जरैं जस घास की पूली।
आवत संग न जात संघाती, काह भये दल बाँधल हाथी॥
माया के रस लेइ न पाया, अंतर जम बिलारि होए धाया।
कहैं कबीर नर अजहुँ न जागा, जम का मुगदर सिर बिच लागा॥

शब्द १००

देखहु लोगो हरि की सगाई, माय धरी पुत्र धिये संग जाई।
सासु ननद मिलि अचल चलाई, मादरिया गृह बैठी जाई॥
हम बहनोई राम मोर सारा, हमहि बाप हरि पुत्र हमारा।
कहैं कबीर हरी के बूता, राम रमे ते कुकुरी के पूता॥

शब्द १०१

देखि देखि जिय अचरज होई, यह पद बूझै बिरला कोई॥
धरती उलटि अकासे जाई, चिउँटी के मुख हस्ति समाई।

बिना पवन जहँ पर्वत उड़ै, जीव जंतु सब बृक्षा चढ़ै ॥
सूखे सरवर उठै हिलोर, बिनु जल चकवा करत किलोर।
बैठा पंडित पढ़ै पुरान, बिनु देखे का करत बखान ॥
कहैं कबीर यहपद को जान, सोई संत सदा परमान।

शब्द १०२

हो द्वारिका ले देउँ तोहि गारी, तैं समुझि सुपंथ बिचारी ॥
घरहू के नाह जो अपना, तिनहू से भेंट न सपना।
ब्राह्मन श्री क्षत्री बानी, सो तिनहु कहल नहिं मानी॥
जोगी श्री जंगम जेते, वे आपु गये हैं तेते।
कहैं कबीर एक जोगी, वे तो भरमि भरमि भो भोगी ॥

शब्द १०३

लोगो तुमहीं मति के भोरा।
ज्यों पानी पानी मिलि गयऊ, त्यों धुरि मिले कबीरा ॥
जो मैथिल को साचा ब्यास, तोर मरन हो मगहर पास।
मगहर मरै मरन नहिं पावै, अन्तै मरै तो राम लेजावै ॥
मगहर मरै सो गदहा होय, भल परतीत रामसे खोय।
क्या कासी क्या मगहर ऊसर, जोपै हृदयराम बस मोर ॥
जो काशी तन तजै कबीर, तो रामहि कहु कैान निहोर।

शब्द १०४

कैसे तरों नाथ कैसे तरों, अब बहु कुटिल भरो ॥
कैसीतेरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यान,ऊपरउजर देखोबकअनुमान
भावतोभुवँगदेखोअति बिबिचारी,सुरतिसचानतेरी मतितोमँजारी
अतिरेबिरोधदेखोअतिरेसयाना,छवदरसनदेखोभेखलपटाना।
कहैं कबीर सुनो नर बन्दा, डाइनि डिंभ सकल जग खंदा॥

शब्द १०५

ये भ्रमभूतसकलजगखाया, जिन जिनपूज तीन जहँ डाया।
अंड न पिंड प्रान नहिंदेही, काटि काटि जिव केतिक देही॥

बकरी मुर्गी कीन्ह उछेवा, आगिले जन्म उन औसर लेवा ।
कहैं कबीर सुनो नर लोई, भुतवा के पूजे भुतवा होई ॥

शब्द १०६

भौंर उड़े बक बैठे आय, रैन गई दिवसो चलि जाय ।
हल हल कांपै बाला जीवे, ना जानों का करि है पीव ॥
काचे बासन टिके न पानी, उड़िगे हंस काया कुम्हिलानी ।
काग उड़ावत भुजा पिरानी, कहैं कबीर यह कथा सिरानी ॥

शब्द १०७

खसम बिनु तेली को बैल भयो ।
बैठत नहीं साधु की संगत, नाधे जन्म गयो ॥
बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम के दंड सह्यो ।
धन दारा सुत राज काज हित, माथे भार गह्यो ॥
खसमहि छाड़ि विषय रंग राते, पाप के बीज बयो ।
झूठ मुक्ति नर आस जिवन की, प्रेत को जूठन खायो ॥
लख चौरासी जीव जंतु में, सायर जात बह्यो ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, स्वान की पूंछ गह्यो ॥

शब्द १०८

अब हम भयल बहुरि जल मीना, पूर्व जन्म तप का मद कीना ॥
तब मैं अछलों मन बैरागी, तजलों कुटुंब राम रट लागी ।
तजलों काशी मति भै भोरी, प्रानन्नाथ कहु क्या गति मोरी ॥
हमहि कुसेवक तुमहि अयाना, दुहुमा दोष काहि भगवाना ।
हम चलि अइल तुम्हारे शरना, कतहुं न देखों हरि के चरना ॥
हम चलि अइल तुम्हरे पासा, दास कबीर भल कीन्ह निरासा ॥

शब्द १०९

लोग बोलै दुरि गये कबीरा, यह मत कोइ कोइ जाने धीरा ॥
दशरथसुत तिहुं लोकहि जाना, राम नाम का मर्म है आना ॥
जेहि जिव जानि परा जस लेखा, रजु को कहे उरगसम पेखा ॥

जद्यपि फल उत्तम गुन जाना, हरी छोड़ मन मुक्ति अनुमाना ॥
हरि अधार जस मीनहि नीरा, और जतन कछु कहै कबीरा ॥

शब्द ११०

आपन कर्म न मेटो जाई ।

कर्म का लिखा मिटै धो कैसे, जो जुग कोटि सिराई ॥
गुरु बसिस्ट मिलि लगन सोधाई, सूर्य मंत्र एक दीन्हा ।
जो सीता रघुनाथ बिश्राही, पल एक संच न कीन्हा ॥
तीन लोक के कर्ता कहिये, बालि बधे बरियाई ।
एक समय ऐसी बनि आई, उनहूँ औसर पाई ॥
नारद मुनि के बदन छिपायो, कीन्हो कपि को रूपा ।
सिसुपाल की भुजा उपारिन, आप भये हरि ठूंठा ॥
पारबती को बांझन कहिये, ईसन कहिये भिखारी ।
कहैं कबीर कर्ता की बातैं, कर्म की बात निनारी ॥

शब्द १११

है कोई गुरु ज्ञानि जगत में, उलटि बेद को बूझे ॥
पानी में पावक बरै, अंधहि आंखिन सूझे ।
गैया तो नाहर को खायो, हरिना खायो चीता ॥
कागा लंगर फांदि के, बटेरन बाजी जीता ।
मूसा तो मंजारै खायो, स्यारै खायो स्वाना ॥
आदि को उदेस जानै, तासो बैसे माना ।
एकहि तो दादुर खायो, पाँच जे भुवंगा ॥
कहैं कबीर पुकारि के, दोउ एक के संगा ।

शब्द ११२

झगरा एक बढ़ो राजा राम, जो निरुवारैं सो निर्बान ॥
ब्रह्म बड़ो की जहँ से आया, बेद बड़ा कि जिन उपजाया ।
ईसन बड़ो कि जेहि मन माना, राम बड़ो कि रामहि जाना ॥
भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरत उदास, तीर्थ बड़ा की तीर्थ का दास ।

शब्द ११३

झूठे जनि पतियाहु हो सुन संत सुजाना।
तेरे घटही में ठग पूरे हैं, मति खोवहु अपाना॥
झूठहि की मंडान है, धरती असमाना।
दसहुँ दिसा वाके फंद हैं, जीव घेरिन आना॥
जोग जप तप संयमा, तीर्थ ब्रत दाना।
नौधा बेद किताब है, झूठे का बाना॥
काहू के बचनहि फुरे, काहू के करमाती।
मान बड़ाई ले रहे, हिंदू तुरुक दोउ जाती॥
बात बोबत असमान की, मुद्दति नियरानी।
बहुत खुदी दिल राखते, बूड़े बिनु पानी॥
कहैं कबीर कासो कहौं, सकलो जग अन्धा।
साचा से भागा फिरै, झूठे का बन्धा॥

शब्द ११४

सार सब्द से बाँचि हो, मानहु इतबारा हो॥
आदि पुरुख एक वृच्छ है, निरंजन डारा हो।
तरदेवा साखा भये, पत्ती संसारा हो॥
ब्रह्मा बेद सही किया, सिव जोग पसारा हो।
विस्नु माया उत्पत किया, उरला व्योहारा हो॥
तीन लोक दसहू दिसा, जम रोकिन द्वारा हो।
कीर भये सब जियरा, लिये बिखका चारा हो॥
ज्योति स्वरूपी हाकिमा, जिन अमल पसारा हो।
कर्म की बंसी लायके, पकरयो जग सारा हो॥
अमल मिटाऊँ तासु का, पठवों भव पारा हो।
कहैं कबीर निरभय करो, परखो टकसारा हो॥

शब्द ११५

संतो ऐसि भूल जगमाहीं, जाते जीव मिथ्या में जाहीं॥

पहिले भूले ब्रह्म अखंडित, झांई आपुहि मानी ।
झांई भूलत इच्छा कीना, इच्छा ते अभिमानी ॥
अभिमानी कर्ता हो बैठे, नाना पंथ चलाया ।
वाही भूल में सब जगभूला, भूलका मर्म न पाया ॥
लख चौरासी भूतल कहिये, भूलत जग बिटमाया ।
जोहै सनातन सोई भूला, अब सोइ भूलहि खाया ॥
भूल मिटै गुरु मिलै पारखी, पारख देहि लखाई ॥
कहैं कबीर भूलकी औसध, पारख सबकी भाई ।

शब्दसमाप्तम्

ज्ञान चौंतीसा प्रारंभ ॥

ॐकार आदि जो जानै, लिखके मेटै ताहि सो मानै ।
ॐकार कहता सब कोई, जिन यह लखा सो बिरलेहोई ॥
कका कमल किरनमें पावै, ससि बिगसित संपुट नहिं आवै।
तहां कुसुम रंग जो पावै, औ गह गहिके गगन रहावै ॥
खखा चाहैं खोरि मनावै, खसमहि छोड़ दोजखको धावै ।
खसमहि छाड़ि क्षमाहोरहई, होय न खिन्न अखै पद लहई॥
गगा गुरू के बचनहि मान, दूसर सब्द करो नहिं कान ।
तहां बिहंगम कबहुं न जाय, औगह गहिके गगन रहाय ॥
घघा घट बिनसे घट होई, घटही में घट राखु समोई ।
जो घटघटै घटही फिरि आवै, घटहीमें फिरि घटहि समावै ॥
ङङा निरखत निसिदिन जाई, निरखत नैन रहै रतनाई ।
निमिख एक जो निरखै पावै, ताहि निमिखमें नैन छिपावै ॥
चचा चित्ररचयो बड़भारी, चित्रहिछाँड़ चेतु चित्रकारी।
जिन्ह यह चित्रबेचित्रहो खेला, चित्र छाँड़ितै चेतु चितेला ॥

छछा आहि छत्रपति पासा, छकि क्यों न रहेउ मेटि सब आसा।
मैं तोहीं छिन छिन समुझावा, खसम हि छाड़ि कस आपु बंधावा॥
जजा ई तन जियतै जरो, जोबन जारि जुक्ति तन परो।
जो कछु जुक्ति जानि तन जरै, घटहि ज्योति उजियारी करै॥
झझा अरु झ सरुझि कित जाना, अरुझनि हींडत जाय पराना।
कोटि सुमेरु ढूँढ़ फिरि आवै, जो गढ़ गढ़ै गढ़इ सो पावै॥
ञञा निरखत नगर सनेहू, करु आपन निरुआर संदेहू।
नहीं देखि नहिं भाजिया, परम सयानप येहू॥
जहाँ न देखि तहँ आप भजाऊ, जहाँ नहीं तहँ तन मन लाऊ।
जहा नहीं तहाँ सब कछु जानी, जहां है तहां लेव पहिचानी॥
टटा बिकट बाट मन माहीं, खोलि कपाट महल में जाहीं।
रहे लटापट जुटि तेहि माहीं, होहिं अटल तब कतहुँ न जाहीं॥
ठठा ठौर दूरि ठग नियरे, नित के निठुर कीन्ह मन घेरे।
जे ठग ठगे सब लोग सयाना, सो ठग चीन्ह ठौर पहिचाना॥
डडा डर उपजै डर होई, डरही में डर राखु समोई।
जो डर डरै डरहि फिरि आवै, डरही में फिर डरहि समावै॥
ढढा हींडत ही कित जाना, हींडत ढूंढत जाय पराना।
कोटि सुमेरु ढूंढि फिर आवै, जेहि ढूँढा सो कतहुँ न पावै॥
णणा दूइ बसाये गाँउ, रेना ढूंढे तेरा नाँउ।
मूए एक जाय तजि घना, मरे इत्यादिक केते गना॥
तता अति त्रियो नहिं जाए, तन त्रिभुवन में राखु छिपाए।
जो तन त्रिभुवन माँहि छिपावै, तत्त्वहि मिलि तत्त्व सो पावै॥
थथा अथाह थहो नहिं जाई, ई थिर ऊ थिर नाहिं रहाई।
थोरे थोरे थिर हो भाई, बिनु थंभे जस मंदिर थँभाई॥
ददा देखहु बिनसन हारा, जस देखहु तस करहु बिचारा॥

घघा अर्ध माहिं अंधियारी, अर्धहि छांड़ि ऊर्ध मनधारी।
अर्ध छांड़ि ऊर्ध मन लावे, आपा मेटि के प्रेम बढ़ावे॥
नना वो चौथे महँ जाई, राम कै गदहा हो खर खाई।
आपा छोड़ो नरक बसेरा, अजहुँ मूढ़ चित चेत सबेरा॥
पपा पाप करै सब कोई, पापके धरे धर्म नहिं होई।
पपा कहै सुनो रे भाई, हमरे से इन्ह कछु नहिं पाई॥
फफा फल लागै बड़ दूरी, चाखैं सतगुरु देइ न तूरी।
फफा कहै सुनहु रे भाई, स्वर्ग पताल की खबर न पाई॥
बबा बरबर करै देख सब कोई, बरबर करे काज नहिं होई।
बबा बात कहै सबही अथाई, फल का मर्म न जानै भाई॥
भभा भभरि रहा भर पूरी, भभरे ते हैं नियरे दूरी।
भभा कहै सुनो रे भाई, भभरे आवें भभरे जाई॥
ममा के सेवे मर्म न पाई, हमरे से इन मूल गंवाई।
माया मोह रहा जग पूरी, माया मोहहि लखहु बिचारी॥
यया जगत रहा भर पूरी, जगतहु ते है यया दूरी।
यया कहै सुनो रे भाई, हमही ते इन्ह जै जै पाई॥
ररा रारि रहा अरुझाई, राम कहे दुख दारिद्र जाई।
ररा कहै सुनहु रे भाई, सतगुरु पूछि के सेवहु जाई।
लला तुतुरे बात जनाई, तुतुरे आय तुतुरहि परचाई।
आप तुतुरे और को कहहीं, एकै खेत दुनो निरबहहीं॥
ववा वह वह करै सब कोई, वह वह करे काज नहिं होई।
वह तो कहै सुनै नहिं कोई, स्वर्ग पताल न देखे जोई॥
ससा सर नहिं देखै कोई, सर सीतलता एकै होई।
ससा कहै सुनहु रे भाई, शून्य समान चला जग जाई॥
षषा खरा कहै सब कोई, खर खर करे काज नहिं होई।
षषा कहै सुनहु रे भाई, राम नाम ले जाहु पराई॥

ससा सरा रच्यो बरियाई, सर बेधे सब लोक तबाई।
ससा के घर सुन गुन होई, इतनी बात न जानै कोई ॥
हहा हाय हायमें सब जग जाई, हरख सोकसब माहि समाई।
हंकरि हंकरि सब बड़ बड़ गयऊ, हहा मर्म न काहू पयऊ ॥
क्षक्षा छिन परलै मिटि जाई, छेव परे तब को समुझाई।
छेव परे कोउ अन्त न पाया, कहैं कबीर अगमन गोहराया॥

ज्ञान चौंतीसा समाप्तम्

विप्रमतीसी प्रारम्भः।

सुनहु सभन मिलि विप्रमतीसी, हरि बिनु बूड़ी नाव भरीसी।
ब्राह्मन होके ब्रह्म न जानै, घरमें जज्ञ प्रति गृह आनै ॥
जेहि सिरजा तेहि नहिं पहचानैं, कर्म धर्म मति बैठि बखानै।
ग्रहन अमावस और दुईजा, सांती पाँति प्रयोजन पूजा ॥
प्रेत कनक मुख अंतर बासा, आहुति सहित होमकी आसा।
कुल उत्तम जग माहिं कहावै, फिर फिर मध्यम कर्म करावै॥
कर्म असौच उच्छिस्टै खाई, मतिभ्रस्ट जमलोक सिधाई।
सुत दारा मिलि जूठो खाई, हरि भक्तन को छूति लगाई ॥
न्हाय खोरि उत्तम होय आये, बिस्नु भक्त देखें दुखपाये।
स्वारथ लागि रहे बेकाजा, नाम लेत पावक जिमि डाजा॥
राम कृस्न की छोड़िन आसा, पढ़ि गुनि भये कृतमके दासा।
कर्म पढ़े औ कर्महि धावै, जेहि पूछै तेहि कर्म दृढ़ावै ॥
निस्कर्मी की निन्दा कीजै, कर्म करै ताही चित दीजै।
हृदय भक्ति भगवंत की लावैं, हिरनाकुस को पंथ चलावैं ॥
देखहु कुमति करे परकासा, बिनु लखि अंतर कृतिमके दासा।
जाके पूजे पाप न उड़े, नाम सुमिरनी भव मा बूड़े ॥
पाप पुन्य के हाथहि फाँसा, मारि जगत का कीन्ह बिनासा।

ई बहिनीकुल बहिनीकहावै, ई गृह जारे ऊ गृह मारे ॥
बैठे ते घर साहु कहावे, भितरभेदमनमुसहीलखावे ।
ऐसी बिधि सुर बिप्र भनीजे, नाम लेत पंचासन दीजे ॥
बूड़ि गये नहिं आपु सँभारा, ऊँच नीच कहिकहिजो हारा ।
ऊँच नीच है मध्यम बानी, एके पवन एक है पानी ॥
एके मटिया एक कुम्हारा, एकसबन का सिरजनहारा ।
एक चाक सब चित्र बनाई, नाद बिंद के मध्य समाई ॥
व्यापक एकसकलकीज्योती, नाम धरे क्या कहियेभौती ।
राक्षस करनी देव कहावे, बाद करै गोपाल न भावे ॥
हंस देह तजि न्यारा होई, ताकर जाति कहेधौ कोई ।
स्याम सुपेदकि राता प्यारा, अबरनबरनकिताता सियारा॥
हिंदू तुरक कि बूढ़ो बारा, नारिपुरुखकाकरहु बिचारा।
कहिये काहि कहानहिंमाना, दास कबीर सोइ पै जाना ॥

साखी

वहा है वहि जात है, कर गहिये चहुंओर ।
जो कहा नहिं माने तभी, दे धक्का दुइ ओर ॥

॥ इति ॥

कहरा प्रारंभ ।

कहरा १

सहजध्यानरहुसहजध्यानरहु, गुरु के बचन समोई हो ।
मेली सृस्टि चरा चित राखहु, रहहु दृस्टि लौ लाई हो ॥
जस दुखदेखिरहहु यह अवसर, अस सुखहोइहै पाई हो ।
जो खुटकार बेगिमहिं लागे, हृदय निवारहु कोहू हो ॥
मुक्तिकीडोरिगाँठिजनिखैंचहु, तब बझिहैं बड़रोहू हो ।
मन वहि कहहु रहहु मन मारे, खिजुआ खीझिन बोलेहो॥
माचक मीत [illegible]

भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु, जोग जुक्ति तन साधहु हो॥
जो यहिभाँतिकरहु मतवलिया, तामतिका चित बांधहु हो।
नहिं ते ठाकुर है अति दारुन, करिहैं चाल कुचाली हो॥
बाँधि मारि डारि सब लेहैं, छूटी सब मतवाली हो।
जबहीं सामत आनपहूंचे, पीठ साँट भल टूटहि हो॥
ठाढ़े लोग कुटंब सब देखैं, कहे काहुके न छूटहि हो।
एकतो निहुरि पांवपरि बिनवै, बिनती कियेनहिं मानहि हो॥
अनचिन्ह रहे उनकियेउ चिन्हा री, सो कैसेपहिचानहिं हो।
लीन्ह बोलाय बात नहिं पूछै, केवट गर्भ तन बोलै हो॥
जाकर गांठि सबलकछुनाहीं, सो निरधनिया डोलै हो।
जिनसमजुक्ति अगमकै राखिन, धरिन मच्छ भरि देहरिहो॥
जाके हाथ पांव कछु नाहीं, धरनि लागि तेहिसेहरि हो।
पेलन अछत पेलि चलु बौरे, तीरतीर क्या टोवहु हो॥
उथले रहहु परहु जनि गहिरे, मतिहाथहु की खोवहु हो।
तरके घाम उपर के भुभुरी, छांह कतहुँ नहिं पावहु हो॥
ऐसनि जानि पसीजहु सीझहु, कसन छतुरिया छायहु हो।
जो कछुखेलकियेहु सोकीयेहु, बहुरि खेल कस होई हो॥
सासु ननददोउ देत उलाहन, रहहु लाज मुख गोई हो।
गुरुभौ ढील गोनि भइ लचपच, कहा न मानेहु मोरा हो॥
ताजी तुर्की कबहुँ न साधेहु, चढ़ेहु काठ के घोड़ा हो।
ताल झांझ भल बाजत आवै, कहरा सब कोइ नाचै हो॥
जेहिरंग दुलहा ब्याहन आवै, दुलहिन तेहि रङ्ग राचै हो।
नौका अछत खेइ नहिं जानेहु, कैसे लगबहु तीरा हो॥
कहैं कबीर राम रस माते, जोलहा दास कबीरा हो।

कहरा २

मतिसम्मानिकमति सत मानिक, कहया धंघनिबारहु हो।

अटपट कुम्हरा करै कुम्हरिया, चमरा गांव न बांचेहो ॥
नित उठि कोरिया पेट भरतु है, छिपिया आंगन नाचै हो।
नित उठि नौआ नाव चढ़तु है, बरही बेरी बोरे हो ॥
राउर की कछु खबरि न जानेहु, कैसे झगरा निवारहु हो।
एक गाँव में पांच तरुनि बसे, तेहि में जेठ जेठानी हो ॥
आपन आपन झगरा प्रगासिन, पियासे प्रीति नसाइनहो।
भैँसिन माँहि रहत नित बकुला, तकुला ताकिन लीन्हाहो॥
गायन माँहि बसेउ नहिं कबहीं, कैसे पद पहिचानो हो।
पंथी पंथ बूझि नहिं लीन्हा, मूढ़हि मूढ़ गंवारा हो ॥
घाट छोड़ि कस औघट रँगहु, कैसे लगबहु पारा हो।
जतइत के धन हेरिन ललचिन, कोदइत के मन दौरा हो ॥
दुइ चकरी जनि दरर पसारहु, तब पैहौ ठीक ठौरा हो।
प्रेमबान एक सत गुरु दीन्हा, गाढ़ो तीर कमाना हो ॥
दास कबीर कीन्ह एह कहरा, महरा मांहि समाना हो।

कहरा ३

राम नाम को सेवहु बीरा, दूरि नहीं दुरि आसा हो।
और देव का सेवहु बौरे, ई सब झूठा आसा हो ॥
ऊपर ऊजर काह भौ बौरे, भीतर अजहूं कारो हो।
तनको बृद्ध कहा भौ बौरे, मनुवाँ अजहूं बारो हो ॥
मुख के दाँत कहाँगो बौरे, भीतर दाँत लोहे के हो।
फिर फिर चना चबाय बिखन को, काम क्रोध मद लोभा हो ॥
तनकी सकल सक्ति घटि गयऊ, मनहि दिलासा दूनी हो।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, सकल पयान पहूनी हो ॥

कहरा ४

ओढ़न मेरा राम नाम, मैं राजहि का बनिजारा हो॥
राम नामकी करहुँ बनिजिया, हरि मोरा हट वारा हो।

कानि तराजू सेर तिरपौआ, तुर्किन ढोल बजाई हो ॥
सेर पसेरी पूरा करले, पासंग कतहुं न जाई हो ।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जोर चले जहँ ड़ाई हो ॥

कहरा ५

रामनाम भजु रामनाम भजु, चेतु देखु मन माहीं हो ॥
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़ेहु, चलत डोलावत बाहीं हो ।
दादा बाबा औ परपाजा, जिनके यह भुंइ भाड़े हो ॥
आंधर भयहु हियहु की फूटी, तिन काहे सब छांड़े हो ।
ई संसार असार को धंधा, अन्तकाल कोइ नाहीं हो ॥
उपजत बिनसत बार न लागै, ज्यों बादर की छाहीं हो ।
नातागोता कुल कुटुंब सब, इनकर कौन बड़ाई हो ॥
कहैं कबीर एकरामनाम बिनु, बूड़ी सब चतुराई हो ।

कहरा ६

रामनाम बिनु रामनाम बिनु, मिथ्या जन्म गँवाई हो ॥
सेमर सेइ सुवा ज्यों जहँडे, ऊन परे पछिताई हो ।
जैसे मदपी गांठि अर्थ दै, घरहु की अकिल गँवाई हो ॥
स्वादे उदर भरै धों कैसे, ओसे प्यास न जाई हो ।
द्रव्य हीन जैसे पुरुखारथ, मनहीं माहिं तवाई हो ॥
गाँठीरतन मर्म नहिं जानत, पारख लीन्हा छोरी हो ।
कहैं कबीर यह औसर बीते, रतन न मिले बहोरी हो ॥

कहरा ७

रहहु सम्हारे राम बिचारे, कहता हौं जु पुकारे हो ॥
मुद्रा मुड़ाय फूलि के बैठे, मुद्रा पहिर मंजूसा हो ।
तेहि ऊपर कछु छार लपेटिनि, भितर भितर घर मूसा हो ॥
गांव बसत है गर्भ भारती, वाम काम हंकारा हो ।
मोहनी जहाँ तहाँ लै जैहै, नहिं पति रहल तुम्हारा हो ॥
मांझ मझरिया बसै जो जानै, जन होइहैं सो थीरा हो ।

निर्भय भे तहँ गुरु की नगरिया, सुख सोवै दास कबीरा हो॥

कहरा ८

क्षेम कुसल औ सही सलामत, कहहु कौन को दीन्हा हो॥
आवत जात दोउ बिधि लूटै, सर्ब तंग हरि लीन्हा हो।
सुरनर मुनि जतिपीरऔलिया, मीरा पैदा कीन्हा हो॥
कहं लौ गनों अनंत कोटिलौ, सकल पयाना दीन्हा हो।
पानी पवन अकास जायँगे, चंद्र जायँगे सूरा हो॥
येभी जायँगे वोभी जायँगे, परत न काहुके पूराहो।
कुसलै कहत कहत जग बिनसे, कुसल कालकी फाँसी हो॥
कहैं कबीर सब दुनिया बिनसे, रहल राम अविनासी हो।

कहरा ६

ऐसन देह निरालप बौरे, मुये छुवै नहिं कोई हो॥
डंडवक डोरवा तोरि लराइन, जो कोटिन धन होई हो।
ऊर्धनि स्वासा उपजि तरासा, हंकराइन परिवारा हो॥
जो कोइ आवै बेगि चलावै, पलएक रहन न हारा हो।
चंदन चूर चतुर सब लेपै, गले गजमुक्ता हाराहो॥
चौसठ गीध मुये तन लूटै, जंबुक उदर बिदाराहो।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, ज्ञान हीन मति हीना हो॥
एक एक दिन यहि गति सबहिन की, कहाँराव कहँदीनाहो।

कहरा १०

हों सबहिनमें हों नाहीं, मोहिं बिलग बिलगाई हो॥
ओढ़न मोरा एक पिछौरा, लोग बोले एकताई हो।
एक निरंतर अंतर नाहीं, ज्यों ससिघट जल झाई हो॥
एक समानकोइसमुझत नाहीं, जरा मरन भ्रम जाई हो।
रैन दिवस ये तहँवा नाहीं, नारि पुरुख समताई हो॥
हों मैं बालक बूढ़ो नाहीं, ना मोरे चेलिकाई हो।
त्रिबिधि रहौं सबहिन मा बरतों, नाम मोर रमुराई हो॥

पठये न जावौं आने नहिं आओं, सहज रहौं दुनियाई हो।
जोलहा तान बान नहिं जानै, फाट बिनै दस ठाई हो॥
गुरु प्रताप जिन्ह जैसा भास्यो, जन बिरले सो पाई हो।
अनंत कोटि मत हीरा बेधो, फटिक मोल न पाई हो॥
सुर नर मुनि जाके खोज परे हैं, कछु कछु कबिरन पाईहो॥

कहरा ११

ननदीगे तै त्रिखम सोहागिन, तै निदले संसारा गे॥
आवत देखि एक संग सूती, तैंओ खसम हमारा गे।
मोरे बाप के दुइ मेहरुवा, मैं अरु मोर जेठानी गे॥
जब हम रहलीं रसिक केसंग में,तबहिबात जग जानी गे॥
माइ मोर मुवलि पिता के संगे, सरासचि मुवलि संघातीगे।
आपहु मुवलि और लै मुवली, लोग कुटुम्ब संग साथी गे॥
जबलग स्वास रहे घट भीतर, तब लग कुसल परै है गे।
कहैंकबीर जबस्वास निकरिगौ, मंदिर अनल जरै हैं गे॥

कहरा १२

ई माया रघुनाथ कि बौरी, खेलन चली अहेरा हो॥
चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारे, कोइ न राखै न्यारा हो।
मौनी बीर डिगम्बर मारे, ध्यान धरंते जोगी हो॥
जंगल में के जंगम मारे, माया किनहु न भोगी हो।
बेद पढंते बेदुवा मारे, पुजा करंते स्वामी हो॥
अर्थ बिचारत पंडित मारे, बांधे सकल लगामी हो।
सृंगीरिखि बन भीतर मारे, सिर ब्रह्मा का फोरी हो॥
नाथ मछंदर चले पीठ दे, सिंगलहू में बोरी हो।
साकट के घर हरता करता, हरि भक्तन की चेरी हो॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, ज्यों आवे त्यों फेरीहो।

कहरा समाप्तम्।

वसंत प्रारम्भः ।

बसंत १

जहँ बारह मास बसंत होए, परमारथ बूझै बिरला कोए ।
जहँ बरसै अगिन अखंड धार, बनहरिअर भौ अठारह भार ॥
पनिया अन्दर धरनि लोए, वह पवन गहै कसमलिन धोए ।
बिनु तरुवर फूलो है अकास, सिव औ बिरंचि तहँ लेहिं बास ॥
सनकादिक भूले भंवर होए, तहां लख चौरासी जोइन जोए ।
जो तोहि सतगुरु सत लखाव, तो ताहि न छूटै चरन भाव ॥
वह अमरलोक फल लावै चाव, कहैं कबीर बूझै सो पाव ।

बसंत २

रसना पढ़ि लेहु श्री बसंत, बहुरि परहु जाए जमके फंद ॥
जो मेरुडंड पर डंक दीन्ह, सो अस्ट कमल परचारि लीन्ह ।
तब ब्रह्म अगिन कियो प्रकास, तहँ अर्घ ऊर्ध बहती बतास ॥
तहँ नौ नारी परिमल सो गाँव, मिलि सखी पाँच तहँ देखन धाव ।
जहँ अनहद बाजा रहल पूर, तहँ पुरुख बहत्तर खेलैं धूर ॥
माया देखि कस रह्यो है भूल, जस बनसपती बन रहल फूल ।
कहैं कबीर यह हरि के दास, फगुआ माँगै बैकुंठ बास ॥

बसंत ३

मैं आयों मेहतर मिलन तोहि, अब ऋतु बसंत पहिराउ मोहि ॥
है लंबी पुरिया पाई छीन, तेहि सूत पुराना खूटा तीन ।
सर लागी तेहि तीनसै साठ, तहँ कसनी बहत्तर लागु गाँठ ॥
खुर खुर खुर खुर चलै नारि, बैठि जोलाहिन पलथि मारि ।
ऊपर नचनिया करत कोड़, सो करिगा माहिं दुइ चलत गोड़ ॥
है पाँच पचीसों दसहु द्वार, सखी पाँच तहँ रची धमार ।
वे रंग बिरंगा [illegible] चीर, हरि के चरन [illegible] कबीर ॥

चोवा अरु चन्दन अगर पान, घर घर स्मृति होवे पुरान।
बहुबिधिभवन में लागेभोग, अस नगरकोलाहलकरलोग॥
बहुबिधिपरजानिर्भयहैतोर, तेहि कारन चित रहै ढूढ़ मोर।
हमरे बलकवा के इहै ज्ञान, तोहरा केतो समुझावे आन॥
जोजोहिमनसेजगरहल आय, सो जिव मरैकहु कहाँ समाय।
ताकर जो कछुहोय अकाज, हैताहिदोख नहिं साहेबलाज॥
तबहरिहरखितसोकहल भेव, जहाँ हम तहाँ दूसर केव।
तुमकिनाचारिमनघरहु धीर, जस देखहिं तस कहैं कबीर॥

बसन्त १२

हमरे कहल केनहिं पतियार, आपु बुड़े नर सलिल के धार।
अन्धा कहै अंध पतिआए, जस बेस्या के लगन धराए॥
सो तो कहिये ऐसा अबूझ, खसम ठाढ़ ढिग नाहींसूझ।
आपन आपन चाहैमान, झूठ प्रपंच साँचकरि जान॥
झूठा कबहुँ न करिहैकाज, हौं बरजों तोहि निलाँज।
छाड़हु पाखंड मानहु बात, नहिं तो परिहो जमके हात॥
कहैंकबीर नर कियो न खोज, भटकमुअलजैसेबनरोझ॥

बसंत समाप्तम्।

चाचरि प्रारंभ॥

चाचरि १

खेलति माया मोहनी, जेर कियो संसार।
कटि केहरि गजगामिनी, संसय कियो सृंगार॥
रचेउ रङ्ग ते चूनरी, सुन्दरि पहिरे आए।
सोभा अद्भुत रूप की, महिमा बरनि न जाए॥
चन्द्रबदनि मृग लोचनी, बेंदुका दियो उघालि।
[illegible] [illegible] मोहिया, गजमाहिमाकी [illegible]॥

नारद को मुख मोरके, लीन्हीं बसन छोड़ाए।
गर्भ गहेली गर्भ ते, उलटि चली मुसकाए॥
सिवसन ब्रह्मा दौरि के, दूनो पकड़े धाए।
फगुआ लीन्ह छोड़ाय के, बहुरि दियो छिटकाए॥
अनहद धुनि बाजा बजे, स्रवन सुनत भो चाव।
खेलनहारो खेलि है, जैसी वाको दाव॥
ज्ञान ढाल आगे दियो, टारे टरत न पाँव।
खेलन हारी खेलि हैं, बहुरि न वाको दाँव॥
सुर नर मुनि औ देवता, गोरख दत्ता ब्यास।
सनक सनंदन हारिया, और की केतिक आस॥
छिलकत थोथे प्रेमसो, धरि पिचकारी गात।
कर लीन्हो बस आपने, फिर फिर चितवत जात॥
ज्ञान गाड़ ले रोपिया, त्रिगुन दियो है साथ।
सिवसन ब्रह्मा लेलिया, और कि केतिक बात॥
एक ओर सुर नर मुनि ठाढ़े, एक अकेली आप।
दृस्टि परे छाड़े नहीं, कै लीन्हीं एक धाप॥
जेते थे तेते लिये, घूँघट माहिं समाए।
कज्जल वाकी रेख है, अदग गया नहिं कोए॥
इन्द्र कृस्न द्वारे खड़े, लोचन ललित लजात।
कहैं कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समात॥

॥ चाचरि २ ॥

जारो जग का नेह मन बौरा हो, जामे सोग संताप समुझ मन बौरा हो॥
तन धन सो क्या गर्भ समुझ मन बौरा हो, भस्म कीन्ह जेहि साज समुझ मन बौरा हो।
बिना नेवका देवघरा मन बौरा हो, बिनु कहगिल की ईंट समुझ मन बौरा हो॥
कालबूत की हस्तिनी मन बौरा हो, चित्र रचो जगदीस समुझ मन बौरा हो।
काम अंध गज बसि परे मन बौरा हो, अंकुस सहियो सीस समुझ मन बौरा हो॥
मरकट मूठी स्वाद की मन बौरा हो, लीन्हेउ भुजा पसारि समुझ मन बौरा हो।
छूटन की संसय परी मन बौरा हो, घर घर नाचेउ द्वार समुझ मन बौरा हो॥

ऊंच नीच जानेहु नहीं मन बौरा हो, घर घर खायो डाग समुझ मन बौरा हो।
ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मन बौरा हो, ऐसो भर्म बिचार समुझ मन बौरा हो॥
पढ़े गुने क्या कीजिये मन बौरा हो, अन्त बिलैया खाय समुझ मन बौरा हो।
सूने घरका पाहुना मन बौरा हो, ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मन बौरा हो॥
नहाने को तीरथ घना मन बौरा हो, पुजबेको बहु देव समुझ मन बौरा हो।
बिनु पानी नर बूड़िया मन बौरा हो, तुम टेकहु राम जहाज समुझ मन बौरा हो॥
कहैं कबीर जग भर्मिया मन बौरा हो, तुम छोड़हु हरिकी सेव समुझ मन बौरा हो॥

चाचरि समाप्त।

शब्दबेलि प्रारम्भ।

बेलि १॥

हंसा सरवर सरीर में रमैयाराम, जागत चोर घर मूसल हो रमैया राम॥
जो जागल सो भागल हो रमैयाराम, सोवत गैल बिगोय हो रमैयाराम।
आजु बसेरा नियरे हो रमैयाराम, काल्ह बसेरा दूरि हो रमैयाराम॥
जहो बिराने देस हो रमैयाराम, नैन भरोगे दूरि हो रमैयाराम।
त्रास मथन दधि कियो हो रमैयाराम, भवन मथेउ भरपूर हो रमैयाराम॥
फिर के हंसा पाहन में रमैयाराम, बेधिन पद निर्बान हो रमैयाराम।
तुम हंसा मन मानिक हो रमैया राम, टहल न मानहु मोर हो रमैयाराम॥
जसरे कियो तस पायो हो रमैयाराम, हमरे दोष का देहु हो रमैया राम।
अगम काटि गम कियो हो रमैयाराम, सहज कियो बिस्वास हो रमैयाराम॥
रामनाम धन बनिज कियो रमैयाराम, लादेहु वस्तु अमोल हो रमैया राम।
पांच लदनुआ लादि चले रमैयाराम, नौ बहियाँ दस गोनि हो रमैया राम॥
पांच लदनुआ लागि परे रमैयाराम, खाखर डारिनि फोरि हो रमैयाराम॥
सिर धुनि हंसा उड़ि चले रमैयाराम, सरवर मीत जोहारि हो रमैयाराम।
आगि जो लागी सरवर में रमैयाराम, सरवर जरि भौ धूरि हो रमैया राम॥
कहैं कबीर सुनो संत हो रमैयाराम, परखि लेहु खरा खोट हो रमैयाराम।

बेलि २॥

भल सुमृति जहड़ाविहु हो रमैयाराम, धोखे कियेउ बिस्वास हो रमैयाराम॥
सो तो है बनसी कली हो रमैयाराम, सोरे कियेउ बिस्वास हो रमैयाराम॥
ई तो बेद सास्त्र हो रमैयाराम, गुरु दीहल मोहि थापि हो रमैयाराम॥
गोबर कोट उठायहु हो रमैयाराम, परिहरि जैहो खेत हो रमैयाराम॥
मन बुधि जहां न पहुंचे हो रमैयाराम, तहां खोज कस होय हो रमैयाराम॥
सुनि मन धीरज धरहु हो रमैयाराम, मन बढ़ि रहल लजाय हो रमैयाराम॥
फिर पाछे जनि हेरहु हो रमैयाराम, कालबूत सब आहि हो रमैयाराम॥
कहैं कबीर सुनो संतहो रमैयाराम, मन बुधि ढिग फैलाए हो रमैयाराम॥

शब्दबेलि समाप्तम्॥

शब्द बिरहुली प्रारम्भ

आदि अंत नहिं होत बिरहुली, नहिं जर पल्लव डार बिरहुली ॥
निसि बासर नहिं होत बिरहुली, पवन पानि नहिं मूल बिरहुली ।
ब्रह्म आदि सनकादि बिरहुली, कथि गये जोग अपार बिरहुली ॥
मास असार हि सीतल बिरहुली, बोइन साती बीज बिरहुली ।
नित कोड़ैं नित सींचै बिरहुली, नित नव पल्लव डार बिरहुली ॥
छिछिलि बिरहुली छिछिलि बिरहुली, छिछिलि रहल तिहुलोक बिरहुली ।
फूल एक भल फुलल बिरहुली, फूलि रहल संसार बिरहुली ॥
सो फुल लोढ़ैं भक्त बिरहुली, बंदे के राउर जाय बिरहुली ।
सो फुल लोढ़ै भक्त बिरहुली, डंसिगो बेतल सांप बिरहुली ॥
बिसहर मंत्र न मान बिरहुली, गारुड़ बोल अपार बिरहुली ।
बिख का क्यारी बोएहु बिरहुली, लोढ़त का पछताहु बिरहुली ॥
जनम जनम जम अंतर बिरहुली, फल एक कनयल डार बिरहुली ।
कहैं कबीर सच पाव बिरहुली, जो फल चाखहु मोर बिरहुली ॥

बिरहुली समाप्तम्

हिंडोला प्रारम्भ ।

हिंडोला १

भर्म हिंडोला झूलै सब जग आए ।
पाप पुन्य के खंभा दोऊ, मेरू माया मांहि ॥
लोभ भंवरा विखय मरुवा, काम कीला ठानि ।
सुभ असुभ बनाये डांड़ी, गहे दूनो पानि ॥
कर्म पटरिया बैठि के, को कोन झूले आनि ।
झूलत गन गंधर्व मुनिवर, झूलत सुरपति इन्द्र ॥
झूलत नारद सारदा, झूलत व्यास फनिन्द्र ।
झूलत बिरंच महेस सकमुनि, झूलत सूरज [illegible]

आप निर्गुन सर्गुन होके, झूलिया गोविन्द ।
छव चारि चौदह सात एकइस, तीनिउ लोक थमाए ॥
खानि बानी खोजि के देखहु, थिर न कोई रहाए ।
खंड ब्रह्मांड खोजि देखहु, छूटे कतहूँ नाहिं ॥
साधु संग बिचारि देखो, जीव निसतरि जाहिं ।
ससि सुर रैन नहिं सारदा, तहँ तत्व परले नाहिं ॥
काल अकाल परले नहीं, तहँ संत बिरले जाहिं ।
तहँ के बिछुरे बहु कल्प बीते, परे भूमि भुलाए ॥
साधु संगति खोजि देखहु, बहुरि न उलटि समाए ।
ये झूलवे की भय नहीं, जो होय संत सुजान ॥
कहैं कबीर सतसुकृत मिले, तो बहुरि झूले आन ।

हिंडोला २

बहुबिधि चित्र बनाय के, हरि रचिउ क्रीड़ा रास ।
जाहि न इच्छा झूलिबे की, ऐसी बुद्धि केहि पास ॥
झूलत झूलत बहु कल्प बीते, मन नाहिं छाड़ै आस ।
रचो रहस हिंडोलवा, निसि चारिउ जुग चौमास ॥
कबहुँक ऊँचे कबहुंक नीचे, स्वर्ग भूमि ले जाए ।
अति भ्रमित भ्रम हिंडोलवा, नेकु नाहिं ठहराए ॥
डरपत हों यह झूलवे को, राखु यादवराए ।
कहैं कबीर गोपाल बिनती, सरन हरि तुम आए ॥

हिंडोला ३

लोभ मोह के खंभा दोऊ, मन से रच्यो हिंडोर ॥
झूलहिं जीव जहां जहं लगि, कतहुँ नहिं थिर ठौर ।
चतुर झूलहिं चतुरइया, झूलहिं राजा सेस ॥
चंद सूर्य दोऊ झूलहीं, उनहुंन आज्ञा भेस ।
लख चौरासी झूलहीं, रबिसुत धरिया ध्यान ॥

कोटि कल्प जुग बीतिया, अजहुं न माने हारि।
धरती अकासहि झूलहीं, झूलहिं पवना नीर॥
देह धरे हरि झूलहीं, देखहिं हंस कबीर।

हिंडोला समाप्तम्।

साखी प्रारम्भ।

साखी

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोय।
छठी तुम्हारी हौं जगा, तू कहँ चला बिगोय॥
सब्द हमारा तू सब्द का, सुनि मति जाहु सरक।
जो चाहो निज तत्त्व को, तो सब्दहि लेहु परख॥
सब्द हमारा आदिका, सब्दै पैठा जीव।
फूल रहन की टोकरी, घोड़े खाया घीव॥
सब्द बिना सुति आंधरी, कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावै सब्द का, फिर फिर भटका खाय॥
सब्द सब्द बहु अन्तरे, सार सब्द मथि लीजै।
कहैं कबीर जहँ सार सब्द नहिं, धृग जीवन सो जीजै॥
सब्दै मारा गिर परा, सब्दै छोड़ा राज।
जिन जिन सब्द बिवेकिया, तिनका सरिगो काज॥
सब्द हमारा आदिका, पल पल करहू याद।
अन्त फलेगी माहली, ऊपर की सब बाद॥
जिन जिन संमल ना कियो, अस पुरपाटन पाय।
झालि परे दिन आथये, संमल कियो न जाय॥
यहाँई संमल लेहुकर, आगे बिखयी बाट।
स्वर्ग बिसाहन सबचले, जहँ बनियाँनहिं हाट॥
जो जानह जिव आपना करह जीवको सार।

जियरा ऐसा पाहुना, मिलै न दूजी बार ॥
जो जानहु जग जीवना, जो जानहु सो जीव।
पानी पचवहु आपना, पानी माँगि न पीव ॥
पानी प्यावत क्या फिरो, घर घर सायर बारि।
तृखावंत जो होगया, पीवैगा झख मारि ॥
हंसा मोती बिकनिया, कंचन थार भराए।
जाको मर्म न जानहीं, ताको काह कराए ॥
हंसा बर्न सुबर्न तू, क्या बरनूँ मैं तोहिं
तरिवर पै पहेलि हो, तबै सराहूँ तोहिं ॥
हंसा तूँ तो सबल था, हलकी अपनी चाल।
रंग कुरंगी रंगिया, किया और लगवार ॥
हंसा सरवर तजि चले, देही पर गै सुन्न।
कहैं कबीर पुकारि के, तेही दर तेहि थुन्न ॥
हंसा बक यक रंगहो, चरैं हरियरे ताल।
हंस क्षीरते जानिये, बकहिँ धरैंगे काल ॥
काहे हरिनी दूबरी, येही हरियरे ताल।
लक्ष अहेरी यक मृगा, केतिक टारो भाल ॥
तीनलोक भौ पींजरा, पाप पुन्य भे जाल।
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल ॥
लोभै जन्म गवाँइया, पापै खाया पुन्न।
साखी सो आधी कहैं, तापर मेरा खुन्न ॥
आधी साखी सिरखड़ी, जो निरुवारी जाए।
क्या पंडितकी पोथिया, राति दिवस मिलिगाए ॥
पांच तत्वका पूतरा, जुक्ति रची मैं कीव।
मैं तोहि पूछौं पंडिता, सब्द बड़ा की जीव ॥

एक कला के बीछुरे, बिकल भया सब ठाँव ॥
रंगहि से रंग ऊपजै, सब रंग देखा एक ।
कौन रंग है जीवका, ताकर करहु विवेक ॥
जाग्रत रूपी जीव है, सब्द सोहागा सेत ।
जर्दबुन्द जल कूकुही, कहैं कबिर कोइ देख ॥
पांचतत्व लै इतनकीन्हा, सो तन लै काहि लै दीन्हा ।
करमहि के बस जीवकहतहैं, कर्महिके जिवदीन्हा ॥
पांच तत्व के भीतरे, गुप्त वस्तु अस्थान ।
विरल मर्म कोइ पाइहैं, गुरुके सब्द प्रमान ॥
सून्य तख्त अड़ि आसना, पिंड झरोखे नूर ।
ताके दिलमें हैं। बसों, सेना लिये हजूर ॥
हृदया भीतर आरसी, मुख देखा नहिं जाय ।
मुखतो तबही देखिहौ, जब दिल दुबिधा जाय ॥
ऊंचे गांव पहाड़ पर, औ मोटे की बाँह ।
कबीर अस ठाकुर सेइये, उबरिय जाकी छांह ॥
जेहि मारग गये पंडिता, तेई गये बहीर ।
ऊंची घाटी रामकी, तेहि चढ़ि रहा कबीर ॥
हे कबीर तैं उतरि रहु, सँमल परोहन साथ ।
संमल घटै औ पगु थकै, जीव बिराने हाथ ॥
घर कबीर का सिखरपर, जहां सलेहली गैल ।
पाँव न टिकै पिपोलका, खलको लादे बैल ॥
बिनु देखे वह देसकी, बात कहै सो कूर ।
आपै खारी खात है, बेचत फिरै कपूर ॥
सब्द सब्द सब कोइ कहै, ओतो सब्द बिदेह ।
जिभ्या पर आवै नहीं, निरखि परखि करि लेह ॥
परबत ऊपर हर बहै, घोड़ा चढ़ि बसै गांव ।

बिनफुल भौंरा रस चहै, कहु बिरवा को नाँव ॥
चंदन बास निवारहू, तुझ कारन बन काटिया।
जीवत जीव जनि मारहू, मूये सबै निपातिया ॥
चंदन सर्प लपेटिया, चंदन काह कराए।
रोम रोम बिस भीनिया. अमृत कहां समाए ॥
ज्यों मुद्दा समसान सिल, सबै रूप समसान।
कहैं कबीर सावज गनिहि, तबकी देखि भुकान ॥
गही टेक छोड़े नहीँ, जीभ चोंच जरि जाए।
ऐसा तप्त अंगार है, ताहि चकोर चबाए ॥
चकोर भरोसे चंद्र के, निगले तप्त अंगार।
कहैं कबीर डाहे नहीं, ऐसी वस्तु लगार ॥
झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटे न काहु।
गोरख अटके कालपुर, कौन कहावे साहु ॥
गोरख रसिया जोगके, मुये न जारी देह।
मास गली माटी मिली, कोरी मांजी देह ॥
बनते भागि बिहड़े परा, करहा अपनी बान।
बेदन करहा कासों कहै, को करहा को जान ॥
बहुत दिवसते हींड़िया, सून्य समाधि लगाए।
करहा पड़िगा गाढ़ में, दूरि परा पछिताए ॥
कबिरा भर्म न भाजिया, बहुबिधि धरिया भेख।
सांई के परिचावते, अंतर रहगई रेख ॥
बिनु डांटे जग डांटिया, सोरठ परिया डांट।
बाँटन हारा लोभिया, गुरुते मीठी खांड़ ॥
मलयागिर के बाससे, बृक्ष रहा सब गोए।
कहबे को चन्दन भया, मलयागिर ना होए ॥
मलयागिर के बासमें, बेधा ढाक पलास।

बेना कबहुं न बिंधिया, जुग जुग रहिया पास ॥
चलते चलते पगु थके, नगर रहा नौ कोस ।
बीचहि में डेरा परा, कहो कौनको दोस ॥
झार्कि परे दिन आथये, अंतर परिगे सांझ ।
बहुत रसिकके लागते, बेस्या रह गै बांझ ॥
मन कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जांव ।
छव मास के हींडते, आध कोस पर गांव ॥
गिरही तजिके भये उदासी, तपको बनखंड जाए ।
चोली थाकी मारिया, बेरइन चुनि चुनि खाए ॥
राम नाम जिन चीन्हिया, झीना पिंजर तासु ।
नैन न आवे नींदरी, अंग न जामे मासु ॥
जोजन भीजै रामरस, बिगसित कबहुं न रूख ।
अनुभव भावना दरसहीं, ते नर सूख न दूख ॥
काटे आप न मोरसी, फाटे जुटे न कान ।
गोरख पारस परसे बिना, कौने को नुकसान ॥
पारस रूपी जीव है, लोह रूप संसार ।
पारसते पारस भया, परख भया टकसार ॥
प्रेम पाटका चोलना, पहिर कबीरा नाच ।
पानिप दीन्हो तासुको, तन मन बोलै सांच ॥
दर्पन केरी गुफामें, सोनहा पैठा धाए ।
देखि प्रतिमा आपनी, भूकि भूकि मरि जाए ॥
ज्यों दर्पन प्रतिबिम्ब देखिये, आप दुहुनमा सोए ।
या ततसे वा तत होवे, याही से वह होए ॥
जो जाना साफ सूझते, रसिया लाल कराए ।
अब कबीर फांजी परे, पन्थी आवे जाए ॥
दोहरा तो नेतन भया, पदहि ना चीन्है कोए ।

जिन्ह यह शब्द बिवेकिया, छत्र धनी है सोए ॥
कबिरा जात पुकारिया, चढ़ि चन्दन की डार ।
बाट लगाये ना लगे, पुनि का लेत हमार ॥
सबते सांचा है भला, जो सांचा दिल होए ।
सांच बिना सुख नाहिना, कोटि करै जो कोए ॥
सांचा सैादा कीजिये, अपने मनमें जान ।
सांचा हीरा पाइये, झूठे मूलहु हान ॥
सुकृत बचन मानै नहीं, आपु न करै बिचार ।
कहैं कबीर पुकारके, सपनेहु गया संसार ॥
आगि जो लगी समुद्रमें, धुंआ प्रगट न होए ।
की जानैं जो जरिमुवा, की जाकी लाई होए ॥
लाई लावनहार की, जाकी लाई पर जरै ।
बलिहारी लावनहार की, छप्पर बाचै घर जरै ॥
बूंद जो परा समुद्रमें, सो जानत सब कोए ।
समुद्र समाना बूंद में, जानत बिरला कोए ॥
जहर जिमी दै रोपिया, अमी सींचै सौ बार ।
कबिरा खलक ना तजै, जामें जैान बिचार ॥
घौंकी डाही लाकड़ी, वो भी करै पुकार ।
अब जो जाय लोहार घर, डाहै दूजी बार ॥
बिरह की ओदी लाकड़ी, सपचै ओ धुधुवाए ।
दुखसे तबहीं बाँचिहौ, जब सकलौं जरिजाए ॥
बिरह बान जेहि लागिया, ओखद लगे ना ताहि ।
सुसुकि सुसुकिमरि मरिजिये, उठे करांहि करांहि ॥
सांचा सब्द कबीर का, हृदया देखु बिचार ।
चित दे के समुझै नहीं, मोहिं कहत भये जुग चार ॥
जो तू सांचा बानियां, सांची हाट लगाय ॥

अँदर झाड़ू देइ के, कूरा दूरि बहाव ॥
कोठो तो है काठ की, ढिग ढिग दीन्हो आग ।
पंडित जरि झोला भये, साकठ उबरे भाग ॥
सावन केरा सेहरा, बूँद परा असमान ।
सारी दुनिया बैस्नवभई, गुरुनहि लागा कान ॥
ढिग बूड़ा उतरा नहीं, याही अंदेसा मोहि ।
सलिल मोहकी धारमें, क्या निंद आईतोहि ॥
साखी कहै गहै नहीं, चाल चली नहि जाए ।
सलिल धार नदिया बहै, पांव कहां ठहराए ॥
कहता तो बहुतै मिला, गहता मिला न कोए ।
सो कहता बहिजान दे, जो ना गहता होए ॥
एक एक निरुवारिये, जो निरुवारी जाए ।
दो मुख केरा बोलना, घना तमाचा खाए ॥
जिभ्या केरे बंद दे, बहु बोलना निवार ।
सोपारखीके संगकरु, गुरुमुख सब्द बिचार ॥
जाको जिभ्या बंध नहिं, हृदया नाहीं साँच ।
ताके संग न लागिये, घाले बटिया माँझ ॥
प्रानीतो जिभ्या डिगा, छिन छिन बोल कुबोल ।
मन घाले भरमत फिरै, कालहि देत हिंडोल ॥
हिलगी भाल सरीर में, तीर रहा है टूट ।
चुम्बक बिना न नीकरै, कोटि पाहनगये छूट ॥
आगे सीढ़ी सांकरी, पाछे चकना चूर ।
परदा तरकी सुन्दरी, रही धका से दूर ॥
संसारी समय बिचारी, क्या गिरही क्या योग ।
औसर मारे जात हैं, चेत बिराने लोग ॥
संसय सब जग खण्डिया, संसय खण्डै न कोए ।

सन्सय खन्डै सो जना, जो सब्द बिबेकी होए॥
बोलन है बह भांतिका, नैन कछू ना सूझै।
कहैं कबीर विचारके, घट घट बानी बूझ॥
मूल गहेते काम है, ते मत भर्म भुलाए।
मन सायर मनसा लहरि, बहि कतहूं मति जाए॥
भंवर बिलंबे बागमें, बहु फूलन की बास।
जीव बिलंमे बिसय में, अंतहु चले निरास॥
भँवर जाल बगुजाल है, बूड़े बहुत अचेत।
कहैं कबीर ते बांचि हैं, जाके हृदय बिवेक॥
तीनलोक तीड़ी भई, उड़ जो मनके साथ।
हरिजन हार जानेबिना, परे कालके हाथ॥
नाना रंग तरंग है, मन मकरन्द असूझ।
कहैं कबीर बिचार के, अकिल कलाले बूझ॥
बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मनसाथ।
नाना नाच नचाय के, राखे अपने हाथ॥
ई मन चंचल चोर, ई मन सुद्ध ठगहार।
मन मन करि सुर नर मुनि जहंडे, मन के लक्ष दुआर॥
बिरह भुअंगम तन डसो, मंत्र न मानै कोए।
राम बियोगी ना जिये, जिये तो बाउर होए॥
राम बिजोगी बिकलतन, इन्है दुखवै मत कोए।
छूवत ही मरि जांयगे, ताला बेली होए॥
बिरह भुवंगम पैठिके, कीन्ह करेजो घाव।
साधू अंग न मोरि है, ज्यों भावे त्यों खाव॥
करक करेजे गड़िरहा, बचन वृक्षकी फांस।
निकसाये निकसै नहीं, रही सो काहू गांस॥

बिरले ते जन बाँचि हैं, रामहिं भजै बिचार ॥
काल खड़ा सिर ऊपरे, जागु बिराने मीत ।
जाका घर है गैलमें, सो क्यों सोवे निश्चीत ॥
कलकाठी काला घुना, जतन जतन घुनखाए ।
काया मध्ये काल बस, मर्म न कोई पाए ॥
मन माया की कोठरी, तन संसय का कोट ।
बिसहर मंत्र माने नहीं, काल सर्प की चोट ॥
मन माया तो एक है, माया मनहिं समाए ।
तीन लोक संसय परी, काहि कहों समुझाए ॥
बेढ़ा दीन्हा खेतको, खेतहि बेढ़ा खाए ।
तीनलोक संसय परी, मैं काहि करों समुझाए ॥
मनसायर मनसा लहरि, बूड़े बहुत अचेत ।
कहैं कबीर ते बांचि हैं, जाके हृदय विवेक ॥
सायर बुद्धि बनाय के, बाय बिचक्षन चोर ।
सारी दुनिया जहड़े गई, कोई न लागा ठौर ॥
मानुस होके न मुआ, मुआसो डांगर ढोर ।
ऐको जीव ठौर नहिं लागा, भया सो हाथी घोर ॥
मानुस ते बड़ पापिया, अक्षर गुरुहि न मान ।
बार बार बन कूकुही, गर्भ धरे औधान ॥
मानुस विचारा क्या करे, कहे न खुले कपाट ।
सोनहा चौक बैठायके, फिर फिर ऐपन चाट ॥
मानुस बिचारा क्या करै, जाको सून्य सरीर ।
जो जिव झांकि न ऊपजे, तो काहि पुकार कबीर ॥
मानुष जन्म नर पायके, चूके अबकी घात ।
जाय परे भवचक्र में, सहै घनेरी लात ॥
रतन जतन की यतन करु, माटी का सिंगार ।

आया कबीरा फिगरिया, झूठा है हंकार ॥
मानुस जन्म दुर्लभ अहै, बहुरि न दूजीबार ॥
पक्का फल जो गिर पड़ा, बहुरि न लागै डार ॥
बाँह मरोरे जातहो, सोवत लिये जगाए ।
कहैं कबीर पुकारिके, पैड़े हीके जाए ।
साखि पुलंदर ढहिपरे, विवि अक्षर जुग चार ॥
रसना रम्मन होत है, करि न सकै निरुवार ।
बेड़ा बांधिन सर्प का, भवसागर के माँह ॥
जो छोड़े तो बूड़ई, गहै तो डसिहै बाँह ।
हाथ कटोरा खोआ भरा, मग जोहत दिन जाए ॥
कबिरा उतरा चित्तसे, छाँड़ दियो नहिं जाए ।
एक कहौं तो है नहीं, दुइ कहौं तो गारि ॥
है जैसा तैसा रहै, कहैं कबीर विचारि ।
अमृत केरी पूरिया, बहु विधि दीन्हा छोर ॥
आप सरीखा जो मिलै, ताहि पिआवहु घोर ।
अमृत केरी मोटरी, सिर से धरी उतार ॥
जाहि कहौं मैं एक है, मोहिं कहै दुइ चार ।
जाको मुनिवर तप करै, बेद थके गुनगाए ॥
सोई देउँ सिखापना, कोई नहीं पतिआय ।
एकते हुआ अनन्त, अनन्त ते एकहि आए ॥
एकते परिचय भई, एके माहि अनन्त समाए ।
एक शब्द गुरुदेवका, ताका अनन्त विचार ॥
थाके मुनिवर पंडिता, बेद न पावैपार ।
राउरा के पिछवारे, गावै चारिउ सैन ॥
जीव पपरा बहु लूटमें, ना कछु लेन न देन ।
चौगोशा के देखते, व्याधा भागा जाए ॥

अचरज एक देखो हो संतो, मुवा काल को खाय।
तीनलोक चोरी भई, सबका सरबस लीन्ह॥
बिना मूड़का चोरवा, परा न काहू चीन्ह।
चक्की चलती देखिके, नयनन आया रोए॥
दो पट भीतर आयके, साबुत गया न कोए।
चार चोर चोरी चले, पग की पनही उतार॥
चारो दर थूनी हनी, पंडित करहु बिचार।
बलिहारी वह दूध की, जामें निकसै घीव॥
आधी साखी कबीर की, चार बेद का जीव।
बलिहारी तेहि पुरुस की, परचित परखन हार॥
साँई दीन्हा खाँड को, खारी बूझ गँवार।
बिस के बिरवे घर किया, रहा सर्प लपटाय॥
ताते जियरे डर भया, जागत रैन बिहाए॥
जोई घर है सर्प का, सो घर साधन होए।
सकल संपदा लय गई, बिस भर लागा सोए॥
घुंघुची भरके बोइये, उपजे पसेरी आठ।
डेरा परा काल का, साँझ सकारे जात॥
मन भरके बोइये, घुंघुची भरना होए।
कहा हमार मानै नहीं, अंतहु चला बिगोए॥
आपा तजै हरि भजै, नख सिख तजै बिकार।
सब जीवन से निरभै रहै, साधु मता है सार॥
पच्छा पच्छी के कारने, सब जग रहा भुलान।
निरपच्छ होके हरि भजै, सोई संत सुजान॥
बड़े ते गये बड़ापने, रोम रोम हंकार।
सतगुरु की परिचय बिना, चारो बरन चमार॥
माया तजे तो क्या भया, जो मान तजा नहिं जाए।

जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सभन को खाए ॥
माया के झक जगजरै, कनक कामिनी लाग ।
कहैं कबीर कस बांचिहो, रुई लपेटी आग ॥
माया जग साँपिनि भई, विस ले पैठि पतार ।
सब जग फंदे फंदिया, चले कबीरू काछ ॥
साँप बिछू का मन्त्र है, माहुर झारा जाए ।
विकट नारि के पाले परा, काटि करेजा खाए ॥
तामस केरी तीनगुन, भौंर लेइ तहँ बास ।
एकै डार तीन फल, भांटा ऊख कपास ॥
मन मतंग गैजर हनै, मनसा भई सचान ।
जंत्र मंत्र मानै नहीं, लगै सो उड़ि उड़ि खान ॥
मस्त गजेन्द्र मानै नहीं, चलै सुरति के साथ ।
दीन महावत क्या करै, जो अंकुस नहीं हाथ ॥
ई माया है चूहड़ी, औ चूहड़े की जोए ।
बाप पूत अरुझायके, संग न काहु के होए ॥
कनक कामिनी देखिके, तू मतिभुलहु सुरङ्ग ।
मिलन बिछुरन दोउ हेलरा, जस केचुलि तजत भुजंग ॥
माया केरी बस परे, ब्रह्मा विस्नु महेस ।
नारद सारद सनक सनंदन, गौरीपुत्र गनेस ॥
पीपरि एक महागम्भिनी, ताकरमर्म कोइमहिं जानि ।
डारलब फल कोइनपाय, खसम अछतबहुपीपरिजाए ॥
साहूसे भौ चोरवा, चोरहि से भौ हिस्त ।
तब जानहुगे जीयरा, जब मार परैगी तुम्झ ॥
ताकी पूरी क्यों परै, गुरु न लखाई बाट ।
ताकि बेड़ा बूड़ि है, फिर फिर औघट घाट ॥
[illegible]

अंधे को अंधा मिला, राह बतावे कौन ॥
जाको गुरु है आँधरा, चेला काह कराए।
अंध अंधा पेलिया, दूनो कूप पराए॥
लोगों केरी अथाइया, मत कोइ पैठो धाए।
एकै खेत चरत है, बाघ गदहरा गाए॥
चार मास घन बरसिया, अति अपूर बल नीर।
पहिरे जड़वत बस्तरी, चुभे न एको तीर॥
गुरुकी मैली जिव डरै, काया सीचन हार।
कुमति कमाई मन बसै, लाग जुवाकी लार॥
तन संसय मन सोनहा, काल अहेरी नित्त।
एकै डांग बसेरवा, कुसल पुछो का मित्त॥
साहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मति का हीन।
पारख बिना बिनास है, करि विचार रहु मौन॥
गुरु सिकलीगर कीजिये, मनहि मसकला देए।
सब्द छोलना छोलि के, चित दर्पन करि लेए॥
मूरख के सिखलावते, ज्ञान गाँठ का जाए।
कोइला होइ न ऊजरा, सौ मन साबुन लाए॥
मूढ़ कर्मिया मानवा, नख सिर पाखरि आहि।
बाहनहारो क्या करे, बान न लागे ताहि॥
सेमर केरा सूवना, छिवले बैठो जाए।
चोंच संवारे सिर धुनै, ई उस ही को भाए॥
सेमर सुवना बेगितजु, घनी बिगुरची पाँख।
ऐसा सेमर जो सेवै, हृदया नाहीं आँख॥
सेमर सुवना सेइया, दुइ ढेंढी की आस।
ढेंढी फूटि चटाक दे, सुवना चला निरास॥
लोग भरोसे कवन के, बैठ रहे अरगाए।

ऐसे जियरा जम लुटै, जस मेंडहि लुटै कसाए ॥
समुझि बूझि जड़ हो रहै, बल तजि निर्बल होए।
कहैं कबीर ता संगको, पला न पकड़े कोए ॥
हीरा सोइ सराहियो, सहै घनन की चोट।
कपट कुरंगी मानवा, परखत निकरा खोट ॥
हरि हीरा जन जौहरी, सबन पसारी हाट।
जब आवे मन जौहरी, तब हीरों की साट ॥
हीरा तहाँ न खोलिये, जहँ कुँजरों की हाट।
सहजहि गांठी बांधिये, लगिये अपनी बाट ॥
हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय।
बहुतक मूरख पचि मुये, कोइ पारखी लिया उठाय ॥
हीराकी ओबरि नहीं, मलयागिर नहिं पंत।
सिंहोंके लेहँड़ा नहीं, साधु न चलैं जमात ॥
अपने अपने सिर्रोंका, सबन कीन्ह है मान।
हरिकी बात दुरंतकी, परी न काहू जान ॥
हाड़ जरे जस लाकड़ी, बार जरै जसघास।
कबिरा जरै रामरस, जस कोठिन जरै कपास ॥
घाट भुलाना बाट बिनु, भेस भुलाना कान।
जाको माड़ी जगत में, सो न परा पहिचान ॥
मूरख से क्या बोलिये, सठ से कहा बसाय।
पाहन में क्यों मारिये, चोखा तीर नसाए ॥
जैसो गोली गुमजकी, नीच परे ढहराय।
तैसो हृदय मूर्खका, सब्द नहीं ठहराए ॥
ऊपर की [illegible] गई, हियहु की गई हेराय।
कहैं कबीर जाकी चारों गई, ताको कौन उपाय ॥
[illegible] ऐसे गया अनरूचे [illegible] का [illegible]

ऊसर बीय न ऊपजै, जो घन बरसै मेह ॥
मैं रोवों यह जगतको, मोको रोवै न कोए।
मोको रोवै सो जना, जो सब्द बिवेकी होए ॥
साहिब साहेब सब कहैं, मोहि अंदेसा और।
साहेब से परिचय नहीं, बैठेंगे केहि ठौर ॥
जीव बिना जिवबांचे नहीं, जीवको जीव अधार।
जीव दया करि पालिये, पंडित करहु बिचार ॥
हमतो सबही की कही, मोको कोइ न जान।
तबभीअच्छा अब भी अच्छा, जुगजुग होउँन आन ॥
प्रगट कहों तो मारिया, परदे लखै न कोय।
सुनहा छिपा पयारतर, को कहि बैरी होए ॥
देस विदेसै हैं। फिरा, मनही भरा सुकाल।
जाको ढूँढ़त हैं। फिरा, ताको परा दुकाल ॥
कलि खोटा जग आंधरा, सब्द न मानै कोए।
जाहि कहैं। हित आपना, सो उठि बैरी होए ॥
मसि कागद छूवों नहीं, कलम गहों नहिं हाथ।
चारिउ जुग के महातमा, कबीर मुखिह जनाई बात ॥
फहम आगे फहम पाछे, फहम दहिने डेरी।
फहम पर जो फहम करै, सो फहम है मेरी ॥
हद्द चले सो मानवा, बेहद चलै सो साघ।
हद बेहद दोऊ तजै, ताकर मता अगाध ॥
समुझे की गति एक है, जिन समझा सब ठौर।
कहैं कबीर ये बीचके, बलकहिं औरहि और ॥
राह बिचारी क्याकरै, पंथि न चलै बिचार।
अमता मारग छोड़के, फिरै उजार उजार ॥
मवा है मरि जाहुगे, मये को बाजी ढोल।

स्वप्न सनेही जग भया, सहिदानी रहिगो बोल ॥
मुवा है मरि जाहुगे, बिन सिर थोथे भाल ।
परेहु करायल वृक्षतर, आज मरहु की काल ॥
बोल हमारा पूर्वका, हमको लखे न कोए ।
हमको तो सोई लखै, जो धूर्त पूरब का होए ॥
जा चलते रौदे परा, धरती होय बेहाल ।
सो सावत घामे जरे, पंडित करो विचार ॥
पाहन पुहुमी नापते, दरिया करते फाल ।
हाँथन पर्वत तौलते, तेहि धरि खायो काल ॥
नवसत दूध बहोरि के, दिपके किया विनाश ।
दूध फाटि काँजी भया, भया घृत्त का नाश ॥
केतना मनावों पाँवपरि, कितनो मनावों रोए ।
हिंदू पूजै देवता, तुरक न काहू होए ॥
मानुस तेरा गुन बड़ा, मासु न आवे काज ।
हाड़ न होते आभरन, त्वचा न बाजन बाज ॥
जो मोहिं जाने, ताहि मैं जानो ।
लोक बेद का, कहा न मानो ॥
सबकी उतपति धरती में, सब जीवन प्रतिपाल ।
धरती न जानती आपगुन, ऐसा गुरु विचार ॥
धरती न जानती आपगुन, कभी न होती डोल ।
तिलतिल होती गारुआ, हती टिकोकी मोल ॥
जहिया किरतम ना हता, धरती हती न नीर ।
उत्पति परलय ना हती, तबकी कही कबीर ॥
जहाँ बोलत तहँ अक्षर आया, जहँ अक्षर तहँ मनहिं दृढ़ाय ॥
बोल अबोल एकहै सोई, जिन्ह यह लखा सो बिरला होई ॥
तोलें [illegible] जगमसे, जोलें उगे [illegible]

तौलौं जीव कर्मबस डोलै, जौलौं ज्ञान न पूर॥
नाम न जाने गाँव का, भूला मारग जाए।
काल पड़ेगा काँटवा, अगमन कसन कराए॥
संगत कीजै साधुकी, हरै और का व्याध।
ओछी संगत क्रूर की, आठौ पहर उपाध॥
संगति से सुख ऊपजै, कुसंगतिसे दुख होए।
कहैं कबीर तहँ जाइये, जहँ संगति अपनी होए॥
जैसी लागी ओर की, वैसी निबहै छोर।
कौड़ी कौड़ी जोर के, पूंजी लाख करोर॥
आज काल दिन एक में, अस्थिर नहीं सरीर।
कहैं कबीर कसराखिहो, जस काचे बासननीर॥
वह बंधन से बाँधिया, एक बिचारा जीव।
की बल छूटे आपने, किया छुड़ावै पीव॥
जिव मति मारहु बापुरा, सबका एकै प्रान।
हत्या कबहुँ न छूटि है, जो कोटिन सुनो पुरान॥
जीव घात ना कीजिये, बहुरिलेत वह कान।
तीरथ गये न बांचिहो, कोटि हीरा देव दान॥
तीरथ गये तीन जना, चितचंचल मन चोर।
एको पाप न काटिया, लादिन दसमन और॥
तीर्थ गयेते वहि मुए, जूड़े पानी नहाए।
कहैं कबीर सुनो होसंतो, राक्षस होय पछिताए॥
तीर्थ भई विस बेलरी, रही जुगन जुग छाए।
कबिरन मूल निकंदिया, कौन हलाहल खाए॥
हे गुनवंती बेलरी, तव गुन बरनि न जाए।
जरकाटे ते हरियरी, सींचे ते कुम्हिलाए॥
बेल कुढंगी फल बुरो, फुलवा कुबुधि बसाए।

वो विनस्टी तू मरी, सरोपात करुवाए ॥
पानीते अति पातला, धूआंते अति झीन।
पवनहुते उतावला, दोस्त कबीरा कीन्ह ॥
सतगुरु बचन सुनोहो संतो, मतलीजे सिरभार।
हौं हजूर ठाढ़ कहत हों, अबतैं समर संभार ॥
वो करुवाई बेलरी, औ करुवा फल तोर।
सिंधु नाम जबपाइये, बेलि बिछोहा होर ॥
सिद्ध भया तो क्या भया, चहुँदिस फूटी बास।
अंतर वाके बीज है, फिर जामन की आस ॥
परदे पानी ढारिया, संतो करो बिचार।
सरमा सरमी पचि मुआ, काल घसीटन हार ॥
आस्तिकहोंतोकोइनपतीजै, बिना अस्तिका सिद्ध।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, हिरहि हीरी छिद्ध ॥
सोना सज्जन साधुजन, टूटि जुटहिं सौबार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार का, एकै धका दरार ॥
काजर केरी कोठरी, बूड़त है संसार।
बलिहारी तेहि पुरुस की, पैठिके निकसन हार ॥
काजर ही की कोठरी, काजर ही का कोट।
तोदी कारी ना भई, रहा सो वोटहि वोट ॥
अब खर्ब लौं द्रव्य है, उदयअस्त लौं राज।
भक्ति महातम ना तुलै, ई सभ कौने काज ॥
मच्छ बिकाने सब चले, धीमर के दरबार।
अखियाँ तेरी रतनारी, तू क्यों पहिरा जार ॥
पानी भीतर घर किया, सेज्या किया पतार।
पासा परा करीम का, तब मैं पहिराजार ॥
मच्छ होय नहि बांचिहो, धीमर तेरा काल।

जेहि जेहि डाबर तुम फिरे, तहँ तहँ मेलै जाल ॥
बिनुरसरी गर सब बँधा, ताते बँधा अलेख ।
दीन्हो दर्पन दस्त में, चस्म बिना क्या देख ॥
समुझाये समुझै नहीं, पर हथ आपु बिकाए ।
मैं खैंचत हों आपुको, चलासो जमपुर जाए ॥
नित खरसान लोहा गुन छूटै,
नितकी गोस्ट माया मोह टूटै ॥
लोहा केरी नावरी, पाहन गरुवा भार ।
सिरपर बिसकी मोटरी, चाहे उतरन पार ॥
कृस्न समीपी पंडवा, गले हिवारे जाए ।
लोहा को पारस मिलै, तो काहेको काई खाए ॥
पूरब ऊगे पस्चिम अथवै, भखे पवन का फूल ।
ताहू को तो राहू ग्रासै, मानुख काहेके भूल ॥
नैनन आगे मन बसै, पलक पलक करे दौर ।
तीनलोक मन भूप है, मन पूजा सब ठौर ॥
मन स्वारथी आप रस, बिखयल हरि फहराए ।
मनके चलाये तन चलै, ताते सरबस जाए ॥
कैसी गति संसार की, ज्यों गाड़र की ठाट ।
एक परी जो गाड़ में, सबै गाड़ में जात ॥
मारग तो वह कठिन है, वहाँ कोइ मत जाए ।
गये ते बहुरै नहीं, कुसल कहै को आए ॥
मारी मरै कुसंग की, केरा साथे बेर ।
वो हाले ये चींथरैं, बिधिना संग निबेर ॥
केरा तबहिन चेतिया, जब ढिग लागी बेर ।
अबके चेते क्या भया, जब कांटन लीन्हा घेर ॥
जीव मर्म जाने नहीं, अंध भये सब जाए ।

बाढी द्वारे दादि नहीं, जन्म जन्म पछिताए ॥
जाको सतगुरु ना मिला, ब्याकुल दहु दिसधाए ।
आंखि न सूझै बावरा, घर जरै घूर बुताए ॥
वस्तू अंतै खोजे अंतै, क्योंकर आवै हाथ ।
सज्जन सोई सराहिये, पारख रक्खै साथ ॥

सुनिये सब की, निबेरिये अपनी ।
सेंधुर का सेंधौरा, झपनी की झपनी ॥

बाजन दे बाजंतरी, कल कुकूही मत छेड़ ।
तुझै बिरानी क्या परी, तू अपनी आप निबेर ॥
गावैं कथै बिचारै नाहीं, अनजाने का दोहा ।
कहैं कबीरपारस परसैबिन, जसपाहन भीतरलोहा ॥
प्रथम एक जोहौं किया, भयोसे बारह बान ।
कसत कसौटी ना टिका, पीतर भया निदान ॥
कबिरन भक्ति बिगारिया, कंकर पत्थर धोए ।
अंतर में बिसराखिके, अमृत डारिन खोए ॥
रही एकको भै अनेक की, वेस्या बहुत भतारी ।
कहैं कबीर काके संगजरिहैं, बहु पुरुसन की नारी ॥
तन वोहित मन काग है, लक्ष जोजन उड़िजाए ।
कबहीं भरमें अगम दरिया, कबहीं गगन समाए ॥
ज्ञान रतन की कोठरी, चुम्बक दीन्हो ताल ।
पारखी आगे खोलिया, कुंजी बचन रसाल ॥
स्वर्ग पताल के बीचमें, दुई तुमरी एक बिद्धि ।
खट दर्सन संसयपरा, लख चौरासी सिद्धि ॥
सकलो दुरमति दूरकर, अच्छा जन्म बनाव ।
काग गवन गति छोड़के, हंस गवन चलिआव ॥
जैसी कहै करै जो तैसी, राग दोस निरुवारै ।

जामें घटै बढ़ै रतियो नहिं, वोहि बिधि आप सँवारे ॥
द्वारे तेरे राम जी, मिलो कबीरा मोहिं।
तैतो सबमें मिलिरहा, मैं न मिलूँगा तोहिं ॥
भर्म बढ़ा तिहुँलोक में, भर्म भंडा सब ठाँव।
कहै कबीर बिचार के, बसेहु भर्म के गाँव ॥
रतन अड़ाइन रेत में, कंकर चुनि चुनि खाए।
कहैं कबीर पुकार के, पिछे होय के जाए ॥
जेते भार वनसंपती, औ गंगा की रैन।
पंडित बिचारा क्याकहै, कबीर कही मुख बैन ॥
हौं जानो कुलहंस हो, ताते कीन्हा संग।
जो जानते बक बावला, छुवै न देतेउँ अंग ॥
गुनवंता गुन को गहै, निरगुनिया गुनहिघिनाए।
बैलहि दीजे जायफर, क्या बूझै क्या खाए ॥
अहिरहु तजी खसमहु तजी, बिना दाँत की ढोर।
मुक्तिपरे बिललात है, बिन्दावन की खोर ॥
मुखकी मीठी जो कहै, हृदया है मतिआन।
कहैं कबीर ता लोग से, रामहु अधिक सयान ॥
इतते सबकोई गये, भार लदाए लदाए।
उतते कोई न आइया, जासो पूछिय धाए ॥
भक्ति पियारी रामको, जैसी पियारी आगि।
सारा पाटन जरिमुआ, बहुरि ल्यावै माँगि ॥
नारि कहावै पीवकी, रहे और संग सोए।
जारमीत हृदया बसे, खसम खुसी क्यों होए ॥
सज्जन से दुरजन भया, सुनि काहू के बोल।
काँसा ताँबा होइरहा, हता टिकोका मोल ॥
बिरहिन साजी आरती, दर्सन दीजे राम।

मूये दर्सन देहुगे, आवै कौने काम ॥
पलमें परलय बीतिया, लोगहि लागु तुमारि ।
आगल सोच निवारि के, पाछल करो गोहारि ॥
एक समाना सकल में, सकल समाना ताहि ।
कबीर समाना बूझमें, जहाँ दुतिया नाहिँ ॥
एकसाधे सब साधिया, सब साधे एक जाए ।
जैसा सीचे मूलके, फूलै फरै अघाए ॥
जेहिबन सिंह न चरे, पंछी ना उड़ि जाए ।
सो बन कबीर न हीँड़िया, सून्य समाधि लगाए ॥
सांच कहैं। तो है नहीं, झूठहि लागु पियारि ।
मो सिर ढारै ढेकुली, सींचै और की क्यारि ॥
बाली एक अमोल है, जो कोइ बोले जान ।
हिया तराजू तौलके, तब मुख बाहर आन ॥
करबहिया बल आपनी, छोड़ बिरानी आस ।
जाके अंगना नदिया बहैं, सो कस मरै पियास ॥
वो तो वैसाही हुआ, तू मत होहु अयान ।
जै निर्गुनिया तै गुनवंता, मत एकहिमें सान ॥
जो मतवारे राम के, मगन होय मन माँहि ।
ज्यों दर्पन की सुन्दरी, गहे न आवै बाँहि ॥
साधू होना चाहिये, तो पक्के होके खेल ।
कच्चा सरसों पेरिके, खरी भया नहिं तेल ॥
सिंहों केरी खोलरी, मेंढा पैठा धाए ।
बानीसे पहचानिये, सब्दहि देत लखाए ॥
जेहि खोजत कल्पो गया, घटहि माहिसो मूर ।
बाढ़ी गर्व गुमान ते, ताते परिगो दूर ॥

रहबे को आचरज है, जात अचंभौ कौन ॥
रामहि सुमिरे रन भिरे, फिरै औरकी गैल।
मानुस केरी खोलरी, ओढ़े फिरत है बैल ॥
खेत भला बीजों भला, बोइये मूठी फेर।
काहे बिरवा रूखरा, ये गुन खेतहि केर ॥
गुरु सीढ़ी से ऊतरे, सब्द बिमूखा होए।
ताको काल घसीटि है, राखि सके नहिं कोए ॥
झुझुरी घाम बसै घट माहीं।
सब कोई बसै सोग की छाहीं ॥
जोमिला सो गुरु मिला, सिष्य मिला नहिं कोए।
छौ लाख छानबे रमैनो, एक जीव पर होए ॥
जहँ गाहक तहँ हौं नहीं, हौं तहँ गाहक नाहिं।
बिन बिवेक भटकत फिरे, पकड़ि सब्द की छाहिं ॥
नग पखान जग सकल है, पारख बिरला कोए।
नगते उत्तम पारखी, जगमें बिरला होए ॥
सपने सोया मानवा, खोलि जो देखा नैन।
जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन ॥
नस्टै का यह राज है, नफर की बरते तेज।
सार सब्द टकसार है, हृदया माँहि बिबेक ॥
जबलगबोलातबलगडोला, तबलगधन ब्योहार।
डोला फूटा बोला गया, कोई न झांके द्वार ॥
कर बंदगी बिवेक की, भेस धरे सब कोए।
सो बंदगी बहि जानदे, जहँ सब्द बिवेकी न होए ॥
सुर नर मुनि औ देवता, सात दीप नव खंड।
कहैं कबीर सब भोगिया, देह धरे को दंड ॥
जब लगदिलपर दिल नहीं, तब लग सब सुख नाहिं।

चारिउ जुगन पुकारिया, सो स्वरूप दिल माहिँ ॥
जंत्र बजावत हौं सुना, टूटि गया सब तार।
जंत्र बिचारा क्या करे, गया बजावन हार ॥
जो तूं चाहे मूझको, छाड़ सकल की आस।
मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास ॥
साधु भया तो क्या भया, बोले नाहिं बिचार।
हतै पराई आतमा, जीभ बाँधि तलवार ॥
हंसा के घट भीतरे, बसै सरोवर खोट।
चलै गाँव जहँवाँ नहीं, तहाँ उठावन कोट ॥
मधुर वचन हैं औसधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार होय संचरे, सालै सकल सरीर ॥
ढाढ़स देखो मर जीवको, धो जुड़ि पैठि पताल।
जीव अटक मानै नहीं, ले गहि निकरा लाल ॥
ई जग तो जहड़े गया, भया जोग न भोग।
तील झारि कबिरा लेई, तिलाटी झारे लोग ॥
येमरजीवा अमृत पीवा, क्या धसि मरसि पतार।
गुरुकी दया साधु की संगति, निकरि आव एहि द्वार ॥
केते बुन्द हलफो गये, केते गये बिगोए।
एक बुन्द के कारने, मानुस काहे को रोए ॥
आगि जो लगी समुद्र में, टूटि टूटि खसे झोल।
रोवै कबिरा डाँफिया, मोर हीरा जरै अमोल ॥
छौ दर्सनमें जो परमाना, तासु नाम बनवारी।
कहैं कबीरसबखलकसयाना, यामें हमहिं अनारी ॥
सांचे स्राप न लागै, सांचे काल न खाए।
साँचहि साँचा जो चले, ताको काह नसाए ॥
पूरा साहेब सेइये, सब बिधि पूरा होए ॥

वोछहि नेह लगायके, मूलहु आयो खोए॥
जाहु बैद घर आपने, बात न पूछै कोए।
जिन्ह यह भार लदाइया, निरवाहेगा सोए॥
औरन के सिखलावते, मोहड़न परगई रेत।
रास बिरानी राखते, खाइनि घरका खेत॥
मैं चितवत हौं तोहिकैा, तू चितवत है वोहि।
कहैं कबीर कैसे बनै, मोहिं तोहिं औ ओहि॥
ताकत तबलक तकि रहा, सको न बेभ्रामार।
सबै तीर खाली परै, चला कमानहिँ डार॥
जस कथनी तसकरनी, जस चुंबक तसज्ञान।
कहैं कबीर चुंबक बिना, को जीते संग्राम॥
अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिलि एकै होए।
हमरे देखत जग गया, ऐसा मिला न कोए।
देस विदेसै हौं फिरा, गाँव गाँव की खोर।
ऐसा जियरा ना मिला, लेवें फटकि पछोर।
मैं चितवतहौं तोहिको, तू चितवत कछु और॥
लानत ऐसे चित्तकी, एक चित्त दुइ ठौर।
चुंबक लोहे प्रीति है, लोहे लेत उठाए॥
ऐसा सब्द कबीर का, काल से लेहि छुड़ाए।

भूला तो भूला, बहुरि के चेतना॥
बिस्मय की छुरी, संसय को रेतना।

दोहरा कथिकहै कबीर, प्रतिदिन समय जो देखि।
मुये गये नहिं बाहुरे, बहुरि न आये फेरि॥
गुरू बिचारा क्या करै, सिख्यहि मा है चूक।
भावे त्यों पर मोधिये, बांस बजावे फूक॥
दादा माइ बापके लेखे, चरनन होइहो बंदा।

अबकी पुरिया जो निरुवारे, सो जन सदा अनंदा ॥
सबसे लघुताई भली, लघुता से सब होए ।
जस दुतिया को चन्द्रमा, सीस नावे सब कोए ॥
मरते मरते जग मुआ, मरन न जाना कोए ।
ऐसा होके ना मुआ, बहुरि न मरना होए ॥
मरते मरते जगमुआ, बहुरि न किया बिचार ।
एक सयानी आपनी, परबस मुआ संसार ॥
सब्द अहै गाहक नहीं, वस्तुहि महँगे मोल ।
बिना दाम सो काम न आवै, फिरै सो डामा डोल ॥
गृही तजिके भये जोगी, जोगी के गृह नाहिं ।
बिना बिबेक भटतकत फिरे, पकरि सब्द की छाहिं ॥
सिंह अकेला बनरमै, पलक पलक करे दौर ।
जैसा बन है आपना, वैसा बन है और ॥
पैठा है घट भीतरे, बठा है साचेत ।
जब जैसी गति चाहै, तब तैसी मति देत ॥
बोलसही पहचानिये, साहु चोरका घाट ।
अन्तर घटकी करनीं, निकरै मुखकी बाट ॥
दिलका महरमी कोइनमिला, जो मिला सो गरजी ।
कहै कबीरअसमानहिं फाटा, क्योंकर सोवै दरजी ॥
ई जग जरते देखिया, अपनी अपनी आगि ।
ऐसा कोई ना मिला, जासो रहिये लागि ॥
बना बनाया मानवा, बिना बुद्धि बेतूल ।
काहलाल ले कीजिये, बिना बासका फूल ॥
सांच बराबर तपनहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदया सांच है, ताके हृदया आप ॥
जारे बड़े कुल ऊपजे, जारे बड़ी बुद्धि नाहिं ।

जैसा फूल हजारका, मिथ्या लगि झरिजाहि ॥
करते किया न बिधिकिया, रबि ससि परी न दृष्टि ।
तीनलोक में है नहीं, जाने सकलो सृष्टि ॥
सुरपुर पेड़ अगाध फल, पंछी परिया झूर ।
बहुत जतन के खोजिया, फल मीठा पै दूर ॥
बैठा रहै सो बानियाँ, ठाढ़ रहै सो ग्वाल ।
जागत रहै सो पाहरू, तेहि धरिखायो काल ॥
आगे आगे धौं जरै, पाछे हरियर होए ।
बलिहारी तेहि वृक्षको, जर काटे फल होए ॥
जन्म मरन बालापना, चौथे बृद्धअवस्था आए ।
ज्यों मूसा कोतकैबिलाई, असजमजीवहि घातलगाए ॥
है बिगरायल अवरका, बिगरो नाहिं बिगारो ।
घाव काहेपर घालिये, जित तित प्रान हमारो ॥
पारस परसै कंचनभौ, पारस कधी न होए ।
पारसके अर्स पर्सते, सुबरन कहावे सोए ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त ढूँढ़िया, भयासो गूना गून ।
ढूँढ़त ढूँढ़त न मिला, तब हारि कहा बेचून ॥
बे चूने जग चूनिया, सोई नूर निनार ।
आखिर ताके बखत में, किसका करो दिदार ॥
सोई नूर दिल पाक है, सोई नूर पहिचान ।
जाको किया जग हुआ, सो बेचून क्योंजान ॥
ब्रह्मा पूछे जननि से, कर जोरे सीस नवाए ।
कौन बरन वह पुरुस है, माता कहु समुझाए ॥
रेख रूप वै है नहों, अधर धरो नहिं देह ।
गगन मंदिलके मध्यमें, निरखो पुरुस बिदेह ॥
धारेउ ध्यान गगन के माँहीं, लाये बज्र क्रिवार ।

देखि प्रतिमा आपनी, तीनिउ भये निहाल ॥
एमन तो सीतल भया, जब उपजा ब्रह्म ज्ञान ।
जेहि बसंदर जग जरै, सो पुनि उदक समान ॥
जासो नाता आदिका, बिसर गयो सो ठौर ।
चौरासी के बसिपरा, कहै औरकी और ॥
अलखलखौं अलखैलखौं, लखौं निरंजन तोहि ।
हौं कबीर सबको लखौं, मोको लखै न कोइ ॥
हमतो लखा तिहुलोकमें, तू क्यों कहा अलेख ।
सार सब्द जाना नहीं, धोखे पहिरा भेख ॥
साखी आँखी ज्ञानकी, समुझ देखि मन माहिँ ।
बिनुसाखी संसार का, झगरा छूटत नाहिँ ॥

साखी समाप्त । बीजक मूल समाप्त ।